प्रस्तावना

देश-काल, विषय और परिस्थिति के अनुसार हर प्रकार का ज्ञान अपने स्थान पर सत्य और यथार्थ है, इसलिए बाबा ने सन्यासियों के वैराग्य और पवित्रता की भी महिमा की है, वैज्ञानिकों के ज्ञान और अविष्कारों की भी महिमा की है, उसको भी सत्य बताया है परन्तु यथार्थ सत्य ज्ञान वह है, जिससे आत्माओं की और समग्र विश्व की चढ़ती कला होती है, जड़-जंगम-चेतन अपने सतोप्रधान स्वरूप को पाते हैं, वह ज्ञान परमात्मा ही देते हैं, जिसको आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है, जि ज्ञान को धारण करने वाली आत्मा नये कल्प में सतोप्रधान प्रकृति का सुख प्राप्त करते हैं, जिसे स्वर्ग कहा जाता है।

सत्य ज्ञान वह है, जो सत्य और कल्याणकारी हो अर्थात् जिससे आत्मा और विश्व का कल्याण हो। जो सहज बुद्धि-गम्य (Rational), विज्ञान-सम्मत (Scientific) और तर्कसंगत (Logical) हो अर्थात् जिसमें कोई विरोधाभास न हो। आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र, कर्म-सिद्धान्तों के विषय में दुनिया में जो ज्ञान दिया गया है, वह सब अनुमान पर आधारित या कल्पान्त में परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के संस्कार, जो आत्मा में सूक्ष्मरूप से नीहित रहते हैं, उनकी सूक्ष्म स्मृति के आधार पर दिया गया है, इसलिए वह पूर्ण सत्य नहीं है, इसलिए उससे दुनिया का कोई कल्याण नहीं हुआ है अर्थात् दुनिया की चढ़ती कला नहीं हुई अर्थात् दुनिया की स्थिति निरन्तर गिरती गई है और दुनिया में दुख-अशान्ति बढ़ती गई है। दुनिया में इस सम्बन्ध में जो भी ज्ञान दिया गया है, उसमें कहाँ कहाँ कोई न कोई विरोधाभास अवश्य है, इसलिए उससे आत्माओं को अल्पकाल के लिए सन्तुष्टि जरूर होती है परन्तु कल्प के आदि से ही आत्माओं और सृष्टि की अर्थात् जड़-जंगम-चेतन की उतरती कला ही होती आई। अभी कल्पान्त में परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उसमें कोई विरोधाभास नहीं है, वह सहज बुद्धि-गम्य, विज्ञान-सम्मत, और तर्कसंगत है, इसलिए उससे आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला हो रही है अर्थात् आत्मायें पावन बन रही हैं और आत्माओं को सुख-शान्ति की अनुभूति हो रही है।

"तुम जानते हो हमारा बाप नॉलेजफुल, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। उस बीज में सारे मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज समाई हुई है। फादर को ही सभी आत्माओं पर तरस पड़ता है।... ड्रामा प्लैन अनुसार अनेक प्रकार के हुनर मनुष्य निकालते रहते हैं। वे सब हैं मनुष्यों के हुनर। पारलौकिक बाप का हुनर क्या है? पतितों को पावन बनाना, इसलिए उनको पतित-पावन, दुखहर्ता-सुखकर्ता कहते हैं।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन

विषय सूची

विषय	पेज नं.
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और परमात्मा	 1
परिभाषा	
आध्यात्मिक ज्ञान	
विज्ञान	
मनोविज्ञान	
धार्मिक ज्ञान	
दर्शन	 1
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और परमात्मा	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और विश्व-कल्याण	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और विश्व का नव-निर्माण	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का महत्व	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और प्राप्ति	
आध्यात्मिक ज्ञान का महत्व	 1
विज्ञान का महत्व	
मनोविज्ञान का महत्व	
धार्मिक ज्ञान और भक्ति का महत्व	
दर्शन का महत्व	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान और दर्शन का उपयोग	 1
आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान एवं दर्शन में अन्तर	
आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Knowledge), धार्मिक ज्ञान और दोनों का अन्तर	
आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान में अन्तर	
आध्यात्मिक ज्ञान और मनोविज्ञान में अन्तर	 1
आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन में अन्तर	
आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति में अन्तर	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन के गुण-धर्म और विशेषतायें	
यथार्थ ज्ञान के गुण-धर्म-विशेषतायें	 1
आत्मा के गुण-धर्म और विशेषतायें	
परमात्मा के गुण-धर्म और विशेषतायें	
सृष्टि-चक्र अर्थात् विश्व-नाटक के गुण-धर्म और विशेषतायें	
यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान	 1
Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है और उसकी क्या परख है?	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन के गुण-धर्म-विशेषतायें और निश्चय	
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	 1

आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन 1
आध्यात्मिक ज्ञान और मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और सृष्टि-चक्र 1
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और गीता ज्ञान
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, एवं दर्शन और सत्यता
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और मुरली
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मूल्य अर्थात् आत्माओं के गुण-धर्म
आध्यात्मिक गुण-धर्म अर्थात् ईश्वरीय मूल्य 1
दैवी गुण-धर्म अर्थात दैवी मूल्य
मानवीय मूल्य और आसुरी गुण-धर्म
आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, धार्मिक ज्ञान, राजनैतिक ज्ञान, दर्शन और दृष्टि-परिवर्तन
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और ब्रह्मा 1
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और कल्प की आयु
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और मैसेन्जर-पैग़म्बर
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और कर्म का विधि-विधान
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और योग 1
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और पुरुषार्थ
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और भारत
आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और संगमयुग 1
आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, भक्ति की हिस्ट्री-जॉग्राफी
आध्यात्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
वैज्ञानिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
मनोवैज्ञानिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी 1
धार्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
दार्शनिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
भक्ति की हिस्ट्री-जॉग्राफी
स्वर्ग-नर्क की हिस्ट्री-जॉग्राफी 1
प्रश्न और सम्भावित उत्तर
विविध ईश्वरीय महावाक्य 1

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन

यथार्थ सत्य ज्ञान क्या है, जिससे आत्माओं और विश्व का कल्याण हो, उसके लिए सभी क्षेत्रों के लोगों ने अर्थात् आध्यात्मिक गुरुओं, वैज्ञानिकों, मनोविज्ञानिकों, धार्मिक नेताओं, दार्शिनिकों आदि ने पुरुषार्थ किया है और अपने-अपने अनुभव के आधार पर अपनी बात कही है। परन्तु यथार्थ सत्य क्या है, वह विचारणीय विषय है। यथार्थ सत्य ज्ञान वह है, जिससे आत्माओं का और समग्र विश्व का कल्याण हो अर्थात् चढ़ती कला हो। यह सृष्टि आत्माओं, परमात्मा और प्रकृति का एक अनादि-अविनाशी खेल है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता रहता है अर्थात् यह खेल अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। इस खेल में कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है। जो आत्मायें इसकी सत्यता को जान लेते हैं और उस अनुसार कर्म करते हैं, वे इसके श्रेष्ठ फल को प्राप्त करते हैं, जिसको विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं में स्वर्ग, जन्नत, हेविन आदि-आदि नामों से जाना जाता है। इस सत्य को जानने के लिए विश्व के सभी समुदायों की आत्मायें अपनी-अपनी सामर्थ्य अनुसार पुरुषार्थ करते रहे हैं और उसके विषय में अपने मत देते रहे हैं, परन्तु वह सत्य ज्ञान क्या है, जिससे आत्माओं और विश्व का कल्याण हो, वह स्पष्ट नहीं हुआ है, यही कारण है कि विश्व की सतत उतरती कला रही है अर्थात् विश्व में तमोप्रधानता बढ़ती गई है, जिससे विश्व में अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़ता गया, आत्माओं के कर्म-संस्कार गिरते गये और फलस्वरूप आत्माओं की दुख-अशान्ति बढ़ती ही गई है और बढ़ती ही जा रही है। आत्मायें यह समझने में असमर्थ सी हो गई हैं कि सत्य ज्ञान क्या है, जिससे उनका कल्याण हो। अभी परमात्मा ने जो सत्य आध्यात्मिक ज्ञान दिया है अर्थात् आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का राज़ बताया है, इससे आत्मायें अपना कल्याण कर रही हैं और विश्व के कल्याणार्थ पुरुषार्थ कर रही हैं। सत्य ज्ञान की क्या-क्या विशेषतायें होतीं हैं, वह भी परमात्मा ने बताया है।

सत्य ज्ञान को पाते ही आत्मा को अपने मूल स्वरूप का आभास होता है, जो परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न परमानन्दमय है।

आत्मा को ज्ञान सागर परमात्मा के स्वरूप का भी ज्ञान होता है, जिससे आत्मा को उनके द्वारा विश्व-कल्याणार्थ दिये गये आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है और उस ज्ञान पर निश्चय होता है, जिससे आत्मायें अपने जीवन में राहत अनुभव करती हैं अर्थात् आत्माओं का भटकना बन्द हो जाता है।

सत्य ज्ञान में विरोधाभास नहीं होता है और वह विवेकयुक्त, तर्क-संगत होता है।

उसमें किसी धर्म-विशेष के हित-अनहित की बात नहीं होती है अर्थात् वह सर्व धर्मों

की आत्माओं के लिए समान रूप से कल्याणकारी होता है।

इसलिए परमात्मा ने कहा है - मैं आकर सर्व वेदों, शास्त्रों का सार समझाता हूँ और सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार देता हूँ।

"शास्त्रों की कहानियों और नॉवेल्स में कोई सार नहीं है, उनसे किसका कल्याण नहीं होता है, सिर्फ बेचने वाले लखपति बन जाते हैं।... अभी बाप तुमसे बात कर रहे हैं, तुमको समझा रहे हैं। तुम समझते हो कल्प-कल्प हू-ब-हू हम ऐसे ही बाप से मिलते हैं। जो कुछ बीता, वह कल्प-कल्प रिपीट होगा।''

सा.बाबा 19.08.11 रिवा.

"यह कोई सिर्फ प्यार का सागर नहीं है, पहले ज्ञान का सागर है। ज्ञान और अज्ञान दो बातें हैं। ज्ञान को दिन, अज्ञान को रात कहा जाता है। ... यह किसको पता नहीं है कि ज्ञान किसको कहा जाता है और अज्ञान किसको कहा जाता है। ये सब बेहद की बातें हैं, जो बाप आकर तुम सबको समझाते हैं। ज्ञान से तुम पूज्य बनते हो।''

सा.बाबा 20.08.11 रिवा.

"आगे चलकर मनुष्य जानेंगे कि अभी कलियुग का अन्त है, बाकी सारी नॉलेज को नहीं जानेंगे, उसको तो पढ़ने वाले स्टूडेण्ट्स ही जान सकते हैं। यह है मनुष्य से राजाओं का राजा बनने की पढ़ाई।... भगवान भी कोई समय इस दुनिया की महफिल में आया था, यह जानते हैं परन्तु कब आया था, कैसे आया था, वह कोई नहीं जानते हैं।''

सा.बाबा 24.09.11 रिवा.

"इसको गॉड फादरली युनिवर्सिटी कहा जाता है क्योंकि इससे सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की सद्गति होती है। रियल वर्ल्ड युनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है।... स्प्रीचुअल फादर बैठा हुआ है, जिस बाप द्वारा यह रुहानी नॉलेज मिलती है। स्प्रीचुअल नॉलेज सिवाए स्प्रीचुअल फादर के कोई दे नहीं सकते। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है और ज्ञान से ही सद्गति होती है।''

सा.बाबा 21.09.11 रिवा.

"मनुष्य कुछ भी समझते नहीं हैं कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, आत्मा कितने जन्म लेती है, कैसे पार्ट बजाती है। किसको भी पता नहीं है कि यह सृष्टि एक ड्रामा है, हम सभी आत्मायें उसमें एक्टर्स हैं। ... आत्मा अविनाशी है, उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, वह ज्योति में लीन कैसे हो सकती है। आत्मा सो परमात्मा भी नहीं कह सकते हैं। ... परमात्मा भी एक बिन्दी है, उसमें भी अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, सिर्फ वह पुनर्जन्म रहित है, आत्मायें पुनर्जन्म में आती हैं।"

सा.बाबा 7.05.11 रिवा.

"परमपिता परमात्मा भी अति सूक्ष्म बिन्दी है, उनको पतित-पावन, ज्ञान का सागर कहा जाता

है। परमपिता परमात्मा में सृष्टि का बीजरूप होने के कारण, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। उनको सत्, चित्, आनन्द स्वरूप कहा जाता है। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो बाप ही आकर रूहों को पढ़ाते हैं। अभी तुम जानते हो शिवबाबा वह नॉलेज हमको पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

परिभाषा

आध्यात्मिक ज्ञान

आध्यात्मिक ज्ञान का मूल स्त्रोत आत्माओं का परमपिता ज्ञान-सागर निराकार परमात्मा शिव है, वह कल्पान्त में ही आकर यह अध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है अर्थात् सर्व आत्मायें और जड़-जंगम प्रकृति पतित से पावन बनती है। आध्यात्मिक ज्ञान में विज्ञान, मनोविज्ञान, सर्व धर्मों का ज्ञान और सब दर्शनों का सार सब समाया हुआ होता है। अभी कल्प का संगमयुग है, परमपिता परमात्मा ने अभी आकर यह आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, जिससे आत्मायें और जड़-जंगम प्रकृति पावन बन रही है।

यह सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी खेल है, जो चक्रवत् चलता है। इन तीनों के समग्र ज्ञान को आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है, जिसके आधार पर इस सृष्टि-चक्र का नव-निर्माण होता है। आध्यात्मिक ज्ञान का दाता ज्ञान सागर परमात्मा है। यह आध्यात्मिक ज्ञान ही विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी है और विश्व की उत्थान-पतन की कहानी भी है।

आध्यात्मिक ज्ञान में विज्ञान समाया हुआ है, परन्तु विज्ञान में आध्यात्मिक ज्ञान समाया हुआ हो, यह निश्चित नहीं है। ऐसे ही आध्यात्मिक ज्ञान में मनोविज्ञान समाया हुआ है, परन्तु मनोविज्ञान में आध्यात्मिक ज्ञान नहीं समाया हुआ है। परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उस सारे विश्व के समस्त दर्शनों का सार समाया हुआ है, परन्तु किसी भी दर्शन में यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान समाया हुआ नहीं है। परमात्मा ने सर्व धर्मों का ज्ञान दिया है परन्तु किसी भी धर्म-पिता ने आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान नहीं दिया है। विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन में आध्यात्मिक ज्ञान थोड़ा अंश जरूर समाहित रहता है क्योंकि आत्मा के बिना तो कोई विज्ञान, मनोविज्ञान, धर्म और दर्शन का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है।

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है, वह भी परमात्मा ही आकर बताते हैं। आत्मा,

परमात्मा, और सृष्टि-चक्र के तीनों कालों और तीनों लोकों को जानना, कर्मों की गहन गति को जानना ही यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान है, जो ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर देते हैं, इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है।

विज्ञान

विज्ञान में वैज्ञानिक भौतिक पदार्थों के विषय में ही अध्ययन करते हैं, विशलेषण करते हैं और उसके विषय में अविष्कार करते हैं, सिद्धान्त निश्चित करते हैं। परन्तु विज्ञान का आधार भी आध्यात्म है अर्थात् आत्मा है। जब आत्मा निकल जाती है तो उस वैज्ञानिक का अस्तित्व ही खत्म हो जाता है, जिसने बड़े-बड़े अविष्कार किये, बड़ी-बड़ी डिग्री लीं भले ही उसके द्वारा अविष्कारित सिद्धान्त और साधन दुनिया में काम आते रहते हैं और उन साधनों का उपभोग करने वाली भी आत्मा ही है। विज्ञान ने मानव समाज को अनेक प्रकार के साधन-सुविधायें प्रदान की हैं, जिससे मानव जीवन अपेक्षाकृत सुगम हो गया है, अनेक मनोरंजन के साधन मिले हैं परन्तु सारी दुनिया अर्थात् जड़-जंगम-चेतन की कलायें उतरती ही गई हैं अर्थात् दुनिया में दुख-अशान्ति की वृद्धि ही हुई है।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान वह ज्ञान है, जो मन की गति-विधियों का अध्ययन करता है अर्थात् संकल्प क्या हैं, उनका शरीर पर क्या प्रभाव होता है, शरीर कैसे स्वस्थ रहे, उसके विधि-विधान का निर्माण करता है। मन की शक्ति का कैसे विकास हो, उसका उचित उपयोग कैसे हो, उसके लिए विधि-विधान निश्चित करता है। मनोविज्ञान से अनेक प्रकार के मानसिक रोगों का निदान भी होता है परन्तु जीवन रोगमुक्त नहीं बनता है।

वास्तविकता को विचार करें तो दुनिया में जो मनोविज्ञान का ज्ञान है, मन के क्रिया-कलापों के अध्ययन पर आधारित है परन्तु मन है क्या, उसके विषय में मनोविज्ञान में स्पष्ट नहीं है, जो आध्यात्मिक ज्ञान के दाता परमात्मा ने ही अभी बताया है कि मन तो आत्मा की एक शक्ति मात्र है।

धार्मिक ज्ञान

यह कल्प-वृक्ष विभिन्न धर्मों का अनादि-अविनाशी वृक्ष है, जिसका तना आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, शाखायें-प्रशाखायें विभिन्न धर्म, मठ-पंथ हैं और पत्ते आत्मायें हैं। सभी धर्म, मठ-पंथ के स्थापक अपने निश्चित समय पर आकर अपने धर्म, मठ-पंथ की स्थापना

के लिए ज्ञान देते हैं, जिसके आधार पर कल्प-वृक्ष से उनकी शाखा-प्रशाखा निकलती है अर्थात् उसकी स्थापना होती है और उसके आधार पर वह विस्तार और विकास को पाता है। इस कल्प-वृक्ष की जड़ ब्राह्मण कुल है और बीजरूप परमात्मा है। कल्पान्त में परमात्मा आकर जब इस कल्प-वृक्ष का यथार्थ ज्ञान देते हैं, तब इसकी नई कलम लगती है, इसका नव-निर्माण होता है और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है।

दर्शन

किसी व्यक्ति या समाज की आत्मा, परमात्मा, सृष्टि, कर्म और फल आदि-आदि के सम्बन्ध में जो मान्यतायें होती हैं, उनको उसका दर्शन कहा जाता है, परन्तु वह कहाँ तक सत्य है, उसके लिए कोई निश्चित नहीं होता है। वे उस व्यक्ति और समाज की अपनी मान्यतायें होती हैं।

यह सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी खेल है, जो आत्माओं के कर्म-फल पर आधारित है। इसलिए आध्यात्मिक ज्ञान में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान, कल्प-वृक्ष के विस्तार और नव-निर्माण का ज्ञान, कर्म और फल का ज्ञान परमात्मा के द्वारा मिलता है, जिसके आधार पर इस विश्व का नव-निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त विश्व में इस सृष्टि-चक्र के आदि से अन्त तक का जो भी ज्ञान है, वह यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, इसलिए सृष्टि की सतत उतरती कला होती है। यह सारा खेल आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का है, इसलिए हर क्षेत्र के ज्ञान में कहाँ न कहाँ आत्माओं का सम्बन्ध होता ही है लेकिन उसको आध्यात्मिक ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

विज्ञान से समयानुसार नये-नये भौतक साधनों का निर्माण होता है, जिससे मानव जीवन सरल होता है और अन्त में विश्व-परिवर्तन के समय विनाश और नये विश्व की स्थापना में सहयोगी होते हैं, धार्मिक ज्ञान अर्थात् धारणाओं के ज्ञान से विभिन्न धर्मों की स्थापना होती है, राजनीति के ज्ञान से राजाई की स्थापना होती है, दर्शन के ज्ञान से समाज सुधार के विभिन्न कार्य सम्पन्न होते हैं परन्तु यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान में सर्व प्रकार के ज्ञान का सार समाया हुआ होता है, जिससे विश्व का नव-निर्माण होता है, विज्ञान, धर्म, राज्य अपने सतोप्रधान स्वरूप में होता है और समाज सर्व प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होता है अर्थात् तन-मन सब स्वस्थ होता है, जिसको स्वर्ग कहा जाता है।

"अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। तुम जानते हो - अभी हम सीढ़ी चढ़ते हैं, पहले सुखधाम में जायेंगे, फिर हम कैसे नीचे उतरते हैं, कैसे 84 जन्म लेते हैं। यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। यह ज्ञान कब भूलना नहीं चाहिए। बाप हमारे सब दुख मिटाये, सुख का वर्सा देने आये हैं। बाप को और वर्से को याद करना है।''

सा.बाबा 18.06.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और परमात्मा

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह जो ज्ञान देता है, उसमें आध्यात्मिक ज्ञान के साथ विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि सबका सार समाया हुआ होता है। परमात्मा जो ज्ञान देता है, उससे ही विश्व की जड़-जंगम-चेतन प्रकृति की चढ़ती कला होती है, वे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। मनुष्यात्मायें जो विज्ञान का अविष्कार करती हैं, मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक जो ज्ञान देते हैं, धर्म-पितायें अपने धर्म की स्थापना के लिए जो ज्ञान देते हैं, उस सबसे विश्व की कब कोई चढ़ती कला नहीं होती है, बल्कि उतरती कला ही होती है और जड़-जंगम-चेतन सबकी कलायें उतरते-उतरते तमोप्रधान बन जाते हैं। भले उन सबकी भावना विश्व-कल्याण की ही होती है, परन्तु यथार्थ सत्य न होने के कारण विश्व और आत्माओं की कलायें उतरती जाती है अर्थात् तमोप्रधान की ओर ही बढ़ते जाते हैं।

परमात्मा आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान और मनोविज्ञान के ज्ञान का दाता है परन्तु उनका निर्माता नहीं है अर्थात् परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उसमें आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान है, उसमें विज्ञान का भी ज्ञान है तो मनोविज्ञान का भी ज्ञान है परन्तु परमात्मा ने इन सबको बनाया नहीं है क्योंकि आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, जड़-जंगम-चेतन प्रकृतियाँ, तीनों लोक सब अनादि-अविनाशी है। ये सृष्टि-चक्र भी अनादि-अविनाशी है, जिसमें आत्मा-परमात्मा, जड़-जंगम-चेतन का खेल अनादि काल से चल रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। इसलिए परमात्मा इन सबके ज्ञान का दाता है, निर्माता नहीं है। वह जब आकर आध्यात्मिक ज्ञान देता है, तो ये सृष्टि-चक्र की पुनरावृत्ति होती है अर्थात् इसकी कलम लगती है अर्थात् नये चक्र का आरम्भ होता है। आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है।

"परमात्मा है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीजरूप। तुम भी चैतन्य आत्मायें हो। अभी तुम सभी झाड़ों के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो।... वे हैं जड़ झाड़, यह है चैतन्य।

बाप चैतन्य मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।... जड़ बीज में कोई ज्ञान नहीं है, यह है चैतन्य बीज, उनमें सारे सृष्टि रूपी झाड़ का ज्ञान है कि इसकी उत्पत्ति, पालना, फिर विनाश कैसे होता है, वह आकर बताते हैं।''

सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

"तुम्हारी आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट है। यह है बड़ी कुदरत। बाप का भी ड्रामा में पार्ट है।... इतनी छोटी सी आत्मा में सारे ड्रामा का पार्ट है, जो रिपीट होता रहता है। मनुष्य ये बातें सुनकर वण्डर खाते हैं। ... बाप भी आत्मा है, परन्तु वह परम आत्मा है। उनकी आत्मा में सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है, जो आकर बच्चों को समझाते हैं। यह ज्ञान कोई शास्त्र आदि में नहीं है। जिन्होंने कल्प पहले सुना है, बाप से वर्सा लिया है, उनको ही बाप आकर सुनाते हैं, वे ही वृद्धि को पाते रहते हैं। राजाई स्थापन होने में टाइम लगता है। प्रजा तो ढेर बनती रहती है, राजा बनने में मेहनत लगती है।''

सा.बाबा 7.03.11 रिवा.

"भारत पारसपुरी था, जहाँ पवित्रता-सुख-शान्ति सब था। यह 5 हजार वर्ष की बात है। बाप तिथि-तारीख सहित सारा हिसाब-किताब समझाते हैं। उनसे ऊंच तो कोई है नहीं। वह बाप ही आकर कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।... सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाला एक निराकार बाप ही है।

सा.बाबा 3.09.11 रिवा.

"अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, तुमको कितनी जागृति आई है। अभी तुम सारी दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो। बाप जानी-जाननहार है, इसका मतलब यह नहीं कि वह सबके दिलों को जानता है। ... मैं यह ख्याल क्यों करूँ ? मैं तो तुम आत्माओं को पावन बनने का रास्ता बताता हूँ कि तुम आत्माओं को अपने परमपिता परमात्मा को याद करना है।''

सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

"यह स्प्रीचुअल नॉलेज सिर्फ तुम ब्राह्मणों को ही है, देवताओं में भी यह नॉलेज नहीं है। फिर यह परम्परा कैसे चल सकती है। ... मनुष्य कहते हैं मन की शान्ति कैसे मिले, परन्तु यह कहना भूल है। मन-बुद्धि तो आत्मा के आरगन्स हैं। ... अभी बाप कहते हैं - हे आत्मा तुम मुझे याद करो। इस याद की यात्रा से तुम पवित्र बनेंगे और मेरे पास शान्तिधाम में आ जायेंगे।''

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"आत्मा को एक दिव्य सितारा कहा जाता है। वास्तव में स्टार भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्टार तो बड़े-बड़े होते हैं, देखने में आते हैं। ... यह एक मिसाल दिया जाता है, समझाने के लिए। बाप की आत्मा भी बिन्दी मिसल है, उनको सुप्रीम कहा जाता है। उनकी महिमा अलग

है। वह मनुष्य सृष्टि का चेतन्य बीजरूप है, उसमें सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान है।''

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"सतयुग के दैवी सम्प्रदाय वाले ही 84 जन्म भोग अभी आसुरी सम्प्रदाय के बने हैं, फिर वे ही दैवी सम्प्रदाय के बनते हैं। ... परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है, वही तुमको यह रुहानी ज्ञान देते हैं। कोई भी मनुष्य स्प्रीचुअल नॉलेज दे नहीं सकता। अभी बाप कहते हैं - आत्माभिमानी बनो और मुझ अपने परमपिता परमात्मा शिव को याद करो।''

सा.बाबा 3.02.11 रिवा.

"राधे-कृष्ण दो अलग-अलग राजधानी के थे, फिर स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनें। यह ज्ञान किसी मनुष्य मात्र में नहीं है। स्प्रीचुअल नॉलेज सिर्फ एक स्प्रीचुअल फादर ही देते हैं। बाप कहते हैं - अब आत्माभिमानी बनो और मुझ अपने परमपिता को याद करो। इस याद से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे।''

सा.बाबा 8.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और विश्व-कल्याण /

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और विश्व का नव-निर्माण

विश्व-कल्याण अर्थात् विश्व का नव-निर्माण अर्थात् विश्व का परिवर्तन। विश्व-कल्याण का आधार आध्यात्मिक ज्ञान है, जो परमात्मा आकर देते हैं। विज्ञान जो अविष्कार करता है, उससे अनेक प्रकार के सुख-साधनों का निर्माण तो होता है और मनुष्य उनका सुख भी पाते हैं परन्तु उससे विश्व का नव-निर्माण नहीं होता है और न ही हो सकता है। सतयुग से लेकर विश्व सतत उतरती कला में ही जाता है। साइन्स जो अविष्कार करती है, जिस साधन-सामग्री का निर्माण करती है, उससे कुछ साधन-सामग्री नये विश्व के नव-निर्माण में काम में आते हैं, उसमें सौर-ऊर्जा (Solar Energee) विशेष महत्वपूर्ण है। वर्तमान विश्व में जो मनोविज्ञान और दर्शन का ज्ञान है, उससे भी विश्व का कोई विशेष कल्याण नहीं होता है। आत्माओं को अल्प-काल के लिए कुछ राहत महसूस होती है। वह भी उनका पार्ट है। धर्म-पिताओं का भी अपने धर्म की स्थापनार्थ धर्म का ज्ञान देकर धर्म की स्थापना करने का पार्ट है, परन्तु उससे विश्व का कोई कल्याण नहीं होता है।

परमात्मा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उससे चेतन आत्मायें और जड़-जंगम तीनों प्रकृतियाँ पावन बनती हैं और विश्व का नव-निर्माण होता है अर्थात् कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है और पुरानी तमोप्रधान दुनिया का विनाश होता है, आत्मायें सब परमधाम जाती हैं। विनाश के समय थोड़ीसी आत्मायें यहाँ रहती हैं, जिनके द्वारा नये कल्प-वृक्ष की कलम लगती है अर्थात् उनके पास नयी दुनिया के आदि में आने वाली सतोप्रधान आत्मायें जन्म लेती हैं।

"जितना ज्ञान रत्नों की धारणा करेंगे-करायेंगे, वे उतना ऊंच पद पायेंगे। बहुतों का कल्याण-कारी बनेंगे तो बहुतों की आशीर्वाद मिलेगी।... जो समझती है मैं बहुतों का कल्याण कर सकती हूँ, उसको सेन्टरों पर जाकर सेवा करनी चाहिए। एक को देखकर फिर और भी सीखेंगे। जो करेगा, सो पायेगा। यह ज्ञान रत्नों को दान करने की ईश्वरीय सर्विस बहुत कल्याणकारी है।''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

"यह ज्ञान रतनों को दान करने की ईश्वरीय सर्विस बहुत कल्याणकारी है। इससे तुम मनुष्यों को जीयदान देते हो। ... किसको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान करना, इन जैसा सर्वोत्तम दान और कोई होता नहीं है। बहुत रहमदिल बनना है। ... बच्चों को ख्याल चलाना चाहिए कि हम सर्विस को कैसे बढ़ायें। बाप भी सबका जीवन हीरे जैसा बनाते हैं, तुम बच्चों को भी यह सर्विस करनी है।''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

"अभी तुम हो बाबा के मददगार। मदद तो सबको चाहिए ना। अकेला बाप भी क्या करेगा। हम तुमको मन्त्र देते हैं, तुमको फिर और सबको देना है। कलम लगाना है। इसलिए बाप बच्चों को कहते हैं - जितना हो सके, बाप के मददगार बनों, सबको मन्मनाभव का मन्त्र देते जाओ। ... सबको बाप का पैग़ाम देना है। शास्त्रों में भी इसका वर्णन है।''

सा.बाबा 8.08.11 रिवा.

"ड्रामा प्लैन अनुसार रावण राज्य आने से देवताओं को भी पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनना है। ड्रामा अनुसार सबको सीढ़ी उतरनी ही होती है। ... परमात्मा है बुद्धिवानों की बुद्धि। बाप जो ज्ञान देते हैं, यह है तुम बच्चों की बुद्धि के लिए खुराक। ... अभी तुम बच्चों की बुद्धि को बेहद के बाप द्वारा खुराक मिल रही है। इसको अमृत भी कहा जाता है।''

सा.बाबा 6.08.11 रिवा.

"तुम सब गॉडली स्टूडेण्ट्स हो। यह है प्रजापिता ब्रह्मा कुमारीज गॉडली युनिवर्सिटी। तुम सारे युनिवर्स को यह सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दे रहे हो। ... किसको बड़ी युक्ति से समझाना चाहिए। हम गॉड फादरली युनिवर्सिटी लिखते हैं क्योंकि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, वह सबको समझाते हैं।''

सा.बाबा 3.08.11 रिवा.

"बाबा बीजरूप, नॉलेजफुल है, तो हम भी अभी इस झाड़ को पूरा समझ गये हैं। आदि में इस झाड़ का कैसे सेपलिंग लगता है और फिर कैसे यह झाड़ वृद्धि को पाता है। फिर कैसे इसकी आयु पूरी होती है, यह सब ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। और झाड़ तो तूफान लगने से गिर जाते हैं, परन्तु इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का पहला फाउण्डेशन जल जाता है अर्थात् वह देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है, बाकी झाड़ रहता है।''

सा.बाबा 23.09.11 रिवा.

"ये त्रिमूर्ति, गोला, झाड़, सीढ़ी, लक्ष्मी-नारायण और कृष्ण के 6 चित्र हैं मुख्य। यह जैसे पूरी प्रदर्शनी है। इनमें ज्ञान का सब सार आ जाता है। ... बच्चों को श्रीमत मिलती है, रुहानी सर्विस बढ़ाने के लिए, भारतवासी मनुष्यों का कल्याण करने के लिए। बेहद बाप कल्याणकारी गाया जाता है, तो जरूर कोई अकल्याणकारी भी होगा।''

सा.बाबा 25.03.11 रिवा.

"तुमको यह नॉलेज मिल रही है, तो तुम बहुत खुशी में रहते हो। नॉलेज आत्मा को खुशी देती है। अभी तुम्हारी बुद्धि में यह बेहद की नॉलेज है। बाप तुम्हारी ज्ञान रत्नों से झोली भर रहे हैं। ... अभी तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं रहना चाहिए, तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। ... अभी तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है, तो अपना और दूसरों का कल्याण करना है।''

सा.बा।बा 11.03.11 रिवा.

"उस जिस्मानी नॉलेज और इस रुहानी नॉलेज में रात-दिन का फर्क है। अभी तुम जानते हो यह सारी दुनिया खत्म होने वाली है। शिवबाबा हमको लक्ष्मी-नारायण जैसा बनने के लिए पढ़ा रहे हैं। बच्चों को यह नशा सदा नहीं रहता है। बाबा को तो बहुत रहता है। ... तुमको यह नशा क्यों नहीं रहता है, क्योंकि तुम याद में नहीं रहते हो और पूरा ईश्वरीय सर्विस में तत्पर नहीं रहते हो।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

"बेहद का बाप ज्ञान का सागर है। वह जो ज्ञान देते हैं, उससे सर्वात्माओं की सद्गति होती है। ज्ञान का एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। ... स्प्रीचुअल नॉलेज स्प्रीचुअल फादर ही देते हैं। बाप समझाते हैं - तुम अविनाशी आत्मा हो, परमधाम में रहने वाले हो, जहाँ से यहाँ पार्ट बजाने आते हो। यह ड्रामा है, जिसको हार-जीत का खेल कहते हैं, सुख-दुख का खेल कहते हैं।''

सा.बाबा 4.10.11 रिवा.

"कहते भी हैं कि यह ज्ञान राजाओं का राजा बनाने वाला है। कल्प पहले भी बेहद के बाप ने कहा था कि मैं तुमको इस राजयोग से राजाओं का राजा बनाता हूँ। कृष्ण तो स्थापना नहीं

कराते हैं, क्रियेटर निराकार बाप है। ... ऐसे नहीं कि प्रलय होती है और मैं नई सृष्टि रचता हूँ। यह सब राँग है। मनुष्य बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ, तो जरूर पतित दुनिया में आकर पतित से पावन बनायेंगे।'' सा.बाबा 30.08.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का महत्व / आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और प्राप्ति

जब हम आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान और दर्शन का महत्व समझेंगे, तब ही हम उसका लाभ उठा सकेंगे। ज्ञान सागर परमात्मा आकर इन सबका महत्व बताते हैं और आत्मा और विश्व की चढ़ती कला में आध्यात्मिक ज्ञान का क्या महत्व है, वह बताते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान का महत्व

आध्यात्मिक ज्ञान क्या है और उसका मनुष्य के जीवन में क्या महत्व है, वह आत्माओं के सुख में कैसे सहयोगी बनता है, ये सब ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। बाप ने आत्मा, परमात्मा, तीनों लोकों, सृष्टि-चक्र के तीनों कालों, कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त, कर्म की गहन गति आदि का जो ज्ञान दिया है, वही यथार्थ में आध्यात्मिक ज्ञान है, जिससे आत्माओं का और जड़-जंगम प्रकृति का कल्याण निश्चित है। परमात्मा जब आकर सत्य ज्ञान देते हैं, तो आत्माओं को अपने सत्य स्वरूप, सत्य घर, सत्य कर्म का अनुभव होता है और आत्मायें सत्य कर्म करके अपना और विश्व का कल्याण करने में समर्थ होती है। आध्यात्मिक ज्ञान के नाम पर दुनिया में जो भी ज्ञान है, वह भक्ति का ज्ञान और कर्म-काण्ड हैं, उससे विश्व की और आत्माओं की उतरती कला ही होती है। वास्तविकता को देखें तो वह सब अज्ञान ही है क्योंकि उसमें आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ नहीं है, इसलिए उससे आत्माओं और समग्र विश्व की उतरती कला ही होती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से तो आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला होती है, जो परमात्मा आकर कल्पान्त में पुरुषोत्तम संगमयुग पर देते हैं। ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिये गये आध्यात्मिक से ही नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना होती है अर्थात् विश्व का नव-निर्माण होता है, आत्मायें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं।

संगमयुग पर परमात्मा से यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान मिलने पर जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करती है। परमात्मा के साथ

विश्व-कल्याण के कार्य में सहयोगी बन परमानन्द का अनुभव करती है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसको देखते हुए परम-सुख को अनुभव करती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से ही आत्मा को अतीन्दिय सुख की अनुभूति होती है।

"तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो, तो तुम्हारी चलन बहुत मीठी रॉयल होनी चाहिए। तुमको कोई से डिबेट या शास्त्रवाद नहीं करना है। वे लोग शास्त्रवाद करने बैठते हैं तो एक-दो को लाठी भी मार देते हैं। उन बेचारों का कोई भी दोष नहीं है। वे तो इस नॉलेज को जानते ही नहीं है। यह है रुहानी नॉलेज, जो मिलती है रुहानी बाप से।''

सा.बाबा 5.11.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी आत्मा शरीर छोड़ेगी तो जरूर ऊंच घर में जन्म लेगी नम्बरवार। थोड़े ज्ञान वाला साधारण कुल में जन्म लेगा, ऊंच ज्ञान वाला ऊंच कुल में जन्म लेगा।''

सा.बाबा 28.10.04 रिवा.

"अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं है तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं। ... भोजन खाना और चीज है, हजम करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आती है, हज़म करने से शक्ति आती है।''

अ.बापदादा 24.1.70

"यह नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है। यह ज्ञान बुद्धि में रहने से बहुत खुशी होती है। ... पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व निकलता जायेगा तो खुशी भी होगी।... कल्प-कल्प जो बने हैं वे ही अभी भी बनेंगे और उनको ही खुशी होगी।''

सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

"परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं। ... ज्ञान सागर बाप के पास ही ज्ञान रत्न हैं। ये एक-एक रत्न लाखों रुपयों का है। रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर औरों को भी दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, उतना ऊंच पद पाये। ... सबको यह रास्ता बताना है।''

सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

"आध्यात्मिक विद्या और कोई सिखा न सके। तुम्हारी यह है आध्यात्मिक विद्या, जो तुमको रुहानी बाप ही आकर पढ़ाते हैं।... इसको रुहानी नॉलेज कहा जाता है।... एक है जिस्मानी नॉलेज, दूसरी है आध्यात्मिक शास्त्रों की विद्या और तीसरी है यह रुहानी नॉलेज।... यह है नई दुनिया, नये धर्म के लिए नई नॉलेज।''

सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - यह एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। बाप से तुमको कितने ज्ञान रतन मिलते हैं। ... लौकिक बाप वर्सा देते हैं पतित बनने का, पारलौकिक बाप वर्सा देते हैं पावन बनने का। ... विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है। तुम्हारी मिशन है पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताने वाली। पारलौकिक बाप कहते हैं - बच्चे पावन बनो, विनाश सामने खड़ा है।''

सा.बाबा 26.09.11 रिवा.

"सतयुग से लेकर ही यह रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है, परन्तु यह किसको भी पता नहीं है। शास्त्रों में यह ज्ञान नहीं है। शास्त्रों के ज्ञान से किसकी सद्गति हो नहीं सकती। भक्ति मार्ग में भी गीता का कितना मान है। परन्तु यथार्थ गीता ज्ञान तो पतित-पावन बाप ही आकर संगमयुग पर देते हैं, वे ही राजयोग सिखाते हैं।''

सा.बाबा 4.08.11 रिवा.

"बोलो - हम मानते हैं कि ये सब शास्त्र भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान और भक्ति दो चीज़ें हैं। जब ज्ञान मिलता है तो भक्ति की क्या दरकार है। भक्ति माना उतरती कला, ज्ञान माना चढ़ती कला। ज्ञान सागर एक बाप ही है, उनसे हमको अभी ज्ञान मिला, जिससे सद्गति होती है। भक्तों की रक्षा करने वाला, भक्ति का फल देने वाला एक ही भगवान है।''

सा.बाबा 5.08.11 रिवा.

"तुम जानते हो - छोटे-बड़े सबकी, सारी दुनिया की अभी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि सब वाणी से परे जाने वाले हैं। ... यह सारी पतित दुनिया खत्म हो जानी है, तुम जानते हो हमको फिर नई दुनिया में जाना है। कैसे जायेंगे, वह सारी नॉलेज बाप ने तुमको दी है। यह है नई नॉलेज, नई दुनिया अमरलोक पावन दुनिया के लिए। अभी हम सब हैं संगम पर।''

सा.बाबा 16.07.11 रिवा.

"अभी इस महफिल में तुमको बाप से अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना मिल रहा है अथवा ऐसे कहें कि बैकुण्ठ की बादशाही बाप से मिल रही है।... अभी तुम जानते हो शिवबाबा इस महफिल में आया है और वह हमको स्वर्ग की राजाई का वरदान दे रहे हैं। इसलिए उनकी शिव जयन्ति भी मनाते हैं।''

सा.बाबा 24.09.11 रिवा.

"यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, कैसे हम आत्मायें पतित से पावन बनती हैं। यह नॉलेज बुद्धि में रखनी है। याद है संजीवनी बूटी। ... जब तक कर्मातीत अवस्था हो, तब तक माया की युद्ध चलती रहेगी, माया रुस्तम हो लड़ती रहेगी। ... बाप कहते हैं - मुझे याद करने से तुम पावन बन जायेंगे। बाप यह कोई नई बात नहीं सुनाते हैं। तुमने अनगिनत बार यह ज्ञान सुना है और आगे भी सुनते रहेंगे।''

सा.बाबा 14.09.11 रिवा.

"कुछ भी होता है तो कहेंगे - आज से 5000 वर्ष पहले भी ऐसे हुआ था। समझानी बिल्कुल क्लियर है, परन्तु जब किसकी बुद्धि में बैठे।... ज्ञान मार्ग में बड़ी फर्स्ट क्लास अवस्था चाहिए। ऐसी-ऐसी बातों को याद कर सदा हर्षित रहना होता है। समझ में आ जाये और प्रैक्टिस पड़ जाये तो फिर अवस्था बहुत खुशमिज़ाज हो जाती है।''

सा.बाबा 12.04.11 रिवा.

"हर एक को बापदादा की नॉलेज द्वारा कोई विशेष गुण प्राप्त होता है। अपना नहीं, मेरा गुण नहीं है, नॉलेज द्वारा प्राप्त हुआ है। इसमें अभिमान नहीं आयेगा। अगर अपना गुण होता तो पहले से ही होता, लेकिन नॉलेज के बाद गुणवान बने हो।... यह स्वयं का गुण नहीं कहेंगे, नॉलेज द्वारा स्वयं में भरते जाते हो।... स्मृति रहे नॉलेज द्वारा हमको प्राप्त हुआ है। बड़ाई नॉलेज की है, न कि आपकी।''

अ.बापदादा 19.07.72

विज्ञान का महत्व

नई दुनिया के नव-निर्माण, पुरानी दुनिया के विनाश और पुरानी दुनिया में मनुष्यों के सुख के लिए विज्ञान का बहुत महत्व है। विज्ञान ने अनेक ऐसे अविष्कार किये हैं, जिनके बिना वर्तमान दुनिया में मनुष्यों का जीना कठिन हो जाता। विज्ञान के द्वारा निर्मित साधन परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में भी सहयोगी बनते हैं, उनसे इस ईश्वरीय ज्ञान के प्रचार-प्रसार में बहुत मदद मिलती है, इसलिए बाबा अपने महावाक्यों में वैज्ञानिकों की भी महिमा करते हैं।

मनोविज्ञान का महत्व

मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान के द्वारा भी आत्माओं के अनेकानेक मनोरोगों का उपचार करते हैं, उनको राहत देते हैं। यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में मनोविज्ञान का महत्व रहता है परन्तु अज्ञानतावश मनोविज्ञान को भी मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान समझ लेते हैं। समय अनुसार मनोविज्ञान का भी महत्व होता है, उसका भी विश्व-नाटक में पार्ट है, समय है।

धार्मिक ज्ञान और भक्ति का महत्व

सतयुग-त्रेता आधा कल्प ज्ञान की प्रॉलब्ध चलती है और आधा कल्प भक्ति मार्ग चलता है। आधा कल्प विश्व रंगमंच पर एक ही देवी-देवता धर्म का पार्ट होता है और आधे कल्प अर्थात् द्वापर-कलियुग में विभिन्न धर्म, मठ-पंथ स्थापन होते हैं, जो इस सृष्टि को पतन से

थमाते हैं, इसलिए इस सृष्टि रंगमंच पर उनका भी विशेष महत्व है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान की अनुपस्थिति में और जब दुनिया में मनुष्यात्मायें देहाभिमानी बनते हैं तो पतन की गति को मन्द करने के लिए धार्मिक ज्ञान और भक्ति मार्ग चलता है, जो भी अति आवश्यक है। इसलिए बाबा ने अनेक बार भक्तों की, सन्यासियों की महिमा की है और कहा है कि सन्यासियों की पवित्रता ने ही भारत को थमाया है। अगर सन्यासी न होते तो भारत और ही काम चिता में जल मरता।

धर्म-स्थापकों ने भी समय-समय पर आकर विभिन्न धर्मों की स्थापना कर विश्व को पतन के गर्त में तीव्रता से गिरने से बचाया है और इस विश्व रंगमंच पर अपना पार्ट बजाया है। इसलिए बाबा धर्म-पिताओं का भी महत्व बताते हैं।

"बाप समझाते हैं - भारतवासी जो देवी-देवताओं को मानने वाले हैं, उन्होंने ही 84 जन्म लिये है, कोशिश कर उनको ही यह ज्ञान समझाओ।... कहाँ आधाकल्प में एक धर्म, जो भी संगम पर स्थापन होता है, फिर आधा कल्प में कितने धर्म, मठ-पंथ आदि स्थापन होते हैं। संगम पर ही बाप आकर भविष्य के लिए राजधानी स्थापन करते हैं।'' सा.बाबा 30.07.11 रिवा.

दर्शन का महत्व

इस जगत में विभिन्न धर्मों में कई दार्शनिक हुए हैं, जिन्होंने आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के विषय में चिन्तन कर अपने विचार व्यक्त किये हैं। उन दार्शनिकों और उनको फॉलो करने वालों के जीवन को देखें तो उनका जीवन जन साधारण की अपेक्षा संयमित था और वे अपने सिद्धान्तों के पक्के थे, जिसके कारण उनकी महिमा भी हुई और उसके लिए उनको अनेक प्रकार से समाज विरोध सहन करना पड़ा। उनका भी समाज को पतन से रोकने में विशेष योगदान रहा है परन्तु नियमानुसार सृष्टि तो पतन की ओर ही गई है परन्तु उस दर्शन विशेष को मानने वालों के जीवन की पतन की गति मन्द अवश्य रही है।

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान और दर्शन का उपयोग

आध्यात्मिक ज्ञान कल्पान्त में ज्ञान-सागर परमात्मा आकर विश्व के नव-निर्माण अर्थ देते हैं, जिससे विश्व का नव-निर्माण होता है और आज जो विश्व में सर्व राष्ट्रों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है, उसके स्थान पर शिवबाबा ज्ञान और राजयोग के द्वारा विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं और सारा विश्व सुख-शान्ति सम्पन्न, सुखी समृद्ध बनता है। आध्यात्मिक ज्ञान

द्वारा सभी आत्माओं को परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार मिलता है अर्थात् सर्व आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाती हैं। परमात्मा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं और योग सिखाते हैं, उससे सर्वात्मायें और जड़-जंगम पकृति सतोप्रधान बनती है।

सतयुग त्रेता में विज्ञान का उपयोग तो होता है परन्तु वहाँ कोई नई वैज्ञानिक खोज आदि नहीं होती है और त्रेता के अन्त तक वैज्ञानिकों द्वारा अविष्कारित सुख-साधनों का अन्त हो जाता है और फिर द्वापर से नई वैज्ञानिक खोजों-अविष्कारों का श्रीगणेश होता है क्योंकि विश्व में जब जनसंख्या बढ़ती है, दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है तो बुद्धि में नई चीज की खोज चलती है, जिससे मानव आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके और मनुष्य सुख-शान्ति पायें। द्वापर से ये खोज और अविष्कार होते-होते कलियुग के अन्त तक अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं, जिससे पुरानी दुनिया का विनाश होता है और नई दुनिया की स्थापना अर्थात् निर्माण का कार्य पूर्ण होता है। विश्व की आवश्यकताओं को देखते हुए विश्व में विज्ञान ने अनेक ऐसे साधनों का निर्माण किया है और कर रही है, जिससे आत्माओं की सुख-सुविधायें बढ़ी हैं। बाबा ने भी कहा है - आज विज्ञान के कारण ही बाबा के ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सुविधा हो रही है और बच्चे भी उसका लाभ उठा रहे हैं क्योंकि बाबा की मुरली सुनने, बाबा को चित्र रूप में देखने में वैज्ञानिक साधन बहुत सहयोगी बनें हैं। इसलिए बाबा कभी-कभी वैज्ञानिक बच्चों को भी याद कर उनकी महिमा करते हैं।

मनोविज्ञान मन द्वारा उत्पन्न संकल्पों की गति-विधियों का अध्ययन कर उनका मनुष्य के अपने शरीर पर, अन्य आत्माओं पर और विश्व के वातावरण पर क्या प्रभाव होता है, उसका स्पष्टीकरण करता है, अनेक प्रकार के मानसिक और शारीरिक रोगों का निदान के लिए विधि-विधान बताता है, सम्बन्धों में और समाज में मधुरता लाता है। समय अनुसार उसकी भी आवश्यकता होती है और उसके उपयोग से आत्माओं को अस्थाई सुख-शान्ती की अनुभूति होती है, परन्तु जो आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है, वह नहीं होती है।

समय-समय पर विभिन्न धर्म-पितायें आकर अपने-अपने धर्म की स्थापनार्थ धार्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे उस धर्म विशेष की स्थापना होती है और यह कल्प-वृक्ष वृद्धि को पाता है, विभिन्न धर्मों की आत्मायें आकर इस रंगमंच पर अपना-अपना पार्ट बजाती है, इसलिए धर्म की स्थापना के लिए धार्मिक ज्ञान भी आवश्यक है। इसके लिए बाबा ने कहा है कि समय-समय पर धर्म-पितायें आकर अपने-अपने धर्म की स्थापना कर इस विश्व को थमाते हैं अर्थात् सृष्टि रूपी भवन के रख-रखाव, मरम्मत का काम करते हैं परन्तु उनके धार्मिक ज्ञान से विश्व

का नव-निर्माण नहीं होता है। विश्व का नव-निर्माण तब ही होता है, जब परमात्मा आकर आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं।

विभिन्न महापुरुष आकर पतनोन्मुख समाज के कल्याणार्थ इस सृष्टि के विषय में चिन्तन करते हैं और अपने-अपने विचार देते हैं, जिससे मनुष्य उन विधि-विधानों, ज्ञान को धारण कर कुछ राहत अनुभव करते हैं। इसलिए समयानुसार दर्शन का भी महत्व और उपयोग है।

समय अनुसार सभी बातों का अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान और दर्शन का महत्व है परन्तु हर एक का कार्य-क्षेत्र अपना-अपना है और उस समय अनुसार उसका उपयोग आवश्यक होता है। आध्यात्मिक ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर आकर देते हैं, जिससे विश्व का नव-निर्माण होता है, नये चक्र की आदि होती है।

"आत्मा अपने को ही नही जानती है, तो परमिपता परमात्मा को कैसे जानेगी। ... पाप करते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। परन्तु आत्मा को जानना और फिर परमात्मा को जानना, यह डिफीकल्ट सब्जेक्ट है। इज़ी ते इज़ी भी है तो डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। भल कितना भी साइन्स आदि सीखते हैं, जिससे चाँद तक चले जाते हैं, तो भी इस नॉलेज के आगे वह तुच्छ है।''

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

"जो भी बच्चे, जो अपने को ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहलाते हैं, वे अपने को आत्मा निश्चय करें अर्थात् निश्चय करें कि मैं आत्मा बिन्दी हूँ, हमारा बाप भी बिन्दी है। ... देही-अभिमानी बनने का अभ्यास करना है। आत्मा बिन्दी है, उसमें ही 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। मैं आत्मा भिन्न-भिन्न शरीर लेकर पार्ट बजाती हूँ। यह मुख्य बात समझने की है।''

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - अभी तुम बच्चों को फूल मुआफिक हर्षित रहना चाहिए। ... अभी तुमको ज्ञान सागर बाप मिला है, बाप द्वारा ज्ञान के जेवर पहनते हो। ... तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए कि अभी बाबा हमको लेने आया है। बाबा से हमको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए। ऐसे-ऐसे ख्याल बुद्धि में होने से खुशी होगी।''

सा.बाबा 26.09.11 रिवा.

"अभी तुम समझते हो कि अब यह नाटक पूरा होता है। आत्माओं को पवित्र बनकर घर वापस जाना है। ... जो इस ज्ञान को समझने वाला होगा, वह जरूर किसको समझायेगा। तुम बुद्धि से समझ सकते हो कि हम यात्रा पर हैं, अपने घर जा रहे हैं। जितना हम बाप को और घर को याद करते हैं, उतना विकर्म विनाश होते हैं।''

सा.बाबा 23.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान एवं दर्शन में अन्तर

आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान एवं दर्शन में क्या अन्तर है, उसको जानना भी अति आवश्यक है। परमात्मा के द्वारा दिये गये आध्यात्मिक ज्ञान के अतिरिक्त दुनिया में जो भी ज्ञान है, वह समयानुसार आवश्यक है परन्तु वह सब उतरती कला का है। परमात्मा के द्वारा दिया गया आध्यात्मिक ज्ञान ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला का ज्ञान है। आध्यात्मिक ज्ञान से अन्य सब ज्ञान में और क्या अन्तर है, उस पर यहाँ कुछ विचार करते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Knowledge), धार्मिक ज्ञान और दोनों का अन्तर

आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक ज्ञान क्या है और दोनों में क्या अन्तर है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना और पुरानी का विनाश होता है, सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है और उस ज्ञान को देने वाला ज्ञान सागर निराकार परमात्मा है। धार्मिक ज्ञान से धर्म-विशेष की स्थापना होती है, जिसको धर्म विशेष के धर्म-पितायें आकर देते हैं। धार्मिक ज्ञान में धारणाओं का ही ज्ञान होता है जब कि आध्यात्मिक ज्ञान में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म की गहन गति आदि-आदि का सब ज्ञान होता है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान से एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है, नये कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है और बाद में कल्प-वृक्ष के उस तने से विभिन्न धर्म रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलती है और कल्प-वृक्ष वृद्धि को पाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, इसलिए परमात्मा के द्वारा दिया सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सर्व आत्माओं के लिए होता है, धार्मिक ज्ञान उस धर्म विशेष की आत्माओं के लिए ही होता है अर्थात् वे ही उससे लाभ उठाती हैं। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान आत्माओं में विश्व-प्रेम की भावना जाग्रत करता है, जिस विश्व-प्रेम के आधार पर विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा होती है।

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान एक ही होता है, जो एक ही ज्ञान सागर परमात्मा देते हैं, जिससे एक सत्य धर्म अर्थात् देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। धार्मिक ज्ञान अनेक धर्मों के स्थापक समय-समय पर आकर देते हैं और अपने धर्म की स्थापना करते हैं।

कल्पान्त में परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान की संचित स्मृतियों के आधार पर द्वापर में गीता शास्त्र बनाया गया है, इसलिए गीता में आध्यात्मिक ज्ञान का कुछ वर्णन है और गीता में ही भगवानुवाच है, जिसके लिए बाबा ने कहा है - गीता में आटे में नमक के माफिक कुछ सत्य आध्यात्मिक ज्ञान है। दुनिया के अन्य किसी भी धर्म के धर्म-शास्त्र में भगवानुवाच नहीं है और न ही सृष्टि-चक्र के किसी रहस्य का ज्ञान है। धार्मिक ज्ञान अनेक प्रकार के होते हैं, जो विभिन्न धर्म-पिताओं के द्वारा अपने धर्म के स्थापनार्थ दिया जाता है और बाद में उनके फॉलोअर्स सुने हुए के आधार पर उसका वर्णन करते हैं और उनके धर्म-शास्त्र बनते हैं। उन धर्म-शास्त्रों में धर्मपिता के द्वारा दिये गये ज्ञान और लिखने वाले की स्मृति और उसकी अपनी समझ का भी प्रभाव होता है। सभी धर्म-शास्त्रों में उनके फॉलोअर्स देश-काल-परिस्थिति के आधार पर परिवर्तन करते रहते हैं, जिससे उसका मूल स्वरूप समाप्त हो जाता है अर्थात् जो धर्म की स्थापना का आधार होता है, वह अधर्म के रूप में परिवर्तन होकर आत्माओं के दुख का कारण बन जाता है। यह भी इस सृष्टि-चक्र का अनादि-अविनाशी नियम-सिद्धान्त है कि इसकी हर चीज़ सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती ही है। परमपिता परमात्मा द्वारा दिये गये आध्यात्मिक ज्ञान से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है, जो सर्व धर्मों का आदि धर्म अर्थात् मूल धर्म है, इसलिए प्राय: सभी धर्मों में स्वर्ग को भिन्न-भिन्न नामों से याद किया जाता है।

"रुहानी बाप ही रुहानी नॉलेज पढ़ाते हैं, इसलिए उनको टीचर भी कहते हैं। ... इस रुहानी नॉलेज से हम अपना आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। ... इससे और सभी धर्म विनाश को पायेंगे क्योंकि तुम पावन बनते हो तो तुमको नई दुनिया चाहिए।''

सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

"बाबा की तो सारी गीता पढ़ी हुई है परन्तु जब ज्ञान मिला तो विचार चला कि गीता में यह लड़ाई आदि की बातें क्या लिखी हैं?... भक्ति में गाते थे आप आयेंगे तो हम आप पर बलिहार जायेंगे परन्तु वह कैसे आयेंगे, कैसे बलिहार जायेंगे, यह थोड़ेही समझते थे।''

सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

"ये सब बड़ी समझने की बातें हैं। ये सब प्वाइन्ट्स बुद्धि में रखनी होती हैं। सब प्वाइन्ट्स बिना नोट किये तो बुद्धि में रह नहीं सकती हैं। ... बुद्ध, क्राइस्ट आदि धर्म-स्थापकों की आत्मा भी आकर प्रवेश कर अपना धर्म स्थापन करती है। शिवबाबा है हेविनली गॉड फादर, सृष्टि का रचयिता। ... नई सृष्टि को स्वर्ग कहा जाता है।''

सा.बाबा 7.03.11 रिवा.

"तुम पहले शूद्र थे, शूद्र से प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण बने हो। वह है बाबा, यह

है दादा। जब तक ब्रह्मा वंशी नहीं बने, तब तक आत्मा बाप से स्वर्ग का वर्सा पा नहीं सकती। ... पहले है ब्राह्मण धर्म, उससे देवी-देवता धर्म निकलता है, फिर देवता धर्म से दूसरा-तीसरा धर्म स्थापन होता है। बाप है कल्प-वृक्ष का बीजरूप।''

सा.बाबा 3.08.11 रिवा.

"जब तक बाप यहाँ है, तब तक सब धर्मों की आत्मायें यहाँ आती ही रहेंगी। जब जाने का समय होगा तब आत्माओं का आना बन्द हो जायेगा। अभी तो सबको आना ही है। ... अभी बाप ने तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, तुम जैसे कि अलग दुनिया के हो गये हो। ... सबको तमोप्रधान बनना ही है। सतोप्रधान बनने का रास्ता एक बाप के सिवाए कोई बता न सके।''

सा.बाबा 1.08.11 रिवा.

"भक्ति में उतरते-उतरते आधा कल्प लग जाता है, अभी तुमको सीढ़ी चढ़ने में एक सेकेण्ड लगता है। ज्ञान की लिफ्ट कितनी अच्छी है। एकदम नीचे से एकदम ऊपर अपने घर ले जाती है। इसको कहा जाता है चढ़ती कला, तेरे भाड़े सबका भला।... ज्ञान और भक्ति का कितना फर्क है। ज्ञान, भक्ति और वैराग्य कहा जाता है ना।''

सा.बाबा 22.07.11 रिवा.

"ये वेद-शास्त्र सब भक्ति मार्ग की सामग्री है, इनमें कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान देने वाला तो एक ज्ञान सागर बाप ही है। ज्ञान मिलता है तो भक्ति आपही छूट जाती है। ... तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते पूरा वैष्णव बनना है। श्रीमत कहती है - पूरे पवित्र बनो, पूरा वैष्णव बनों और विष्णुपुरी का राज्य लो।''

सा.बाबा 8.09.11 रिवा.

"तुमसे कोई पूछे - तुमको यहाँ क्या मिलता है ? बोलो - बड़े-बड़े ऋषि-मुनि आदि भी कहते थे कि हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं, उसको अभी हमने ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा जाना है। रचता बाप के सिवाए यह ज्ञान कोई दे नहीं सकता। ... बेहद का बाप आकर सभी आत्माओं को साथ ले जाते हैं।''

सा.बाबा 25.06.11 रिवा.

"अभी यह स्थापना हो रही है, दैवी राजधानी की। और जो धर्म-स्थापक धर्म स्थापन करते हैं, उसमें कोई डिफीकल्टी नहीं होती है, उनके पिछाड़ी ऊपर से आते रहते हैं। यहाँ तो देवी-देवता धर्म वालों को ज्ञान से उठाना पड़ता है, उसमें मेहनत लगती है।''

सा.बाबा 26.03.11 रिवा.

"तुम देवी-देवता धर्म वाले ही पहले आये हो, और सब धर्म वाले तो बाद में आते हैं। गाते भी हैं - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... सारा झाड़ अर्थात् सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, वह

बाप आकर समझाते हैं। जो धारणा करते हैं, उनके लिए तो बहुत सहज है। आत्मा ही धारण करती है, आत्मा ही पुण्यात्मा और पापात्मा बनती है।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान में अन्तर

विज्ञान भौतिक जगत, भौतिक तत्वों के गुण-धर्मों का विश्लेषण करते हैं, उनके द्वारा नये-नये अविष्कार करते हैं, जिससे अनेक प्रकार की साधन-सामग्री निर्माण करते हैं, जो आत्माओं के लिए अनेक प्रकार के सुख-साधनों का आधार बनते हैं। वैज्ञानिक भी आत्मा और इस जगत के विषय में जानने का पुरुषार्थ करते हैं परन्तु ड्रामा अनुसार कोई जान नहीं सकते हैं, इसलिए आज तक किसी वैज्ञानिक ने आत्मा, परमात्मा और इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ अर्थात् तर्क-संगत और विवेकसंगत ज्ञान नहीं दिया है। विज्ञान के द्वारा जिस साधन-सामग्री का निर्माण होता है, उससे आत्माओं को सुख तो मिलता है, जीवन सहज बनता है परन्तु उस सबके होते भी उन वैज्ञानिकों की और उस साधन-सामग्री का उपभोग करने वालों की उतरती कला ही होती है। विज्ञान जो साधन-सामग्री निर्माण करता है, उसका प्रयोग करने वाली चेतन आत्मा है, जो अपनी मनोवृत्ति और स्थिति के आधार पर उसका सदुपयोग और दुरुपयोग करते हैं। विज्ञान के द्वारा अविष्कार किये गये साधनों से इस पुराने जगत का विनाश भी होता है, कई क्षेत्रों में उसके दुरुपयोग से आत्माओं के जीवन में व्यवधान भी पैदा होते हैं और विज्ञान द्वारा अविष्कारित और निर्मित साधन-सामग्री से ही विश्व का स्थूल नव-निर्माण भी होता है।

आध्यात्म के मूलाधार ज्ञान सागर शिवबाबा हैं, वे जो ज्ञान देते हैं, उससे इस जगत का नव-निर्माण होता है अर्थात् इस सृष्टि-चक्र की नई कलम लगती है। सर्वात्माओं की चढ़ती कला होती है, जिसमें वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं। परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है और योग सिखाया है, यह ज्ञान-योग भी एक विज्ञान (Spiritual Science) है, इससे आत्माओं को अपने विषय में, परमात्मा के विषय में और इस जगत के विषय में अनेक गुह्य और गोपनीय रहस्यों का ज्ञान होता है और हुआ है, जिसके लिए वैज्ञानिक अथक प्रयत्न करने और पदमों रुपयों का खर्च करने के बाद भी आज तक नहीं जान पाये हैं। परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान और योग से आत्माओं की और समस्त जगत की चढ़ती कला होती है, सबका कल्याण होता है, विश्व का नव-निर्माण होता है क्योंकि योग के द्वारा जो प्रकम्पन पैदा होते हैं, वे सारे विश्व के वातावरण में प्रसारित होकर जड़-जंगम-चेतन को पावन बनाते हैं। इसलिए

बाबा ने इस ज्ञान और योग को ज्ञान-विज्ञान कहा है।

यह सारा खेल आत्मा-परमात्मा-प्रकृति का है। आत्माओं के कर्म-संस्कारों के आधार पर प्रकृति उनको कर्मानुसार अच्छा-बुरा फल देती है, उसके लिए उसमें परिवर्तन होता है। साइन्स भी इस पुरानी दुनिया के विनाश में और नई दुनिया के निर्माण में सहयोगी बनती है और उन्होंने अनेक प्रकार के जो साधन-सामग्री बनाई है, वह नई दुनिया के निर्माण में भी काम में आती है। यथा साइन्स ने जो सौर-ऊर्जा का अविष्कार किया है, उसको उपयोग में लाने के साधनों का निर्माण किया है, वह अवश्य ही सतयुग में काम आयेगा क्योंकि इसमें वातावरण के प्रदूषण की बात नहीं है।

आध्यात्मिक ज्ञान के दाता परमात्मा ने तो अनेक प्रकार से विज्ञान के विषय में भी ज्ञान दिया है, परन्तु किसी वैज्ञानिक ने यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा और इस सृष्टि-चक्र के विषय में नहीं बताया है और जो बताया भी है, वह बुद्धिगम्य और तर्कसंगत नहीं है, इसलिए उससे विश्व की और आत्माओं की चढ़ती कला दृष्टिगोचर नहीं होती है। विश्व की निरन्तर उतरती कला ही हो रही है अर्थात् विश्व में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता बढ़ती जा रही है।

आत्मा में कैसे सर्व प्रकार के संस्कार भरे हुए हैं और वे कैसे काम करते हैं, यह ज्ञान परमात्मा ने दिया है। वैज्ञानिकों में भी ये नये अविष्कार करने के संस्कार पहले से ही नीहित हैं, जो समय की घड़ी आने पर उनको बुद्धि में टच (Touch) होता है और वे उसके अविष्कार करने में सफल होते हैं।

विचारणीय यह है कि विज्ञान की खोज करने वाली आत्मायें ही हैं और उनके द्वारा अविष्कारित साधन-सामग्री के उपयोग करने वाली भी आत्मायें ही हैं। इसलिए आत्माओं की मनोवृत्ति के आधार पर ही विज्ञान का महत्व है।

"साइन्स की मुख्य चीज है एटॉमिक बॉम्बस, जिनसे इतना सारा विनाश होता है। कैसे बनाते होंगे। बनाने वाली आत्मा है, उसमें पहले से ही ड्रामा अनुसार सारा ज्ञान है, जब समय आता है, तब वह ज्ञान उनमें इमर्ज हो जाता है। ... कल्प-कल्प जिसने जो पार्ट बजाया है, वह उनसे बजता रहता है। अभी तुम कितने नॉलेजफुल बन गये हो, इससे जास्ती नॉलेज कोई होती नहीं है।''

सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

"बाप ज्ञान का सागर है, उनमें सारा ज्ञान है, वह हमको समझाते हैं। यह भी उनका पार्ट है। तुम्हारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट है। तुम सुख-दुख दोनों का पार्ट बजाते हो। ... मनुष्य आत्मा को देखने के लिए कितना माथा मारते हैं, परन्तु किसको पता नहीं पड़ता क्योंकि वह

अति सूक्ष्म है।''

सा.बाबा 4.07.11 रिवा.

"वे मून में जाते हैं। यह है साइन्स का अति घमण्ड। अति में जाते हैं। तुम तो सूर्य-चांद से भी पार परमधाम में जाते हो। यह नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में अभी ही है। तुम समझते हो ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा यह सब बताते हैं। बाप भी कहते हैं - मैं तुमको पतित से पावन बनाता हूँ, यह भी मेरा पार्ट है। ... जैसे तुम पार्टधारी हो, वैसे मैं भी पार्टधारी हूँ।''

सा.बाबा 6.07.11 रिवा.

"तुम भक्ति मार्ग में मेरी महिमा गाते आये हो। अभी मैं प्रैक्टिकल में तुमको शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बता रहा हूँ। ... स्कूल-कालेज में जाकर तुम यह ज्ञान समझायेंगे तो वे इस नॉलेज को अच्छी रीति समझेंगे। समझेंगे बरोबर यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। ... यह एक ही दुनिया है, ऊपर सितारों आदि में और कोई दुनिया नहीं है।''

सा.बाबा 6.09.11 रिवा.

"अभी देखो ज्ञान-विज्ञान भवन नाम रखा है। जैसे कि वहाँ ज्ञान-योग सिखाया जाता है। बिगर अर्थ नाम रख देते हैं। ... अभी तुम ज्ञान-विज्ञान को जानते हो। योग से होती है हेल्थ, जिसको विज्ञान कहा जाता है और यह है ज्ञान, जिसमें वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई जाती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह जानना होता है।''

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

"ये सब राज़ बाप ही तुमको समझाते हैं। बाप कहते हैं - मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ, मेरे में सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान है। इस सृष्टि को उल्टा झाड़ कहा जाता है। इस कल्प-वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है।..., कोई मून में जाते हैं, इससे कोई फायदा नहीं है। इससे मनुष्य पावन बन मुक्ति-जीवनमुक्ति में तो जा नहीं सकते। आत्मा को अपना घर और बाप का घर भूल गया है, जिससे आत्मा देहाभिमानी बन पड़ी है।''

सा.बाबा 30.09.11 रिवा.

"शान्तिधाम है निराकारी दुनिया, यह है साकारी दुनिया। ब्रह्म तत्व का अन्त नहीं पा सकते हैं। ... आकाश तत्व का भी अन्त नहीं पा सकते हैं, भल साइन्स वाले कितनी भी कोशिश करें। साइन्स वाले कितना भी किसका अन्त पायें, परन्तु उनको सारी दुनिया पूजेगी नहीं। देवताओं की तो पूजा होती है। अभी तुम बच्चों को बाप कितना ऊंच बनाते हैं।''

सा.बाबा 12.04.11 रिवा.

"अभी तुम कितने नॉलेजफुल बन गये हो, इससे जास्ती नॉलेज कोई होती नहीं है। इस नॉलेज से तुम मनुष्य से देवता बन जाते हो। वह है माया की नॉलेज, जिससे विनाश होता है। ... बहुत कमाल करने से फिर नुकसान भी हो जाता है। क्या-क्या बनाते रहते हैं। बनाने वाले भी जानते

हैं कि इनसे विनाश होगा। अति के बाद अन्त होता है।''

सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

"जैसे साइन्स रिफाइन होती जाती है, ऐसे अपने आप में साइलेन्स की शक्ति वा अपनी स्थिति रिफाइन होती जा रही है ? जब कोई चीज़ रिफाइन होती है तो उसमें क्या-क्या विशेषतायें होती हैं ?... उसकी क्वान्टिटी कम होती है लेकिन क्वालिटी पॉवरफुल होती है। ... स्थिति रिफाइन होगी तो कम समय, कम संकल्प, कम इनर्जी में जो कार्य होगा, वह सौगुणा होगा और हल्कापन भी होगा।''

अ.बापदादा 12.06.72

"ड्रामा में हर एक को अनादि-अविनाशी पार्ट मिला हुआ है, जो उसको बजाना ही है। सृष्टि का यह चक्र फिरता रहता है। साइन्स वाले खोज करते हैं कि देखें मून में क्या है, उसके ऊपर क्या है। उसके ऊपर है सूक्ष्मवतन, वहाँ क्या देखेंगे ? लाइट ही लाइट। साइन्स की भी हद है ना। यह भी माया का पॉम्प है। साइन्स सुख के लिए भी है तो दुख के लिए भी है।''

सा.बाबा 5.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और मनोविज्ञान में अन्तर

आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान है, जो परमपिता परमात्मा ने इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाने के लिए दिया है। मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक संकल्पों के आधार पर मन की गति-विधियों का अध्ययन करते हैं और उसके प्रभाव के विषय में विचार करते हैं, उनकी रूप-रेखा बनाते हैं, जिससे मनोस्थिति ठीक रहे, जिससे मनुष्यों का व्यवहार अच्छा हो, मानसिक रोगों का निदान हो, परन्तु यह सब थोड़े समय के लिए ही होता है अर्थात् उसका प्रभाव मन पर अल्पकाल का पड़ता है, इसलिए देखा गया है कि अनेक मनोवैज्ञानिकों के द्वारा अनेक प्रकार सिद्धान्त बनाये गये हैं, उनका प्रयोग करते भी मनोरोगी बढ़ते ही जाते हैं, व्यवहार में कटुता बढ़ती ही जाती है, जिसके फलस्वरूप समाज में विघटन, कलह-क्लेष बढ़ता ही जाता है क्योंकि मन का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण यह सब अस्थाई होता है, इसलिए परिणाम में आत्माओं की मनोस्थिति का तथा विश्व का निरन्तर पतन होता ही जाता है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है और दे रहे हैं, वह सहज विवेकयुक्त, तर्कसंगत है और उसको समझने वाले और जीवन में अपनाने वाले अपने जीवन में सच्ची सुख-शान्ति-आनन्द का अनुभव करते हैं, इसलिए वे अपने तन-मन-धन को इस ईश्वरीय सेवा में लगाकर ऐसा पुरुषार्थ करते हैं, जिससे अन्य आत्मायें भी उससे लाभान्वित हों अर्थात् वे भी अपने जीवन में सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति करें और नये विश्व के नव-

निर्माण में सहयोगी बनें। परमात्मा ने मन क्या है, उसका स्पष्ट ज्ञान दिया है और इस सृष्टि-चक्र के विधि-विधानों का ज्ञान दिया है, जिससे आत्मायें अपने मन-बुद्धि को स्थिर करने और अपनी आत्मिक शक्ति का विकास करने में सहज समर्थ होती हैं और हो रही हैं।

"मनुष्य कहते हैं - मेरे मन को शान्ति कैसे मिले। यह देहाभिमान में आकर कहते हैं। बाप कहते हैं - मन-बुद्धि आत्मा के आरगन्स हैं।... आत्मा कहती है - मेरे मन को शान्ति कैसे मिले। वास्तव में यह कहना ग़लत है। तुम आत्मा हो, तुम्हारा स्वधर्म ही शान्त है। तुम ऐसे कहो कि मुझ आत्मा को शान्ति कैसे मिलेगी।''

सा.बाबा 8.09.11 रिवा.

"जब नष्टोमोहा हो जायेंगे तो नष्टोमोहा के साथ सदा स्मृति स्वरूप स्वत: ही हो जायेंगे। जब सर्व प्राप्ति एक द्वारा होती है, तो उसमें तृप्त आत्मा नहीं होते, कोई अप्राप्त वस्तु रह जाती है, तब तो तृप्त नहीं होते हो। तो क्या सर्व प्राप्ति का अनुभव नहीं होता है? ... जो बाप दे सकते हैं, क्या वह ये विनाशी आत्मायें इतने जन्मों में दे सकी हैं?... तो बताओ बुद्धि कहाँ जानी चाहिए?''

अ.बापदादा 22.7.72

आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन में अन्तर

जैसे आध्यात्मिक ज्ञान में मनोविज्ञान समाया हुआ है, वैसे ही परमात्मा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उसमें सभी दर्शनों का सार समाया हुआ होता है। इसीलिए कहते हैं परमात्मा आकर सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनाते हैं। सभी दर्शनों में चेतन आत्मा, सृष्टि के विषय में खोज या अनुमान के आधार पर वर्णन होता है, परन्तु यथार्थ का वर्णन नहीं होता है, इसलिए उसके विषय में मन में अनेक प्रकार के विरोधाभास उत्पन्न होते हैं। आत्मा की चेतनता और विश्व-नाटक के विषय में यथार्थ ज्ञान तो परमात्मा ही आकर देते हैं, जिससे आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है, विश्व का नव-निर्माण होता है। परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, वह सभी दर्शनों का सार है अथवा यह कहें कि परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उसके अंशमात्र पर सभी दर्शन आधारित हैं, समग्र रूप में नहीं। समग्र ज्ञान तो ज्ञान सागर परमात्मा ही देते हैं, जिसका कुछ अंश भक्ति मार्ग में विभिन्न दार्शनिक अंश रूप में वर्णन करते हैं। उसमें भी यथार्थता का अभाव ही होता है।

फिलॉसॉफी अर्थात् दर्शन आत्माओं के अपने त्याग-तपस्या, चिन्तन और अनुभव के आधार पर होता है, उसमें सत्यता अनुमानित होती है, इसलिए वह आत्माओं को प्रभावित तो करता है, परन्तु आत्माओं और विश्व के कल्याण में समर्थ नहीं होता है, इसलिए आत्माओं की

और विश्व की उतरती कला ही होती है। आध्यात्मिक ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा देते हैं, जो सत्य है, विवेकयुक्त है और तर्कसंगत है, इसलिए उसके द्वारा विश्व के नव-निर्माण का कार्य होता है, आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है।

आध्यात्मिक ज्ञान और उसकी धारणा से आत्मा के पाप नष्ट होते हैं, आत्मा पावन बनती है, आत्मा का बुद्धियोग परमात्मा से जुटता है, जिससे आत्मा को श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान भी मिलता है और शक्ति भी मिलती है, जिससे आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है, इसलिए आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है। फिलॉसॉफी अर्थात् मनुष्यों की मत। मनुष्य मत से आत्मा की सदा ही उतरती कला होती है क्योंकि कोई मनुष्य सम्पूर्ण नहीं है और सभी मनुष्य अपूर्णता की ओर अग्रसर हैं।

परमात्मा सदा सम्पूर्ण है और वही आध्यात्मिक ज्ञान का दाता है। वही आकर इस विश्व-नाटक की सत्य हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं। वैसे हिस्ट्री होती है पास्ट की घटनाओं की, परन्तु परमात्मा भविष्य की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी बताते हैं क्योंकि यह सृष्टि एक चक्र है, जो चक्रवत् चलता है, इसलिए भविष्य भी पास्ट है और पास्ट भी भविष्य होगा।

ज्ञान के लिए कहा गया है - तमसो मां ज्योतिर्गमय, असतो मां सद्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मा को ये सब प्राप्त होता है और आत्मा का अज्ञान अन्धकार मिटता है, आत्मा अमृत्व को प्राप्त करती है। परमात्मा आकर आत्माओं को यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान देकर ये वरदान देते हैं।

आत्मा में जो मुक्ति-जीवनमुक्ति के संस्कार नीहित हैं, उनके आकर्षण में, उसको प्राप्ति के लिए आत्माओं का जो चिन्तन चलता है, उससे उनकी जो मान्यतायें निश्चित होती हैं, वह उनका दर्शन कहा जाता है। उसमें सत्यता अंशमात्र होती है और उस सबके होते भी उस आत्मा की और उसको फॉलो करने वालों उतरती कला ही होती है। परमात्मा के द्वारा दिया गया ज्ञान भी दर्शन ही है परन्तु यह सत्य और सम्पूर्ण दर्शन है, इसलिए इसको फॉलो करने वालों को मुक्ति-जीवनमुक्ति की अभी भी अनुभूति होती है और भविष्य में भी मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति होती है क्योंकि इससे आत्माओं और समस्त जगत अर्थात् जड़-जंगम-चेतन की चढ़ती कला होती है, जिससे आत्मा सम्पूर्णता को प्राप्त करती है और विश्व का नव-निर्माण होता है। इसलिए इसको आत्म-दर्शन, परमात्म-दर्शन कहा जाता है।

"सिर्फ प्वाइन्ट्स सुनना-सुनाना इसको फिलॉसॉफी कहा जाता है। फिलॉसॉफी का प्रभाव अल्पकाल का पड़ता है, स्प्रीचुअलिटी का प्रभाव सदा काल के लिए पड़ता है। ... अन्जान बनने का अर्थ है - जो सुनते हैं, उसको स्वरूप में नहीं लाते हैं। योग्य टीचर उसको कहा जाता

है, जो अपने शिक्षास्वरूप से शिक्षा दे। अ.बापदादा 10.06.72

"यह है तुम्हारी माया से युद्ध, इसको कहा जाता है योगबल की लड़ाई। योगबल से क्या-क्या प्राप्ति होती है, यह किसको भी पता नहीं है। सिर्फ भारत के प्राचीन योग का गायन है। फिलॉसॉफर आदि बहुत हैं परन्तु यह स्प्रीचुअल नॉलेज कोई में है नहीं। रुहानी बाप ही ज्ञान का सागर है, वही आकर रुहानी ज्ञान देते हैं। इसको ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता है।''

सा.बाबा 5.08.11 रिवा.

"जो भी फिलॉसॉफर आदि हैं, उनमें यह स्प्रीचुअल नॉलेज है नहीं। त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं, उनके द्वारा यज्ञ रचा जाता है। यह रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ है। ... बाप ही आकर रुहानी ज्ञान देते हैं और तुमको ज्ञान-योग के द्वारा विश्व की राजधानी का वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 5.08.11 रिवा.

"बाप यह रुहानी भोजन देते हैं, तुम्हारी बुद्धि को और आत्मा को। अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला है। ऋषि-मुनि आदि सब कहते थे - हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। अब तुम बच्चे ऐसे नहीं कहेंगे। तुम तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। तुम अपने 84 के चक्र को भी जान गये हो। ... अभी अन्त में इस पुरानी दुनिया का विनाश हो, फिर नई दुनिया की आदि होगी।'' सा.बाबा 25.07.11 रिवा.

"यह है रुहानी ज्ञान। यह कोई शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। शास्त्रों के ज्ञान को भक्ति मार्ग कहा जाता है। सतयुग-त्रेता में भक्ति होती नहीं है। ज्ञान, भक्ति और फिर वैराग्य कहा जाता है। यह है बेहद का वैराग्य अर्थात् सारी पुरानी दुनिया को छोड़ना होता है। विराट रूप में ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र दिखाते हैं। यह भारत की ही कहानी है।''

सा.बाबा 23.07.11 रिवा.

"यह स्वर्ग और नर्क, रामराज्य और रावणराज्य का खेल है, जिसको कोई भी नहीं जानते हैं। शास्त्रों में यह ज्ञान नहीं है। शास्त्रों का ज्ञान है फिलॉसॉफी, भक्ति मार्ग। वह कोई सद्गति के लिए नहीं है। बाप जो ज्ञान देते हैं, वह कोई शास्त्रों की फिलासॉफी नहीं है। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। बाप को स्प्रीचुअल फादर कहा जाता है, वह है सर्व आत्माओं का बाप, मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप।'' सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"शास्त्रों का सब ज्ञान भक्ति का ज्ञान है, जिससे आत्मा और विश्व की उतरती कला ही होती है। ज्ञान का सागर तो एक बाप ही है। ... अभी बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो तो तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे।... मैं आता हूँ संगमयुग पर, जब पतित दुनिया को पावन दुनिया बनाना होता है।'' सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"पतित मनुष्य बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर सभी को पावन बनाये साथ ले जाओ। ... बाप सहज दवाई देते हैं, पावन बनने की। जितना याद करेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। और कोई साधू-सन्त आदि इस दवाई को जानते ही नहीं है। ... इतनी छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है, वह बजाती रहती है। वण्डर है ना।''

सा.बाबा 28.03.11 रिवा.

"जब उल्टे ज्ञान वालों में इतनी अट्रेक्शन थी, तो जो यथार्थ और श्रेष्ठ ज्ञान स्वरूप हैं, उनमें भी रुहानी आकर्षण वा अट्रेक्शन रहेगी ना। शारीरिक ब्युटी नज़दीक वा सामने आने से आकर्षण करेगी, लेकिन रुहानी आकर्षण दूर बैठे भी किसी आत्मा को अपने तरफ आकर्षित करती है।... ऐसे ही फिर एक्यूरेट भी हो। एक्यूरेट किसमें ?... जो नियम, मर्यादायें और डायरेक्शन हैं, उन सभी में एक्यूरेट और एक्टिव।''

अ.बापदादा 16.7.72

"मनुष्य सब हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ने वाले। उनको शास्त्रों का ज्ञान कहा जाता है, जिसको फिलॉसॉफी कहते हैं। यहाँ हमको ज्ञान-सागर बाप पढ़ाते हैं, यह है स्प्रीचुअल नॉलेज।... ज्ञान की अथॉरिटी कोई मनुष्य हो न सके। शास्त्रों की अथॉरिटी भी परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। गायन भी है - परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं।''

सा.बाबा 19.03.11 रिवा.

"ज्ञान की अथॉरिटी एक शिवबाबा ही है, बाकी सभी मनुष्य हैं शास्त्रों की अथॉरिटी। वह वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी खुद कहते हैं - मैं सर्व वेदों-शास्त्रों को जानता हूँ, तुमको उनका सार समझाता हूँ। शास्त्र सब हैं भक्ति मार्ग की समग्री। भक्ति से सीढ़ी नीचे उतरनी होती है। सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर बाप से ज्ञान पाकर, उनसे योग लगाकर तुम पवित्र बन जाते हो, सीढ़ी ऊपर चढ़ते हो।''

सा.बाबा 5.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति में अन्तर

आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है, भक्ति से आत्मा और विश्व की उतरती कला ही होती है क्योंकि सारे कल्प में संगमयुग का समय छोड़कर सारे कल्प आत्मा और विश्व की उतरती कला ही होती है। इसलिए भक्ति से आत्मा की चढ़ती कला तो नहीं होती है परन्तु उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है।

"तुमको कभी यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए कि हम साक्षात्कार करें। ये सब भक्ति के ख्यालात हैं। ज्ञान मार्ग को अच्छी रीति समझना है। ... बाप का फरमान है - तुमको कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ... बाप को

जानने से भारत सद्गति को पाता है, बाप को भूलने से भारत बिल्कुल दुर्गति को पा लेता है।''

सा.बाबा 17.05.11 रिवा.

"आत्मा को ही श्याम और सुन्दर कहा जाता है। आत्मा पवित्र थी तो सुन्दर थी, फिर काम चिता पर बैठने से काली हो जाती है। अब फिर बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं, सुन्दर बनाने के लिए। पतित-पावन बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो आत्मा से खाद निकल जायेगी।... अभी तुम बाप से ज्ञान रत्नों की झोली भर रहे हो। बाप तो ज्ञान का सागर है, जितना चाहो, उतना लो।''

सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

"अभी बेहद के बाप से तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना मिलता है। बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा। ... अभी तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरते हो। बाकी अमरनाथ कोई एक को थोड़ेही बैठकर अमर कथा सुनायेंगे। ... वास्तव में सच्चा-सच्चा कुम्भ का मेला यह है, जहाँ बाप तुमको ज्ञान-योग का स्नान कराकर पावन बनाते हैं।''

सा.बाबा 16.05.11 रिवा.

"भक्ति और ज्ञान दोनों अलग-अलग हैं। कहा जाता है ज्ञान से सद्गति होती है। मनुष्य समझते हैं - भक्ति करने से ज्ञान मिलेगा, तब ज्ञान से सद्गति होगी। भक्ति भी सबके लिए है और ज्ञान भी सबके लिए है। ... मनुष्य तो सद्गति का अर्थ भी नहीं समझते हैं। शिवबाबा सबकी सद्गति करते हैं, तब सब उनको याद करते हैं।''

सा.बाबा 12.04.11 रिवा.

"सच ज्ञान कोई शास्त्र में हो नहीं सकता, क्योंकि झूठ खण्ड है। झूठे ज्ञान से उतरती कला ही होती है। सच ज्ञान से होती है चढ़ती कला। ... अभी ज्ञान सूर्य उदय हुआ है, तो तुम बच्चों ज्ञान सूर्य का उदय होना देखना है। राइज़ ऑफ भारत और डाउन फॉल ऑफ भारत गाया हुआ है। भारत का डूबा हुआ बेड़ा बाप आकर सेलवेज़ करते हैं।''

सा.बाबा 2.04.11 रिवा.

"बच्चे बाप को पुकारते हैं, कहते हैं - बाबा हम अन्धेरे में आकर पड़े हैं, आप अभी फिर से ज्ञान से हमारा दीपक जगाओ। ... यह है बेहद के दिन और बेहद की रात की बात, जिसको ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात कहा जाता है।... रात को ठोकरें खाते हैं, भगवान को ढूँढने के लिए भक्ति में चारो तरफ फेरे लगाते हैं परन्तु पा नहीं सकते।''

सा.बाबा 1.04.11 रिवा.

"यह है ज्ञान, वह है भक्ति। यह स्प्रीचुअल नॉलेज स्प्रीचुअल फादर सुप्रीम रूह ही आकर तुमको देते हैं। अभी तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनना पड़े। उसके लिए अपने को आत्मा

समझ मामेकम् याद करो। शिवबाबा है सर्व आत्माओं का बाप, आत्मायें सब परमधाम से यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। सब आत्मायें शरीर धारण का पार्ट बजाती हैं। इसको कर्मक्षेत्र कहा जाता है। यह बड़ा भारी खेल है।''
सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"भक्ति मार्ग है नीचे उतरने का मार्ग। भक्ति है रात, ज्ञान है दिन। अभी घोर अंधियारी रात है। शिव जयन्ति और शिवरात्रि भी मनाते हैं। ... ये भक्ति मार्ग के शास्त्र फिर भी बनने ही हैं। यह ड्रामा अर्थात् सृष्टि-चक्र को अच्छी रीति समझना है। यह नॉलेज शास्त्रों में नहीं है। भक्ति मार्ग का ज्ञान है फिलॉसॉफी। उनमें कोई सद्गति का ज्ञान नहीं है। यथार्थ ज्ञान मैं आकर तुमको ब्रह्मा द्वारा ही सुनाता हूँ।''
सा.बाबा 3.02.11 रिवा.

"बाप को जाना और सृष्टि-चक्र को जाना, इसको ही कहा जाता है रुहानी नॉलेज। ... जब तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे, फिर आकर देवता बनेंगे, फिर तो इन ऑखों से देवताओं को देखते रहेंगे। ... साक्षात्कार से अल्पकाल की खुशी होती है। अल्प काल के लिए कामना पूरी हो जाती है। यह साक्षात्कार की भी ड्रामा में नूँध है, इससे प्राप्ति कुछ भी नहीं होती है।''
सा.बाबा 11.01.11 रिवा.

"भक्ति का जब अन्त हो, तब फिर बाप आकर भक्ति का फल ज्ञान दे। अभी भक्ति का अन्त है, भगवान ज्ञान दे रहे हैं और राजयोग सिखला रहे हैं।... बाप ब्रह्मा द्वारा यह राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ। आगे हम शूद्र थे, अभी ब्राह्मण बनें हैं, फिर हमको देवता बनना है। शिवबाबा हमको शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं।''
सा.बाबा 7.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन के गुण-धर्म और विशेषतायें

मनोविज्ञान यथार्थ परमात्म-ज्ञान नहीं है क्योंकि मन क्या है, वह भी उसमें स्पष्ट नहीं है परन्तु मन में उत्पन्न संकल्पों का शारीरिक स्थिति पर क्या प्रभाव होता है, उससे परस्पर सम्बन्ध किस तरह प्रभावित होते हैं, उनका जड़-जंगम-चेतन पर क्या प्रभाव होता है, उसका विश्लेषण मनोविज्ञान अवश्य करता है, जिससे अनेक रोगों का निदान भी होता है, सम्बन्धों में सुधार भी होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से आत्मा और विश्व की चढ़ती कला नहीं होती है, उतरती कला अर्थात् निरन्तर पतन ही होता है।

विज्ञान के क्षेत्र में भी वैज्ञानिक भी विश्व-कल्याण का संकल्प लेकर ही पुरुषार्थ करते हैं, अविष्कार करते हैं, जिससे अनेक प्रकार के संसाधनों का निर्माण होता है, जो मानव समाज

के लिए सुख-सुविधाओं का आधार बनते हैं। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अनेक अविष्कार हुए हैं, जिससे अनेकानेक असाध्य रोगों का निदान भी हुआ है परन्तु यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान की कमी के कारण उसके होते हुए भी आत्माओं की और विश्व की उतरती कला ही हुई है, पतन ही हुआ है अर्थात् तमोप्रधानता ही बढ़ी है, विश्व में रोग-शोक, समस्यायें बढ़ती ही गई हैं और बढ़ती ही जा रही हैं। विज्ञान के लिए बाबा ने भी कहा है - विज्ञान नये विश्व के नव-निर्माण में भी सहायक होगा तो पुराने विश्व के विनाश में भी निमित्त बनेंगा। विज्ञान ने अनेक ऐसे साधन बनाये हैं, जो आत्माओं के सुख का आधार बनने के साथ-साथ दुख का कारण भी बन रहे हैं। विज्ञान ने साधन बनाये हैं परन्तु उनका उपयोग करने वाली चेतन आत्मायें हैं, इसलिए उन साधनों का अच्छा-बुरा उपयोग आत्माओं पर निर्भर करता है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान न होने से विज्ञान चिकित्सा के क्षेत्र में अपूर्वभूत उन्नति करते हुए भी विश्व को रोग-मुक्त नहीं बना सका है, बल्कि ''ज्यों-ज्यों दवा की रोग बढ़ता ही गया'' की कहावत ही चरितार्थ हो रही है क्योंकि रोगों का कारण आत्मा के कर्म हैं, जिनका उपचार आध्यात्मिक ज्ञान से ही सम्भव है।

दर्शन में भी विभिन्न दार्शनिक भी मानव हित की परिकल्पना करके ही चिन्तन चिन्तन करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं और अपने विचारों को समाज के आगे रखते हैं, जिससे समाज उनको फॉलो अच्छा बनें परन्तु उनको फॉलो करने वाले अर्थात् उस अनुसार आचरण करने का पुरुषार्थ करने वालों को कुछ सन्तुष्टि और खुशी अवश्य मिलती है परन्तु उससे विश्व-कल्याण नहीं होता है अर्थात् आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला नहीं होती है। विश्व में अनेक दर्शन होते हुए भी आत्माओं और विश्व की उतरती कला ही हुई है।

धार्मिक ज्ञान के क्षेत्र में भी द्वापर से अनेक धर्मपितायें आये और अनेक प्रकार से धार्मिक ज्ञान दिया, जिससे उनको फॉलो करने वाले निकले और उनके अपने धर्म की स्थापना तो हुई परन्तु विश्व का नव-निर्माण नहीं हुआ अर्थात् विश्व की चढ़ती कला नहीं हुई। विश्व की आत्मायें और विश्व तमोप्रधानता की ओर ही बढ़ता गया, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के मध्य मतभेद बढ़ता गया, अन्तर बढ़ता गया, जिससे अनेक प्रकार के युद्ध भी हुए हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा जो सर्वात्माओं के अनादि पिता है, सर्वात्माओं के कल्याणकारी हैं, विश्व के नव-निर्माण के निमित्त हैं, वे ही आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे सर्वात्माओं का कल्याण होता है और इस विश्व का नव-निर्माण होता है। परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, वह सत्य आध्यात्मिक ज्ञान है, जिसमें विज्ञान, मनोविज्ञान, सर्व धर्मों का, विश्व के समस्त दर्शनों का सार समाया हुआ होता है, इसलिए उससे ही सर्वात्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है, विश्व का नव-निर्माण होता है, आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति के अपने जन्मसिद्ध अधिकार को

प्राप्त करती हैं।

विश्व-नाटक या सृष्टि का अनादि-अविनाशी नियम है कि किसी व्यक्ति के द्वारा दिये गये ज्ञान या उसके द्वारा निर्मित साधन, फार्मूला का प्रभाव उसके निर्माता या ज्ञान-दाता के अनुरूप ही होता है। ऐसे ही आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि का प्रभाव भी उसके मूलाधार अर्थात् दाता-निर्माता के अनुसार ही होता है। इस सत्य के अनुसार दुनिया के जितने भी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धर्म-स्थापक, दार्शनिक आदि सब मनुष्यात्मायें हैं और सभी देहाभिमान के वशीभूत, उतरती कला वाले होते हैं, इसलिए उनके द्वारा निर्मित साधन-सामग्री भी उतरती कला का ही कारण बनती है, देहाभिमान को ही बढ़ावा देने वाली ही होती है। इसलिए सतयुग आदि से लेकर कलियुग अन्त तक आत्माओं और विश्व की उतरती कला ही होती है और हुई है। चढ़ती कला का एकमात्र आधार परमात्मा के द्वारा दिया गया आध्यात्मिक ज्ञान ही है, जो परमात्मा कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुग पर देते हैं। परमात्मा निराकार, ज्ञान का सागर, सर्व गुणों का सागर है, सदा भरपूर है, सम्पूर्ण और सम्पन्न है, इस विश्व के किसी भी प्रभाव से अप्रभावित है, इसलिए उनके द्वारा दिया गया ज्ञान ही आत्मा की चढ़ती कला का आधार है, जीवन में सम्पूर्णता और सम्पन्नता को लाने वाला है।

आध्यात्मिक ज्ञान के गुण-धर्म और विशेषताओं को जानने और अनुभव करने के लिए आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के गुण-धर्म और विशेषताओं को जानना, उनका अनुभव और उन पर यथार्थ निश्चय होना अति आवश्यक है। इसलिए परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसके विषय में यहाँ सक्षिप्त में चर्चा करते हैं।

"न सिर्फ अपने को एक-रस बनाना है लेकिन सारे संगठन को एक-रस स्थिति में स्थित कराने केलिए सहयोगी बनना है, हर एक ब्राह्मण की रेस्पॉन्सिबिलिटी है। ... अगर संगठन में व माला में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती है। ऐसे संगठन की शक्ति ही इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है।''

अ.बापदादा 14.04.73

"यहाँ बैठे बच्चों को खज़ाना मिलता है, तो बच्चों को कितनी अन्दर खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप हमको सुखधाम का मालिक बना रहे हैं। ... बच्चे समझते हैं - हमको बाप ने एडॉप्ट किया है व हमने शिवबाबा की धर्म-गोद ली है, जो बाप आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। अभी हम ब्राह्मण हैं और सच्चा-सच्चा गीता का पाठ सुन रहे हैं।''

सा.बाबा 22.09.11 रिवा.

"आधा कल्प है ज्ञान का दिन, फिर आधा कल्प है भक्ति की रात। भक्ति हमको नीचे उतारती

है। ज्ञान से सीढ़ी चढ़ते हो। तुम बच्चों की बुद्धि में सीढ़ी की सारी नॉलेज जरूर रहनी चाहिए। बाप समझाते हैं - यह 84 जन्मों का चक्र है, इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। इसलिए बाबा चित्र भी बनवा रहे हैं, जिससे सिद्ध हो कि हम इस चक्र को जानने से 21 जन्म के लिए राज्य भाग्य पाते हैं।'' सा.बाबा 4.06.11 रिवा.

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान के गुण-धर्म-विशेषतायें

जिसका दाता सम्पूर्ण और सम्पन्न हो
जो वैज्ञानिक, विवेकयुक्त, तर्कसंगत (Scientific, Rational and Logical) हो
जो चढ़ती कला का आधार हो
जिसमें किसी प्रकार का विरोधाभास (Contradiction) न हो
जिसमें किसी धर्म के प्रति भेदभाव न हो अर्थात् सर्व धर्मों को मान्य हो
सर्व आत्माओं को सहज समझ में आये

आत्मा के गुण-धर्म और विशेषतायें

आत्मा भी एक अणु है, परन्तु वह चैतन्य है, जिसकी चेतनता शरीर में आने पर प्रगट होती है।

आत्मा का मूल स्वरूप निराकार, सच्चिदानन्दमय है अर्थात् जब आत्मा देह में रहते अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति, परम-आनन्द की अनुभूति होती है।

आत्मा का मूल निवास परमधाम है, जहाँ से यहाँ पार्ट बजाने आती है और कल्पान्त में फिर वापस अपने घर जाती है।

इस देह में आत्मा का निवास स्थान भृकुटी है, जहाँ से सारे शरीर को संचालित करती है।

"अभी तुमको पतित-पावन ज्ञान सागर बाप से पावन बनने का ज्ञान मिलता है। तुम स्वदर्शन चक्रधारी भी बनते हो। ... मनुष्य कहते - यह ज्ञान परम्परा क्यों नहीं चलता है। बाप कहते हैं - ज्ञान से दिन हो गया, फिर ज्ञान की दरकार नहीं, इसलिए यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। ये बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं।'' सा.बाबा 20.08.11 रिवा.

"सतयुग में इन देवी-देवताओं को भी रचता-रचना का ज्ञान नहीं था। वे भी सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं। अगर उनको यह ज्ञान हो तो कि हम सीढ़ी उतरते

रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे, चिन्ता लग जाये। ... अभी तुमको यह ज्ञान है, तुम समझते हो अभी हम चढ़ती कला में हैं। तुमको चिन्ता है कि हम सतोप्रधान कैसे बनें।''

सा.बाबा 16.08.11 रिवा.

"आत्मा तो बिन्दी है, कहाँ से भी चली जाती है, मालूम नहीं पड़ता है। उसका शरीर में रहने का स्थान भृकुटी है। बाप कहते हैं - मैं भी बिन्दी हूँ, इनकी भृकुटी में आकर बैठा हूँ। बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं, तुमको जो सुनाते हैं, वह मैं भी सुनता हूँ। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है। पहले स्थापना और फिर विनाश भी होगा।''

सा.बाबा 18.08.11 रिवा.

परमात्मा के गुण-धर्म और विशेषतायें

परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु उसमें कुछ विशेष गुण-धर्म और विशेषतायें हैं, जिससे उनको परमात्म्मा कहा जाता है। वह भी आत्मा के समान ही एक अणु है।

परमात्मा निराकार सच्चिदानन्द स्वरूप है, वह कभी गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। इस विश्व-नाटक में अपना पार्ट बजाने के लिए परकाया प्रवेश करते हैं, इसलिए वे प्रकृति के अर्थात् इस साकार लोक के गुण-धर्मों से अप्रभावित है, इसलिए उनके गुण-धर्म, विशेषतायें सदा एक रस रहती हैं।

परमात्मा सदा ही निराकार है अर्थात् उनको अपनी स्थूल या सूक्ष्म देह नहीं है, इसलिए वे पार्ट बजाने के लिए परकाया प्रवेश करते हैं। परमात्मा में परकाया प्रवेश करने और अपना कार्य सम्पन्न करके पुन: परमधाम चले जाने की शक्ति है, इसलिए वे अपने पार्ट के अनुसार देह में आते-जाते रहते हैं अर्थात् किसी देह में स्थाई रूप से नहीं रहते हैं।

परमात्मा सदा निराकार है, इसलिए उनमें एकाग्रता की अद्भूत शक्ति है, इसलिए वे किसी भी आत्मा के वर्तमान-भूत-भविष्य को जानने में समर्थ हैं। वास्तविकता ये है कि कोई आत्मा उनके सामने आते ही दर्पण के समान अपने आत्मिक स्वरूप का दर्शन करती है और उसके तीनों काल परमात्मा के सामने प्रत्यक्ष हो जाते हैं, जिसके आधार पर ही वे किसी आत्मा को मत देते हैं, जो उसको भाता है और उससे उसका कल्याण होता है। इसके लिए परमात्मा को कोई प्रयत्न या संकल्प करने की आवश्यकता नहीं होती है अर्थात् यह सब स्वभाविक होता है

परमात्मा ज्ञान का सागर, पतित-पावन है, इसलिए वे आत्माओं और विश्व को पावन बनाने के लिए ही कल्पान्त में आते हैं।

परमात्मा परकाया प्रवेश करते हैं, इसलिए उनके दो रूप गाये जाते हैं - साकार

और निराकार। जब परमात्मा साकार तन में आते हैं तो साकार की अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा की आत्मा भी परमात्मा के सानिध्य से उनके समान गुण-धर्म-विशेषताओं से सम्पन्न बन जाती है, जिससे वह भी किसी भी आत्मा के वर्तमान-भूत-भविष्य को जानने में समर्थ होती है और उसको जानकर जो मत देते हैं, उससे उसका कल्याण होता है। इसलिए प्रजापिता ब्रह्मा की मत भी गाई हुई है। इस विशेषता के कारण जो भी उनके सामने आता है, अनायास ही उसकी सारी जन्मपत्री साकार के सामने स्पष्ट हो जाती है और उनके मुखारबिन्दु से उस अनुरूप महावाक्य उच्चारण होते हैं और सामने वाली आत्मा उससे सन्तुष्टता का अनुभव करती है। यह अनुभव प्राय: सभी ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का है, जो उनसे साकार में मिले हैं और अभी अव्यक्त रूप में मिलते हैं। अव्यक्त रूप में भी बापदादा ने जिस आत्मा के प्रति जो महावाक्य उच्चारण किये हैं, उसको सत्य अनुभव होते हैं और वे उसके लिए वरदान स्वरूप बन जाते है।

"अभी तुम्हारी बुद्धि में ये सब बातें हैं कि हम सतयुग आदि में पार्ट बजाने आये थे, हम विश्व के मालिक महाराजा-महारानी थे, हमारी राजधानी थी, अभी तो राजधानी है नहीं। अभी हम सीख रहे हैं कि हम राजाई कैसे चलायेंगे। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं। जैसे बाप की आत्मा में सारा ज्ञान है, वैसे तुम्हारी आत्मा में भी अभी यह ज्ञान है।''

सा.बाबा 12.08.11 रिवा.

"भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाना बाप का ही काम है। श्री-श्री शिवबाबा ही श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए श्रीमत देते हैं। ... परमात्मा का यह ज्ञान देने का अभी ही पार्ट है। अन्त तक बाप ज्ञान देते रहेंगे, यह ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं - आगे चलकर तुम बहुत कुछ समझने वाले हो, बाप दिन-प्रतिदिन समझाते रहते हैं। ... राजधानी कैसे चलाते हैं, स्वयंवर कैसे होता है, यह सब आगे चलकर पता पड़ जायेगा।''

सा.बाबा 29.07.11 रिवा.

"तुम जानते हो - हमारा बाप नॉलेजफुल है, उसमें सारे ड्रामा की नॉलेज है, जो अभी हमको भी मिल रही है। अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग होने के कारण तुम्हारा यह जन्म भी पुरुषोत्तम है। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान है कि हमने 84 का चक्र लगाकर तमोप्रधान बनें, अभी फिर सतोप्रधान पुरुषोत्तम बन रहे हैं। बनाने वाला एक बाप ही है।''

सा.बाबा 16.09.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - अभी मैं तुमको गुह्य रमणीक बातें सुनाता हूँ, जो आगे नहीं जानते थे, अभी जानते हो। नई-नई प्वाइन्ट्स बुद्धि में आती जाती हैं, जो बाप तुमको सुनाते हैं और तुम फिर दूसरों को भी समझा सकते हो। दिन प्रतिदिन यह ब्राह्मणों का झाड़ बढ़ता जाता है, फिर यही

दैवी झाड़ बनना है। ... ज्ञान को बीज कहा जाता है। बीज कितना छोटा होता है, झाड़ कितना बड़ा निकलता है। बाप कहते हैं - मन्मनाभव।''

सा.बाबा 17.09.11 रिवा.

"तुमको एक शिवबाबा को ही याद करना है। उनको ही कहते हैं - तुम मात-पिता हम बालक तेरे। अभी तुम उनके पास आते हो तो बुद्धि में रहता है कि हम शिवबाबा के पास जाते हैं। ... आत्मा को इन आँखों से देख नहीं सकते हैं। उसको दिव्य-दृष्टि से ही देखा जा सकता है। वह इन आँखों से देखने की कोई चीज नहीं है।''

सा.बाबा 16.06.11 रिवा.

सृष्टि-चक्र अर्थात् विश्व-नाटक के गुण-धर्म और विशेषतायें

यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो चक्रवत् चलता है और हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। कल्पान्त में परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर और आत्माओं को राजयोग सिखाकर ज्ञान-योग और पवित्रता के द्वारा इसकी कलम लगाते हैं। इसलिए इस विश्व-नाटक की एक वृक्ष से तुलना की गई है, इसलिए इसको कल्प-वृक्ष कहा जाता है, जिसके बीजरूप परमात्मा हैं, जड़ ब्राह्मण धर्म है, तना आदि सनातन देवी-देवता धर्म है और शाखायें-प्रशाखायें विभिन्न धर्म, मठ-पंथ हैं।

यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी (Just, Accurate and Auspicious) है।

यह विश्व-नाटक आत्माओं के कर्म और फल पर आधारित है, इसमें कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है, इसलिए कर्म की गुहय गति को जानना भी अति आवश्यक है, जो ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर कल्पान्त में समझाते हैं, जिससे आत्मायें सुकर्म करने में समर्थ होती हैं, जिससे आत्माओं की चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प में आत्माओं की उतरती कला ही होती है क्योंकि आत्माओं के द्वारा साधारण कर्म और विकर्म ही होते हैं। साधारण कर्मों को बाबा ने समझाने के लिए अकर्म कहा है परन्तु वास्तविकता को विचार करें तो इस विश्व-नाटक में कोई भी कर्म अकर्म अर्थात् फल-रहित नहीं होता है अर्थात् अकर्म नहीं होता है। कर्मों के आधार पर ही सतयुग में कलायें उतरती हैं।

"अभी एक तरफ है ईश्वरीय सन्तान, दूसरे तरफ हैं आसुरी सन्तान। तुम जानते हो - शिवबाबा ब्रह्मा तन में आये हैं। शिव बाबा है, ब्रह्मा है दादा, प्रजापिता। ... अभी तुम जानते हो हम आत्मायें हिसाब-किताब चुक्तू कर सतोप्रधान बनकर शान्तिधाम वा सुखधाम में जायेंगे।

आत्मायें कैसे परमधाम से आती हैं और फिर कैसे जाती हैं, वह भी तुम जानते हो।''

सा.बाबा 23.08.11 रिवा.

"तुम बच्चे अभी समझते हो - वह है आत्माओं का निराकारी झाड़। जब सब आत्मायें वहाँ से यहाँ आ जायेंगी, फिर सब यहाँ से वहाँ जायेंगे। प्रलय तो कब होनी नहीं है।... अभी बाप कहते हैं - देह सहित जो भी देह के मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उन सबको भूल जाओ। आत्मा विचित्र है। विचित्र उसको कहा जाता है, जिनको देखा नहीं जा सकता है।''

सा.बाबा 23.08.11 रिवा.

"यहाँ तुमको ज्ञान का खज़ाना मिलता है। बड़ी भारी कमाई है, तुम रतनों से अपनी झोली भरते हो। ... तुम जानते हो अब विनाश तो होना ही है। विनाश और स्थापना का साक्षात्कार भी किया है, सो फिर इन ऑखों से भी देखेंगे। ... ज्ञान बिगर किसकी सद्गति तो हो न सके। ज्ञान एक निराकार शिवबाबा ही देते हैं।''

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

"तुम बच्चों ने अभी रचता बाप द्वारा रचता और रचना को जाना है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा सृष्टि-चक्र है। ब्रह्मा को रचता नहीं कहेंगे। रचता बाप है, वह ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। बलिहारी एक की है, वही रचता है। ... बाप ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचते हैं। यह है रुहानी यज्ञ, इसको स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। रुहानी बाप ही रूहों को यह ज्ञान देते हैं।''

सा.बाबा 2.08.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में बैठा है कि यह बना-बनाया अनादि अविनाशी ड्रामा है, जो फिरता ही रहता है। अभी तुम जाग गये हो, बाकी सारी दुनिया सोई हुई है। अभी तुम बच्चों को सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन का पता है।... बाप कहते हैं - तुम इस सृष्टि-चक्र को समझने से ही चक्रवर्ती राजा-रानी बनते हो।''

सा.बाबा 28.07.11 रिवा.

"तुमको 84 जन्मों की सीढ़ी उतरते-उतरते सतो, रजो, तमो में जरूर आना है। फिर बाप आकर तुमको सतोप्रधान बनाते हैं। ... भारतवासी शिव जयन्ति मनाते हैं, परन्तु बाप कब आये, यह कोई नहीं जानता है। ... यह एक अनादि-अविनाशी खेल है। वह है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। अभी तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक जानते हो।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान

Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है और उसकी क्या परख है?

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान जब ज्ञान सागर परमात्मा से मिलता है तो आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है, इसलिए सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का गायन है। इसके लिए पहले आत्मा को जानना अति आवश्यक है, तब ही परमात्मा को जाना जा सकता है और जब परमात्मा को जानेंगे, तब ही उनके द्वारा सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान सकेंगे और इस सृष्टि-चक्र के गुण-धर्मों को जानने और धारण करने से ही आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है अर्थात् आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मा को अपने में सम्पूर्णता-सम्पन्नता का अनुभव होता है, जिससे आत्मा जीवन में सन्तुष्टता-प्रसन्नता का सहज अनुभव करती है, उसकी भटकना बन्द हो जाती है क्योंकि आत्मा को अपने लक्ष्य का ज्ञान मिल जाता है, तो आत्मा उसके लिए पुरुषार्थ करती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से ही सर्व आत्माओं और समग्र विश्व का कल्याण होता है अर्थात् सृष्टि-चक्र का नव-निर्माण होता है अर्थात् नया चक्र आरम्भ होता है।

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान में कोई विरोधाभास नहीं होता है, जिससे आत्मा को मन में किसी प्रकार की उल्झन महसूस नहीं होती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान सहज बुद्धि गम्य, तर्कसंगत होता है।

परमात्मा के द्वारा दिये गये यथार्थ ज्ञान से समग्र विश्व का कल्याण होता है अर्थात् वह सर्व धर्मों को मान्य होता है अर्थात् उसमें किसी धर्म विशेष के प्रति लगाव या घृणा नहीं होती है अर्थात् सर्व धर्मों के प्रति उसका सम्मान होता है।

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान को समझने और धारण करने वाली आत्माओं में सहज विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत होती है और उनके द्वारा विश्व-कल्याण का कर्तव्य होता है।

अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें इन सब विशेषताओं का अनुभव होता है और उसको जीवन में धारण करने वाली आत्मायें अपने में सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कर रही हैं और अपने को अपने अभीष्ट लक्ष्य अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता की ओर अग्रसर अनुभव कर रही हैं। सर्व आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान हैं, इसलिए सत्य आध्यात्मिक ज्ञान से सर्वात्माओं का कल्याण हो, उसका पुरुषार्थ कर रही हैं।

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान वह है, जिससे जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों का कल्याण हो अर्थात् तीनों पावन बनें।

"बाप कहते हैं - बच्चों को अभी आत्माभिमानी जरूर बनना है। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं,

जिसको आत्मा का यथार्थ ज्ञान हो। आत्मा का ही ज्ञान नहीं है तो परमात्मा का ज्ञान कैसे हो सकता है। आत्मा सो परमात्मा कहना बड़ी भारी भूल है।''

सा.बाबा 1.08.11 रिवा.

"युनिवर्सिटी-कालेज आदि में नक्शे होते हैं। तुम्हारे ये चित्र भी नक्शे हैं। तुम इन पर किसको भी अच्छी रीति समझा सकते हो। ... तुमको अभी स्मृति आई है कि बरोबर हमको कल्प-कल्प विस्मृति होती है, फिर बाप स्मृति में लाते हैं। पहली-पहली एकज भूल हुई, जो तुम रचता बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को भूल गये। अभी तुमने बाप द्वारा रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जाना है।''

सा.बाबा 2.08.11 रिवा.

"बाप जो ज्ञान सुनाते हैं, उस ज्ञान से फिर आधा कल्प सद्गति होती है। भक्ति को भी आधा कल्प चलना है। ज्ञान से सद्गति संगमयुग पर ही होती है।... बाबा किस घड़ी आते हैं और किस घड़ी चले जाते हैं, वह भी किसको पता नहीं पड़ता है। सदैव तो सवारी नहीं करते हैं। आयेंगे और चले जायेंगे। ... जिनको बाप ने कल्प पहले ज्ञान दिया, उनको ही अब भी देंगे।''

सा.बाबा 31.08.11 रिवा.

"यह सब बड़ी समझने की बातें हैं। आगे चलकर इन बातों को सब समझेंगे, जब तुम्हारी वृद्धि होगी। ... यह पूरी नॉलेज क्या है, उसको अच्छी रीति समझकर और सबको समझाना चाहिए। ... लिखना चाहिए - हम पूरे सृष्टि-चक्र की नॉलेज दे सकते हैं, मूलवतन, निराकार बाप का भी परिचय दे सकते हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा और उनके ब्राह्मण धर्म के बारे में भी समझा सकते हैं।''

सा.बाबा 10.03.11 रिवा.

आत्मा-परमात्मा का ज्ञान

"आत्मा में 84 जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, जो फिरता रहता है। कब बन्द होने का नहीं है। यह सवाल ही नहीं उठता कि सृष्टि रची ही क्यों। ... आत्मायें कब घटती-बढ़ती नहीं हैं। ड्रामा के सब एक्टर्स निश्चित हैं। जितने एक्टर्स अभी हैं, फिर इतने ही होंगे। ... कोई भी एक्टर इस ड्रामा के पार्ट से छूट नहीं सकता। मुझ भगवान को भी पतित दुनिया में पार्ट बजाने आना पड़ता है।''

सा.बाबा 1.09.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मुझे भी इस पतित दुनिया में आना और जाना पड़ता है। कल्प-कल्प मैं आता हूँ। जब मुझे ही आना पड़ता है तो बच्चों का बन्द कैसे हो सकता है।... मुझे भी इस ड्रामा में

पार्ट बजाने आना पड़ता है, परन्तु मेरा आना और जाना बड़ा वण्डरफुल है, इसलिए गाते हैं तुम्हरी गत-मत तुम ही जानो, और न जाने कोई। बाप ही आकर सद्गति की मत देते हैं।''

सा.बाबा 1.09.11 रिवा.

"आत्मा को ब्राह्मण में बुलाते हैं परन्तु मोह शरीर में रहता है। शरीर को ही याद कर बुलाते हैं। आत्मा ही सबकुछ शरीर के द्वारा करती है। अच्छे-बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। पहले-पहले देहाभिमान आता है, फिर और सब विकार आ जाते हैं। ... अभी तुमको देही-अभिमानी बन दैवी गुण धारण कर देवता बनना है।''

सा.बाबा 11.08.11 रिवा.

"बाप है व्यास, तुम उनके बच्चे सुखदेव हो। अभी तुम बाप से सुख का वर्सा ले रहे हो। अभी तुम सुख के देवता बनते हो। ... आत्मा को जाना जाता है, परमात्मा को भी जाना जाता है। वही आकर आत्माओं को पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं।... आत्मा को देख नहीं सकते, आत्मा को रियलाइज़ किया जाता है। अभी तुमने आत्मा को रियलाइज़ किया है।''

सा.बाबा 6.08.11 रिवा.

"ये बेहद की बातें, कितनी वण्डरफुल हैं, जो और कोई समझ न सके। बेहद के बाप से बेहद की पढ़ाई पढ़कर बेहद का राज्य लेना है। आत्मा ही इस शरीर द्वारा सृष्टि-चक्र को जानती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि शरीर नॉलेज लेता है आत्मा द्वारा। नहीं, आत्मा शरीर द्वारा नॉलेज लेती है। तुमको कितनी आन्तरिक खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 2.08.11 रिवा.

"यह तो बेहद का बाप है, निष्काम सेवा करते हैं। इन जैसी निष्काम सेवा कोई कर नहीं सकता। बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद थोड़ेही विश्व का मालिक बनते हैं।... शिवबाबा ज्ञान का सागर है, अथाह ज्ञान देते हैं। यह नॉलेज बहुत वैल्यूएबुल है, जो अच्छी रीति धारण करने की है। यह नॉलेज कोई परम्परा नहीं चलती है। अभी तुमको ज्ञान का तन्त मिलता है।''

सा.बाबा 22.07.11 रिवा.

"यह है रुहानी नॉलेज, जो रुहानी बाप के सिवाए और कोई दे न सके। रूहों को रुहानी बाप ही आकर रुहानी नॉलेज देते हैं। बाप हर 5 हजार वर्ष के बाद आकर यह नॉलेज देते हैं।... बाप ने समझाया है - अब हर एक आत्मा को वापस घर जाना है। आत्मा ही सतोप्रधान, सतो-रजो-तमो बनती है। कोई आत्मा का पूरे कल्प 84 जन्मों का पार्ट है, कोई कोई आत्मा का बहुत थोड़ा पार्ट है। आये और गये। ... बाप तो निराकार है, वह आकर इस मुख से समझाते हैं।''

सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

"अभी बाप कहते हैं - बच्चे देही-अभिमानी बनों। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है, आत्मा ही शरीर द्वारा सारा पार्ट बजाती है। ... आत्मायें परमात्मा को बुलाती हैं कि निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में रूप बदलकर आओ। तुम आत्मायें भी निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में पार्ट बजाते आती हो। तुम गर्भ में आती हो, पुनर्जन्म लेती हो, मैं गर्भ में नहीं आता हूँ।''

सा.बाबा 13.07.11 रिवा.

"आत्मा देखने में नहीं आती है, समझ में आता है कि मैं आत्मा हूँ, यह मेरा शरीर है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। आत्मा में ही अच्छे-बुरे संस्कार रहते हैं। ... ऐसे ही आत्मा का जो फादर है, जिसको गॉड फादर कहते हैं, वह देखने में नहीं आते हैं। उनको भी समझा जा सकता है, जाना जा सकता है। ... सर्वात्माओं का बाप है परमपिता परमात्मा शिव।''

सा.बाबा 7.09.11 रिवा.

"बेहद के बाप की सौगात है मुक्ति-जीवनमुक्ति। तुम जानते हो बाबा हमारे लिए स्वर्ग की सौगात लाया है, सन्यासी मुक्ति की सौगात पसन्द करते हैं। ... ब्रह्म महतत्व आत्माओं के रहने का स्थान है, बाप भी वहाँ रहते हैं। बाकी आत्मा कोई ज्योति, ज्योति में समाती थोड़ही है। ... आत्मा बिन्दी मिसल है, जो इन आँखों से देखने में भी नहीं आती है।''

सा.बाबा 17.06.11 रिवा.

"बच्चे कहते - बाबा, पहले यह क्यों नहीं बताया कि परमात्मा बिन्दी मिसल है। बाप कहते हैं - उस समय यह बताने का पार्ट ही नहीं था। अरे तुम आई.सी.एस. शुरू में पढ़ते हो क्या ? पढ़ाई के भी कायदे होते हैं।... बोलो - बाबा से लिखकर पूछते हैं। बाबा को बताना होगा तो बतायेंगे वा तो कहेंगे आगे चलकर समझ लेंगे। एक ही टाइम पर सब तो नहीं सुनायेंगे।''

सा.बाबा 17.06.11 रिवा.

"मैं भी आत्मा हूँ, तुम भी आत्मा हो। मेरे को स्मृति है कि मैंने यह शरीर लोन लिया हुआ है। परन्तु तुम अपने को रियलाइज़ नहीं करते हो कि हम आत्मा हैं, आत्मा ही बाप को याद करती है। ... सारी दुनिया पर ब्लिस करना, मुझ बाप का ही काम है। ब्लिसफुल, ज्ञान का सागर, यह महिमा किसी मनुष्य को नहीं दे सकते हैं।''

सा.बाबा 28.05.11 रिवा.

"तुम कहेंगे हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। अभी तुमने आत्मा का साक्षात्कार किया है। ... आत्मा बिगर तो शरीर कुछ कर न सके। पहले तो आत्मा को पहचानना है, फिर परमात्मा को पहचानेंगे। बाप द्वारा ही पहचान सकेंगे। ... आत्मा में कैसे सारा पार्ट भरा हुआ है, वह बाप आकर बताते हैं। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझ निराकार

परमपिता परमात्मा से सुनो।'' सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

"अभी तुमको फिर से आत्माभिमानी बनना है। अब अपने को आत्मा समझना है। तुम समझते हो - हम ही 84 जन्म लेकर भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते आये हैं। अब हमारा 84 का चक्र पूरा हुआ। ... आत्मा अति सूक्ष्म है, उसको सिवाए दिव्य दृष्टि के देखा नहीं जा सकता है। आत्मा ही एक शरीर छोड़, दूसरा लेकर पार्ट बजाती है।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"पहले-पहले किसको आत्मा और परमात्मा का फर्क समझाना चाहिए। अभी तुमने समझा है कि आत्मा और परमात्मा में क्या फर्क है। परमात्मा नॉलेजफुल, पतित-पावन, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। उनको ही सब बुलाते हैं। ... मैं भी तब आता हूँ, जब रावण राज्य खत्म होना होता है। रावण राज्य और राम राज्य के संगम पर ही मैं आता हूँ। संगम पर ही आकर स्वर्ग स्थापन करता हूँ।'' सा.बाबा 18.04.11 रिवा.

"नाम-रूप से न्यारी कोई चीज़ हो नहीं सकती। आत्मा एक बिन्दी स्टार मिसल है, जो भृकुटी के बीच में रहती है, जिस छोटी सी आत्मा में सारा 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। यह बहुत समझने की बातें हैं। ... ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सर्व का गति-सद्गति दाता एक बाप है, फिर दूसरा कोई ज्ञान दे कैसे सकता है।''

सा.बाबा 1.04.11 रिवा.

"तुम हो गुप्त पाण्डव। कोई को भी पहचान में नहीं आ सकते हो। बाप भी गुप्त है, ज्ञान भी गुप्त है। तुम्हारी माया से युद्ध भी गुप्त है। ... परमात्मा बाप आत्माओं को ज्ञान देते हैं। आत्मा ही ज्ञान लेती है, आत्मा ही कर्मों अनुसार पुनर्जन्म लेती है। बाप ये सब प्वाइन्ट्स अच्छी रीति बुद्धि में डालते हैं। बच्चे नम्बरवार देही-अभिमानी बनते हैं।''

सा.बाबा 25.03.11 रिवा.

सृष्टि-चक्र अर्थात् विश्व-नाटक का ज्ञान

"यह बना-बनाया अनादि-अविनाशी खेल है, जो फिरता रहता है। जिन आत्माओं का पिछाड़ी में पार्ट है, 2-4 जन्म लेते हैं, वे बाकी समय तो शान्तिधाम में ही रहेंगे। बाकी खेल से कोई निकल जाये, यह हो नहीं सकता। ... सब आत्मायें पार्टधारी हैं, उसमें कोई का पार्ट ऊंचा है और कोई का कम है। ज्ञान सागर बाप ही आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।'' सा.बाबा 3.09.11 रिवा.

"द्वापर से रावण की प्रवेशता होती है। रावण ने तुम्हारी राजाई छीनी है, जिसकी एफीजी

बनाकर जलाते हैं। परन्तु रावण है क्या, वह किसकी बुद्धि में नहीं आता है।... बेहद का बाप है नॉलेजफुल, उनको ज्ञान का दाता, दिव्य चक्षु विधाता कहते हैं। अभी तुम आत्माओं को बाप द्वारा ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, जिससे तुम तीनों कालों और तीनों लोकों को जानते हो।''

सा.बाबा 31.08.11 रिवा.

"आत्मायें परमधाम से आकर यहाँ शरीर धारण करती हैं पार्ट बजाने के लिए। एक्टर्स को इस ड्रामा के क्रियेटर, डॉयरेक्टर, मुख्य एक्टर्स और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानना तो चाहिए ना। अभी तुमको शुरू से अन्त तक सारे ड्रामा का पता पड़ गया है। बाप द्वारा तुमको यह सारी नॉलेज मिल रही है कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। इसको कहा जाता है रुहानी नॉलेज। जिस्मानी ज्ञान को फिलॉसॉफी कहा जाता है।''

सा.बाबा 30.08.11 रिवा.

"इसको कहा जाता है बना-बनाया अनादि-अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। यह कभी विनाश नहीं होता है। ... बाप तुम बच्चों को यह ज्ञान पढ़ा रहे हैं, तुम्हारी आत्मा इस शरीर द्वारा पढ़ती है। यह है बुद्धि के लिए भोजन। अभी तुम्हारी बुद्धि को बाप द्वारा समझ मिली है।... ये बातें कोई शास्त्रों में नहीं है। बाप कहते हैं - मैं इस तन में प्रवेश कर इन द्वारा ये सब बातें तुमको समझाता हूँ।''

सा.बाबा 6.08.11 रिवा.

"विनाश के लिए बॉम्बस आदि बनाते रहते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। यह ड्रामा का बना-बनाया खेल है। कल्प-कल्प ऐसे ही विनाश होता है। सतयुग में तुमको यह ज्ञान नहीं रहेगा। संगम पर ही बाप को आकर यह ज्ञान देना है। नई दुनिया की स्थापना हो गई, फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहती है। ... योगबल से ही पावन बनना है। पावन बनने के बाद ही तुम सुखधाम-शान्तिधाम जा सकोगे।''

सा.बाबा 20.07.11 रिवा.

"यह सारी भारत की ही कहानी है। सतयुग-त्रेता में भारत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजायें राज्य करते थे, उनके अलग-अलग चित्र भी हैं। ... यह 5 हजार वर्ष की कहानी है। आज से 5 हजार वर्ष पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। 1250 साल तक उनकी डिनॉयस्टी चली, फिर त्रेता में राम-सीता की डिनॉयस्टी चलती है। ... यह स्प्रीचुअल नॉलेज सिवाए स्प्रीचुअल फादर के और कोई के पास है नहीं।''

सा.बाबा 17.09.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - पहले-पहले अपने को आत्मा निश्चय करो, अशरीरी भव। मैं आत्मा हूँ, परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। ... समझना है - मैं आत्मा हूँ, मेरी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। बाप कहते हैं - मेरी आत्मा भी जो एक्ट करती है, वह सब पार्ट उसमें भरा

हुआ है। भक्ति मार्ग में भी मेरा पार्ट चलता है, फिर ज्ञान मार्ग में यहाँ आकर ज्ञान देता हूँ।''

सा.बाबा 13.06.11 रिवा.

"यह बेहद का ड्रामा है, सब एक्टर्स को यहाँ पार्ट बजाने आना ही है। अभी सब आत्मायें यहाँ स्टेज पर आई हुई हैं। जब विनाश का समय होता है तो सब एक्टर्स आ जाते हैं, वहाँ रहकर क्या करेंगे। एक्टर बिगर पार्ट बजाये घर में थोड़ेही बैठ जायेगा, उसको एक्टर कैसे कहा जायेगा। ... बाप कहते हैं - मैं भल यहाँ हूँ, तो भी आत्मायें आती रहती हैं, वृद्धि को पाती रहती हैं।''

सा.बाबा 7.06.11 रिवा.

"अभी तुमको कितना अच्छा ज्ञान मिला है। तुम ही जब प्रॉलब्ध भोगते हो तो यह ज्ञान भूल जाता है। फिर सीढ़ी उतरनी होती है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान बैठा हुआ है। ड्रामा का यह पार्ट कभी भी कोई का बन्द नहीं होता है। यह बना-बनाया ड्रामा है, जो फिरता रहता है। यह कह नहीं सकते कि भगवान ने कब, कैसे, कहाँ बैठ यह ड्रामा बनाया? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती ही रहती है।''

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

"मनुष्य भगवान को बुलाते हैं, परन्तु जानते नहीं हैं। ड्रामा अनुसार ही ऐसा हुआ है। ज्ञान और अज्ञान, दिन और रात का ये खेल है। ... किसकी तकदीर में बाप का वर्सा हो, तब तो बुद्धि में बैठ सके। ... बाप ही रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की रोशनी देते हैं और सब बातें सिद्ध कर बताते हैं। फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 13.04.11 रिवा.

त्रिलोक का ज्ञान

"भक्त पुकारते हैं कि आकर हमको राह बताओ, बच्चे अभी जानते हैं कि हम आत्मायें कहाँ की रहने वाली हैं, फिर बाप को और अपने घर को कैसे भूले।... अभी हम बेहद के बाप द्वारा ये सब बातें समझते हैं कि आदि में हम कहाँ से आये, मध्य में क्या हुआ, जो हम रास्ता भूलकर दुखी हो गये। अभी इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ हमारी बुद्धि में बैठा है।''

सा.बाबा 9.08.11 रिवा.

"यह सृष्टि एक ड्रामा है, इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ मनुष्यों को जरूर जानना चाहिए क्योंकि सब इस ड्रामा के एक्टर्स हैं। ... आत्माओं का निवास स्थान शान्तिधाम है, यहाँ शरीर धारण कर पार्ट बजाने आती हैं। यह दुनिया में कोई नहीं जानता है, ज्ञान सागर बाप ने ही आकर यह समझाया है। ... अभी विनाश का समय है। गाया हुआ है - विनाश काले प्रीतबुद्धि

विजयन्ति, विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति।''

सा.बाबा 9.08.11 रिवा.

"बाप तुमको अपना बनाकर, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी घराना स्थापन कर, बाकी सबका विनाश करा देते हैं। और सब आत्मायें शान्ति में चली जाती हैं, तुम सुख में जाते हो। अभी ही यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। तुम जानते हो - अभी ज्ञान सागर बाप हमको यह ज्ञान दे रहे हैं। बाप है ज्ञान सागर, तुम उनके मददगार बनते हो, इसलिए तुम्हारा नाम है ज्ञान गंगायें।''

सा.बाबा 30.07.11 रिवा.

"बाप जानते हैं - हमने जिन बच्चों को ज्ञान अमृत पिलाये, ज्ञान-चिता पर बिठाये, विश्व का मालिक बनाया था, वे ही काम-चिता पर बैठ भस्मीभूत हो गये। अब फिर मैं ज्ञान-चिता पर बिठाये, घोर नींद से जगाये, स्वर्ग में ले जाता हूँ। ... सभी आत्मायें एक्टर्स हैं, शान्तिधाम में रहते हैं, वहाँ से यहाँ आते हैं पार्ट बजाने के लिए।''

सा.बाबा 19.09.11 रिवा.

"बाप 84 जन्मों का राज़ बता रहे हैं, 84 लाख जन्मों का हिसाब तो कोई बता न सके। आत्मायें ऊपर से यहाँ पार्ट बजाने आती हैं, 84 जन्मों का चक्र लगाती हैं। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक ऊपर से आती रहती हैं, आकर अपना पार्ट बजाते रहतीं हैं।''

सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

"अमर कथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा, तीन कथायें भारत ही मशहूर हैं। तीजरी का अर्थ कोई समझते नहीं हैं। अमरनाथ बाप आकर बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं, जिसका नाम रखा है तीजरी की कथा। उस तीसरे नेत्र से तुम तीनों कालों अर्थात् सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त और तीनों लोकों अर्थात मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जान जाते हो।''

सा.बाबा 16.06.11 रिवा.

"हिसाब-किताब चुक्तू कर आत्मा पवित्र बन जाती है, आत्मा को पंख मिल जाते हैं। क़यामत के समय की महिमा बहुत लिखी हुई है। अन्त में सभी आत्माओं को हिसाब-किताब चुक्तू कर घर वापस जाना है। ... अभी तुम जानते हो हम आत्मायें ब्रह्म में रहने वाली हैं, ब्रह्म में लीन नहीं होते हैं। नाटक के बीच में कोई वहाँ जा नहीं सकता।''

सा.बाबा 7.06.11 रिवा.

"आत्मायें परमधाम से आकर यहाँ शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। खेल सारा यहाँ चलता है, आत्माओं की दुनिया में कोई खेल नहीं चलता है। वहाँ सूर्य-चाँद तारे भी नहीं होते हैं, वहाँ दिन-रात भी नहीं होते हैं। ... यह कर्मक्षेत्र है। यहाँ मनुष्य अच्छे कर्म भी करते हैं तो बुरे कर्म

भी करते हैं। यहाँ ही अपने कर्मों अनुसार हर आत्मा सुख-दुख पाती है।''

सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

"यह बना-बनाया अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो फिरता रहता है। इसकी इण्ड होती नहीं है।... यह सूर्य, चान्द आदि सब इस माण्डवे को रोशनी देने वाले हैं, ये देवता थोड़ेही हैं। वास्तव में ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और ज्ञान लकी सितारे यहाँ की महिमा है।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

कल्प-वृक्ष का ज्ञान अर्थात् विभिन्न धर्म और सभ्यताओं का ज्ञान

"कोई पतित आत्मा तो धर्म स्थापन कर न सके। उनमें पवित्र आत्मा आती है, जो धर्म स्थापन करती है। अनेक प्रकार के धर्म, मठ-पंथ हैं, जो उनके धर्म-स्थापक परकाया प्रवेश कर स्थापन करते हैं। झाड़ में भी यह दिखाया है। ये बातें बड़ी समझने की हैं, जिनकी समझ में नहीं आती है, वे झुटका खाते रहेंगे, उबासी देते रहेंगे। यहाँ तो तुमको खजाना मिलता है, बड़ी भारी कमाई है। तुम रत्नों से अपनी झोली भरते हो।''

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

"अभी सभी आत्मायें पतित बनीं हैं। कोई भी पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। अभी तुम धर्म स्थापन नहीं करते हो। शिवबाबा तुम्हारे द्वारा करते हैं। ... बाप कहते हैं - यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। जब लोप हो जाये, तब फिर मैं आकर सुनाऊं, तब ही तुम भी किसको सुना सकते हो।''

सा.बाबा 8.08.11 रिवा.

"कहते हैं - हे भगवान आकर हमको लिबरेट करो, पतित से पावन बनाओ, परन्तु यह नहीं जानते हैं कि शिवबाबा ही पतित से पावन बनाने वाला है। वही ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। वह आकर नॉलेज देते हैं कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। मुख्य दो चित्र हैं। झाड़ और गोला। ... सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे, फिर वृद्धि को पायेंगे। अभी ही तुम्हारी बुद्धि में यह सब ज्ञान है।''

सा.बाबा 3.08.11 रिवा.

"अभी बाप ने तुमको रचता और रचना की नॉलेज दी है। अभी हम इस मनुष्य सृष्टि के झाड़ को जानते हैं। हमारी बुद्धि में है कि हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। ... बाप पतित-पावन है, सभी आत्माओं को पावन बनाता है, प्रकृति भी पावन बनती है। तुम जानते हो - सतयुग में प्रकृति भी पावन होगी। ... आत्मा योग अग्नि से ही पावन बनेंगी।''

सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

"यह सृष्टि एक उल्टा झाड़ है, इसका बीज है नॉलेजफुल गॉड फादर। बीज में सारे झाड़ की

नॉलेज होगी ना। ... यह वृक्ष कैसे इमर्ज होता है, यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह तुम किसको भी समझा सकते हो। ... जब गोल्डन एज से आइरन एज बन जाता है, तब बाप को गोल्डन एज स्थापन करने आना होता है। प्राचीन भारत सुखधाम था, हेविन था, वहाँ बहुत थोड़े मनुष्य थे, बाकी और सब आत्मायें शान्तिधाम में थी।''

सा.बाबा 17.09.11 रिवा.

"अब सारा झाड़ पुराना जड़जड़ीभूत अवस्था में है। तुम्हारे तमोप्रधान बनने से सब तमोप्रधान बन गये हैं। यह मनुष्य सृष्टि का वैराइटी धर्मों का झाड़ है। इसको उल्टा झाड़ भी कहते हैं क्योंकि इसका बीजरूप परमात्मा ऊपर में रहते हैं। उस बीज से ही सारा झाड़ निकलता है।''

सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं हूँ सर्व आत्माओं का बाप, मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप हूँ, इसलिए नॉलेजफुल हूँ। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की आयु कितनी है, कैसे यह वृद्धि को पाता है, फिर कैसे भक्ति मार्ग शुरू होता है, यह मैं ही जानता हूँ। मैं यह नॉलेज तुम बच्चों को देकर स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। यह नॉलेज तुमको एक ही बार संगम पर मिलती है, फिर यह गुम हो जाती है।''

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"बाप मनुष्य सृष्टि का बीज होने के कारण कहते हैं - मैं इस सारे झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ, इसलिए मुझे नॉलेजफुल कहा जाता है। तुमको भी अभी सारी नॉलेज है कि बीज से झाड़ कैसे निकलता है। झाड़ बढ़ने में टाइम तो लगता है।... अन्त में सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है, तब मैं आता हूँ और नये झाड़ की कलम लगाता हूँ।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

कर्म और फल का ज्ञान

"मैं तो सभी का दुखहर्ता, सुखकर्ता हूँ, माया आकर दुखी करती है। यह भी खेल है। ... बाप किसको दुख नहीं देते हैं। यह तो कर्म और फल का बना हुआ ड्रामा है। जो जैसा कर्म करता है, वैसा फल पाता है। इस समय बाप श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं।... बाप और किसी बात में इन्टरफियर नहीं करते। बाप कहते हैं - बच्चे बाप और वर्से को याद करो, बाप की श्रीमत पर चलो।''

सा.बाबा 1.09.11 रिवा.

"ईमानदार बच्चे झट अपनी अवस्था को बाप को बताते हैं। कोई तो अपनी भूलें छिपाते रहते हैं। इसमें बड़ा निरहंकारीपना चाहिए। सर्विस को बढ़ाने में लग जाना चाहिए। सदा ख्याल रहना चाहिए कि जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे ... अभी तुम देवता बनने के

लिए विकारों पर विजय पा रहे हो। यहाँ देवतायें तो हैं नहीं। देवतायें तो होंगे सतयुग में। तुम अभी दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो।''

सा.बाबा 24.08.11 रिवा.

"शिवबाबा हमको समझाते हैं, हम फिर और सबको समझाते हैं। ... अभी बाबा हमको कर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान देकर विकर्माजीत बनने के लिए समझाते हैं। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, और कहाँ भी तुम्हारी बुद्धि भटकनी नहीं चाहिए। शिवबाबा ने हमको अपना परिचय दिया है। पतित-पावन बाप आकर आपही अपना परिचय देते हैं।''

सा.बाबा 16.07.11 रिवा.

"अभी बाप कर्म-अकर्म-विकर्म का राज़ समझाते हैं और श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाते हैं। यह कर्मक्षेत्र है तो कर्म तो करना ही है। सतयुग में आत्मायें जो कर्म करती हैं, वह अकर्म हो जाता है। (क्योंकि उससे आत्मा का न पाप बनता है और न ही पुण्य बनता है। देवतायें जो कर्म करते हैं, उनसे पुण्य कर्म से जमा किया हुआ खाता कम होता जाता है, इसलिए वहाँ भी कर्म का फल तो होता है, परन्तु सुकर्म-विकर्म न होने से पाप-पुण्य का खाता नहीं बनता)''

सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

"बच्चे अभी फिलॉसॉफर हो गये हैं, स्प्रीचुअल नहीं बने हैं अर्थात् वह स्प्रिट नहीं आई है। जो आत्मिक स्थिति में और आत्मिक खुमारी में रहते हैं, उनको कहा जाता है स्प्रीचुअल। ... स्प्रिट एक सेकेण्ड में क्या से क्या कर दिखा सकती है। ... स्प्रीचुअल में कर्तव्य की सिद्धि आ जाती है। सिद्धि अर्थात् हर संकल्प वा कर्म में सिद्धि स्वरूप। सिद्धि अर्थात् प्राप्ति।''

अ.बापदादा 10.06.72

"स्थिति रिफाइन होगी तो कम समय, कम संकल्प, कम इनर्जी में जो कार्य होगा, वह सौगुणा होगा और हल्कापन भी होगा। हल्केपन की निशानी होगी, वह कब नीचे नहीं आयेगा। न चाहते हुए भी स्वत: ही ऊपर स्थित रहेगा।... इन दोनों विशेषताओं को सामने रखते हुए अपनी रिफाइननेस को चेक कर सकते हो।... अगर रिफाइन नहीं होंगे तो निर्विघ्न नहीं चल सकेंगे।''

अ.बापदादा 12.06.72

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन के गुण-धर्म-विशेषतायें और निश्चय

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए निश्चय का बड़ा महत्व है। परमात्मा ने हमको जो आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-चक्र, त्रिलोक, कल्प-वृक्ष, कर्म-

सिद्धान्त आदि का जो ज्ञान दिया है, उसमें सभी प्रकार के विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन के गुण-धर्म-विशेषतायें समाई हुई हैं, जो इस सत्य को समझ लेता है और निश्चय करता है, वही इस ज्ञान की धारणा कर अपने जीवन में सहज मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता है अर्थात् जीवन की सफलता का अनुभव करता है।

विश्व में सभी आत्मायें किसी न किसी रूप से और किसी न किसी समय परमात्मा को अवश्य याद करती हैं तो जरूर उनसे कुछ विशेष उन सभी आत्माओं को मिलता होगा। वास्तव में परमात्मा ने जो आध्यात्म का ज्ञान दिया है, वह सर्वात्माओं के कल्याणार्थ है, वही सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाला है और सभी आत्मायें एक बार अपने जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अवश्य करती हैं, जिस अनुभव के आधार पर जब दूसरे कल्प में उनको दुख-अशान्ति होती है, तो परमात्मा की याद आती है।

आध्यात्मिक ज्ञान का आधार आध्यात्मिक ज्ञान के मूल स्रोत परमपिता परमात्मा पर निश्चय है। जब परमात्मा पर निश्चय होगा, तब ही वह इस आध्यात्मिक ज्ञान का महत्व समझ सकेगा और उसका उपयोग कर जीवन में उसका लाभ उठा सकेगा। इसके लिए परमात्मा पहले आत्मा को अपना अर्थात् अपनी आत्मा की अनुभूति कराते हैं। जो यथार्थ रीति आत्मा की अनुभूति करता है, वही परमात्मा की अनुभूति भी कर सकता है।

ये सृष्टि जड़-जंगम और चेतन का, सुख-दुख का, हार-जीत का अनादि-अविनाशी खेल है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, जिसका ज्ञान परमपिता परमात्मा ने अभी संगम पर दिया है, जिस ज्ञान को ही आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है। जो आत्मा इस ज्ञान को समझकर, निश्चय करती है, वही इसे धारण कर सकती है, और जो इसकी धारणा करती है, वह इस विश्व-नाटक के विशेष सुख का अनुभव करती है अर्थात जीवन में सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती है, इस सुख को ही अतीन्द्रिय सुख या आनन्द कहा जाता है, जो इस सृष्टि-चक्र में संगमयुग की विशेष प्राप्ति है।

सारे कल्प आत्मायें संगम पर आध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त शक्ति के आधार पर सुख-दुख का पार्ट बजाती हैं और भक्ति मार्ग में आध्यात्मिक ज्ञान के लिए पुरुषार्थ करती हैं, परन्तु सत्य आध्यात्मिक ज्ञान संगम पर ही परमात्मा आकर देते हैं, जिससे यह सृष्टि-चक्र परिवर्तन होता है अर्थात् पुनरावृत्त होता है।

अभी परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे इस सत्य का ज्ञान हुआ है कि हम देह नहीं आत्मा हैं और हर आत्मा में सारे कल्प का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो देश-काल-परिस्थिति के अनुसार स्वत: आत्मा में इमर्ज होता है और आत्मा उसको बजाने के लिए

बाध्य होती है। वैज्ञानिकों में भी उनका पार्ट नूँधा हुआ है, जिसके अनुसार ही उनमें समय पर वह संस्कार जागृत होता है और वे विभिन्न प्रकार के अविष्कार करते हैं। इस सत्य का ज्ञान न किसी वैज्ञानिक ने, न किसी मनोवैज्ञानिक ने, न किसी धार्मिक नेता, न किसी दार्शनिक आदि ने दिया है। यह आध्यात्मिक ज्ञान परमात्मा की ही आत्माओं को विशेष देन है।

हर आत्मा में अपना अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जिसके आधार पर वह समय पर अपना काम करती है, इसलिए किसकी महिमा की बात नहीं है। परमात्मा ने भी कहा है - तुम मेरी क्या महिमा करेंगे, मैं तो अपने समय पर आकर अपना पार्ट बजाता हूँ। बाबा ने कहा है - तुम लक्ष्मी-नारायण की भी क्या महिमा करेंगे, वे तो उतरती कला में आते हैं, उस उतरने का भी उनको ज्ञान नहीं होता है। परन्तु बाबा ने ये भी कहा है - तुम बच्चों को अपने स्वमान में रहकर देश-काल और पद के अनुसार समय पर हर आत्मा को सम्मान देना है। अपने स्वमान में रहकर परमानन्द का अनुभव करना है और सबको सम्मान देना और इस सत्य का अनुभव कराना तुम्हारा परम कर्तव्य है।

परमात्मा के द्वारा दिया हुआ सत्य आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा को राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आदि से पैदा होने वाले सर्व प्रकार के व्यर्थ चिन्तन से मुक्त कर सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव कराता है, जबकि विज्ञान और मनोविज्ञान वालों में देहाभिमान बढ़ता जाता है, जिससे उनमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आदि के वशीभूत व्यर्थ चिन्तन बढ़ता जाता है और चिन्ता की चिता पर बैठकर विकर्मों में प्रवृत्त होकर दिनोदिन अधिक दुख-अशान्ति का अनुभव करते हैं।

परमात्मा के द्वारा दिये गये आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म के ज्ञान को धारण करने से आत्मा भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होकर परमानन्द को अनुभव करती है, जो हर आत्मा के जीवन का परम लक्ष्य है।

परमात्मा के द्वारा दिये गये सत्य आध्यात्मिक ज्ञान को देखें तो यह विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी खेल है। कोई भी आत्मा बिना खेल खेले अर्थात् कर्म किये इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है। इसमें भूतकाल हमारे हाथों से निकल गया है, इसलिए उसका चिन्तन करना व्यर्थ है। भविष्य हमारे वर्तमान पर आधारित है, इसलिए उसकी चिन्ता में समय न गँवाकर वर्तमान में जीने वाला अर्थात् वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करने वाले का भविष्य अवश्य ही सुखमय होता है। इसलिए वर्तमान में अपने अनादि-अविनाशी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द को अनुभव करें तो और सब कार्य स्वत: ही सम्पन्न होते रहेंगे।

सारांश यह है कि जब आत्मा को ज्ञान सागर परमात्मा से आध्यात्मिक ज्ञान मिलता

है, आत्मा परमात्मा के सानिध्य में आती है, उनकी दृष्टि आत्मा पर पड़ती है तो आत्मा अपने मूल स्वरूप का सहज अनुभव करती है और आत्मा का मूल स्वरूप परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न है, इसलिए उसमें स्थित होने आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होती है, जिससे आत्मा को अपने में और परमात्मा में निश्चय बैठ जाता है और जब परमात्मा में निश्चय बैठ जाता है तो परमात्मा के द्वारा जो भी ज्ञान मिलता है, उसमें निश्चय होता जाता है और निश्चय से आत्मा जीवन में सहज सफलता का अनुभव करती है अर्थात् इस विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव करती है।

"विकारों के कारण ही तुम पतित बनें, दुखी हुए हो। मुख्य है देहाभिमान। ... तुम जानते हो जब तक हम कर्मातीत अवस्था को पायें, तब तक हम संगम पर खड़े हैं। एक तरफ हैं करोड़ो मनुष्य, दूसरे तरफ तुम कितने थोड़े हो। तुम्हारे में भी जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं, वे विजयमाला में आयेंगे, विष्णु के गले की माला बनेंगे। माला 8 की भी है, 108 की भी है और 16108 की भी है।''

सा.बाबा 10.08.11 रिवा.

"जो सतोप्रधान थे, वे फिर 84 जन्म लेते सतो, रजो, तमो बनें हैं। तुमको यह तो पक्का निश्चय है कि बरोबर हम देवी-देवतायें ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। हमको ही पहले बाप से मिलना चाहिए। गाया भी जाता है - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल... अभी तुम ही पहले आकर मिले हो। अभी बाप तुमको सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं।''

सा.बाबा 10.08.11 रिवा.

"अभी यह है कलियुग और सतयुग का संगम। महाभारी महाभारत लड़ाई भी सामने खड़ी है। तुमको निश्चय है कि अभी सतयुग की स्थापना हो रही है, फिर कलियुग का विनाश भी होगा। सभी आत्माओं के शरीर खलास हो जायेंगे, बाकी आत्मायें हिसाब-किताब चुक्तू कर पवित्र बन घर चली जायेंगी। यह सबके क़यामत का समय है।''

सा.बाबा 10.08.11 रिवा.

"शिव जयन्ति भारत में मनाते हैं तो जरूर भारत को कुछ दिया होगा। अभी बाप तुमको स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं। बाप है सर्व का सद्गति दाता, ज्ञान का सागर। बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। अभी तुमको बाप नॉलेज दे रहे हैं। बाप 5 हजार वर्ष बाद फिर यहाँ ही आयेंगे। बच्चों को निश्चय है कि जो-जो इस ब्राह्मण कुल के होंगे, वे सब आते जायेंगे।''

सा.बाबा 31.08.11 रिवा.

"इसमें कमाई की कमाई भी है और तन्दुरुस्ती की तन्दुरुस्ती भी है। इस ज्ञान-योग से जीवन अमर बन जाता है, वहाँ कब कोई की अकाले मृत्यु नहीं होती है। तो तुम बच्चों को कितनी

खुशी होनी चाहिए। ... तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। अभी हम बेहद के बाप से 21 जन्मों की कमाई करते हैं, बाप से सदा सुख का वर्सा ले रहे हैं। स्वर्गवासी बनना तुम्हारी ही तकदीर में है।''
सा.बाबा 19.08.11 रिवा.

"अभी तुमको बाप द्वारा सारा ज्ञान मिला है। ज्ञान की प्रालब्ध पूरी होती है, फिर भक्ति शुरू होती है। यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है।...अभी बाप द्वारा स्वराज्य का फाउण्डेशन पड़ रहा है। आत्मा को बाप से 21 जन्मों के लिए स्वराज्य मिलता है। ... आत्मा को कितनी खुशी होनी चाहिए। निश्चय है तो खुशी होती है। निश्चय नहीं है तो वह स्वर्ग में चलने के लायक नहीं है।''
सा.बाबा 29.07.11 रिवा.

"मैं आता हूँ, तुम बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाने। कोई और यह समझा न सके। अगर किसको निश्चय नहीं है तो सारी दुनिया में भटकना चाहिए और ढूँढना चाहिए कि कोई और है, जो इस सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दे सके। ... परमपिता परमात्मा के बिगर कोई राजयोग सिखला न सके, पतितों को पावन बना नहीं सकते।''
सा.बाबा 23.05.11 रिवा.

"पहले-पहले यह निश्चय करना है कि हम आत्मा हैं, हमारा स्वधर्म शान्त है, हम आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं, उसको निर्वाणधाम भी कहा जाता है। आत्मा बिन्दी में सारा अविनाशी पार्ट भरा हुआ है।... तुमको यह भी निश्चय है कि भगवानुवाच संगम पर ही होता है, फिर कब होता नहीं है।... भक्त भगवान से मिलने के लिए कितनी मेहनत करते हैं। अब भक्तों को भगवान से मिलने जाना है या भगवान को यहाँ आना पड़ेगा ? पतित आत्मा तो वहाँ जा न सके।''
सा.बाबा 4.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि सबका उद्देश्य सृष्टि के विषय में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना और उसको सबके सामने रखना और विश्व को अच्छे से अच्छा बनाना ही है परन्तु विधि के विधान और विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा दिये गये यथार्थ सत्य ज्ञान के अतिरिक्त कोई भी ज्ञान या व्यक्ति न विश्व को और न आत्माओं को अच्छा बनाने में सफल हुआ है, इसलिए विश्व और आत्मायें निरन्तर पतन की ओर ही अग्रसर रहे हैं। अभी जब ज्ञान सागर

परमात्मा ने सत्य आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, तब ही आत्मायें विश्व और आत्माओं का कल्याण अनुभव कर रही हैं।

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान वाला इस विश्व-नाटक को खेल की तरह देखता है और साक्षी होकर इसका परमानन्द अनुभव करता है। अन्य सभी ज्ञान वाले भी इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं परन्तु वे इसकी यथार्थता को न जानने के कारण अल्पकाल के लिए ही सुख का अनुभव करते हैं क्योंकि वे यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में देहाभिमान में होते हैं।

"तुम जब सतयुग में रहते हो तो समझते हो कि हम यह शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। वहाँ उनको यह पता नहीं रहता है कि सतयुग के बाद त्रेता, द्वापर आयेगा, हम नीचे उतरते जायेंगे। ये ज्ञान की बातें उनकी बुद्धि में रहती नहीं हैं। वे भी सीढ़ी उतरते जाते हैं, देही-अभिमानी से देहाभिमानी बन जाते हैं। यह सृष्टि-चक्र की नॉलेज तुम ब्राह्मणों के पास ही है।''

सा.बाबा 9.05.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

आध्यात्मिक ज्ञान का दाता ज्ञान सागर परमात्मा है, विज्ञान का जनक वैज्ञानिक हैं, जो एक मनुष्य हैं अर्थात् आत्मायें हैं और सभी मनुष्य जो इस धरा पर पार्ट बजाने आते हैं, वे सब उतरती कला में होते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान से आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है, विश्व का नव-निर्माण होता है। विज्ञान से मानव हित के कुछ साधन तो मिलते हैं, फिरभी उन वैज्ञानिकों और साधनों का प्रयोग करने वालों की आत्मिक शक्ति की और समग्र विश्व की उतरती कला होती है और अन्त में उनसे ही पुरानी दुनिया का विनाश होता है।

आध्यात्मिक ज्ञान और योग से आत्मायें पावन बनती हैं और विश्व को पावन बनाती हैं। विज्ञान के होते भी विश्व उतरती कला में जाता है अर्थात् पतन होता है। भले विज्ञान नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी होता है, परन्तु विज्ञान नये विश्व का निर्माण नहीं कर सकता है। नये विश्व का निर्माण तो आत्माओं के पावन होने से होता है, जिसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है, जो आध्यात्म के अनादि-पिता परमात्मा ही देते हैं, जिससे आत्मायें पावन बनती हैं और जड़-जंगम प्रकृति भी पावन बनती है। जब आत्मायें पावन बन जाती हो तो उनके लिए दुनिया भी नई चाहिए और जब नई दुनिया आयेगी तो पुरानी का विनाश भी जरूर होगा।

आध्यात्म के आधार परमात्मा ने तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान दिया है, सृष्टि-

चक्र का ज्ञान दिया है और सृष्टि-चक्र की नव-रचना अर्थात् कलम लगने का भी ज्ञान दिया है। विज्ञान ने इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है, वे तो इसके विषय में खोज ही कर रहे हैं। भले विज्ञान ने अनेक प्रकार के सुख-साधनों की खोज की है, उनका निर्माण किया है परन्तु उन सबके होते भी आत्माओं को सुख-शान्ति कितनी मिल रही है, वह विचारणीय विषय है। अमेरिका-रशिया जैसे विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी देश भी भय और चिन्ता में जी रहे हैं और एक-दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से आत्माओं में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता का नाश होता है और आत्मा में नम्रता, दया, रहम, दूसरों के कल्याण की भावना जागृत होती है और उस अनुसार कर्तव्य होते हैं। विज्ञान से अहंकार आता है, देहाभिमान बढ़ता है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है और आत्मा तमोप्रधान बढ़ती है, जिससे आत्मा में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता बढ़ती है, जिससे आत्मा में दूसरी आत्माओं के अहित की भावना जागृत होती है और दूसरों के अहित के कर्तव्य होते हैं।

आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर विश्व का नव-निर्माण होता है, जिस शक्ति के आधार पर विज्ञान के द्वारा अविष्कारित कुछ साधन-सामग्री भी नये विश्व के नव-निर्माण में काम आती है।

यह सारा खेल आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का बना हुआ है। आत्मा इसका मूल है। आध्यात्म अर्थात् आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर और आत्मा के लिए ही सारी जड़-जंगम प्रकृति अर्थात् सारा सौर मण्डल काम करता है, जिसमें वैज्ञानिक और उनके द्वारा निर्मित विज्ञान भी आ जाता है।

सतयुग-त्रेता में आज के वैज्ञानिक साधनों में बहुत कम होते हैं परन्तु आत्मायें पूर्ण सुख-शान्ति में होती है, प्रकृति सुखदायी होती है। आज अनेकानेक वैज्ञानिक साधन होते भी प्रकृति तमोप्रधान होती जाती है, जिससे दुख-अशान्ति बढ़ती जाती है, विश्व में ग्लोबल वार्मिग, प्रदूषण आदि की समस्यायें पैदा हो रही हैं, जिसके लिए विज्ञान जितना उपाय करता है, समस्यायें उससे आगे बढ़ती जा रही हैं। जिसके लिए आध्यात्म के आधार परमात्मा ने कहा है - नर चाहत कछु और, है और भई की और अर्थात् होना कुछ और ही है, जो वैज्ञानिकों को भी पता नहीं है।

आध्यात्म के आधार परमात्मा ने कर्म और फल का ज्ञान दिया है, जो इस सृष्टि-चक्र और विश्व-नाटक का मूलाधार है। विज्ञान ने इस सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं दिया है, इसलिए

वैज्ञानिक उन्नति होते भी आत्माओं के कर्म गिरते जा रहे हैं, जिससे फलस्वरूप दुख-अशान्ति, भय-चिन्तायें, समस्यायें बढ़ती जा रही हैं।

आध्यात्म के आधार परमात्मा ने आत्मिक शक्ति के विकास का जो मार्ग दिखाया है, उसके आधार पर कर्म करके आत्मायें सुख-शान्ति को पा रही हैं और आगे बढ़ती जा रही हैं, जबकि विज्ञान की उन्नति के साथ आत्माओं की आत्मिक शक्ति का ह्रास हो रहा है, उनके कर्म गिरते जा रहे हैं, फल स्वरूप विश्व में दुख-अशानति बढ़ती जा रही है, जिसका अनुभव स्वयं वैज्ञानिक भी कर रहे हैं।

विज्ञान ने जो अविष्कार किये हैं, जिनसे वर्तमान में आत्माओं को अनेक प्रकार की सुविधायें प्राप्त हुई हैं, जिनका आत्मायें सुख अनुभव अवश्य कर रही हैं परन्तु वहीं उनके अनेक प्रकार दुष्परिणाम भी हैं, जिनका भोग भी आत्माओं को भोगना पड़ रहा है और पड़ेगा। विज्ञान के आधार पर जो अविष्कार हुए हैं, उनके उपयोग के लिए जो साधन बनाये जा रहे हैं, उस प्रक्रिया में ग्रीन गैसों का उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिग, ओजोन पर्त का खराब होना आदि-आदि बातें हुई हैं, जो आत्माओं के लिए दुखदायी भी सिद्ध हो रही हैं।

मेडिकल साइन्स के क्षेत्र में विज्ञान ने अनेक साधन-सुविधायें उपलब्ध कराई हैं, जिनसे अनेक असाध्य रोगों का उपचार सम्भव है, परन्तु उस विज्ञान के द्वारा किये गये कार्यों से अनेक प्रकार के असाध्य रोगों का जन्म भी हुआ है और अस्पतालों में देखें तो उन रोगों से पीड़ितों की भीड़ लगी हुई है। विज्ञान ने गर्भ-निरोधक साधन दिये हैं, जिनके फलस्वरूप समाज में अनैतिकता और व्यभिचार को बढ़ावा मिला है।

बाबा ने भी कहा है - वैज्ञानिक बच्चों ने जो साधन बनाये हैं, वे बाबा की सेवा में उपयोग होकर, बाप का सन्देश आत्माओं को देने में, बाबा के बच्चों को बाबा की मुरली सुनने आदि में उपयोग हो रहे हैं, ये भी उनका भाग्य है। अनेक प्रकार के साधन सतयुग में भी काम आयेंगे। इन सब साधनों में विज्ञान की सबसे बड़ी सौर ऊर्जा का अविष्कार सिद्ध होगा, जो अभी भी काम आयेगा और सतयुग में भी काम आने वाला है।

विज्ञान का निर्माता आध्यात्म अर्थात् आत्मा है और विज्ञान के द्वारा अविष्कारित और बनाये गये साधन आत्मा के लिए ही हैं। विज्ञान के साधनों को आत्मा ने बनाया है, परन्तु आत्मा को विज्ञान ने नहीं बनाया है और न ही आत्मा विज्ञान के लिए है अर्थात् विज्ञान जैसे चाहे वैसे आत्मा को नहीं चला सकता है। आत्मा जैसे चाहे विज्ञान के साधनों का उपयोग करे या न करे, वह उसके ऊपर है। आत्मा विज्ञान के साधनों का सदुपयोग करे या दुरुपयोग करे, उसके लिए आत्मा स्वतन्त्र है। विज्ञान अर्थात् विज्ञान के साधन स्वतन्त्र नहीं हैं, उनको बनाने

वाला और उपयोग करने वाला आध्यात्म अर्थात् आत्मा है।

विज्ञान ने अनेक प्रकार के साधनों का अविष्कार करके आत्मा को अनेक प्रकार की मेहनत से बचा दिया है, परन्तु आत्मा को यथार्थ रीति सुख-शान्ति देने में समर्थ नहीं है क्योंकि इन सबके होते भी आत्मा में तमोप्रधानता बढ़ती जाती है, उसके कर्म-संस्कार गिरते जा रहे हैं, जिससे आत्मा दुख-अशान्ति की ओर बढ़ती जा रही है। दुख-अशान्ति से छूटने का रास्ता आध्यात्मिक ज्ञान के मूल स्त्रोत परमात्मा ने ही बताया है और जो आत्मायें उस पर यथार्थ रीति चल रही हैं, वे सुख-शान्ति का अनुभव कर रही हैं और अन्य आत्माओं के लिए भी सुख-शान्ति का पुरुषार्थ कर रही हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से आत्मा में नम्रता आती है, आत्मा से देहाभिमान मिटता है, जिससे आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता से मुक्त होकर सुख-शान्ति-आनन्द का अनुभव करती है। विज्ञान के अविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक साधनों का निर्माण करने वालों में जाने-अन्जाने देहाभिमान निश्चित रूप से बढ़ता जाता है, जिसके कारण उनमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता बढ़ती है, जिससे उनके कर्म विकर्म बनते हैं और वे स्वयं भी उनका फल दुख-अशान्ति के रूप में अवश्य पाते हैं, जिसके कारण उनको आध्यात्म की शरण में आना ही होता है। ये प्रक्रिया उसी जन्म में कर्म करे या कई जन्मों के बाद अपना काम करे परन्तु करती अवश्य है, जिससे उनको परमात्मा की याद आती है और परमात्मा उनको मदद करता है।

भले ही विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान ने अनेकानेक अविष्कार किये हैं और विश्व को अनेकानेक ऐसे साधन दिये हैं, जिससे समयानुसार उनकी जगत को आवश्यकता थी और उससे विश्व को राहत महसूस हो रही है परन्तु उनसे विश्व का कल्याण अनुभव होते नज़र नहीं आता है और विश्व में तमोप्रधान बढ़ती जा रही है, विश्व विनाश की ओर अग्रसर है।

इस प्रकार हम देखें तो विज्ञान ने अविष्कार करके आत्माओं को अनेक साधन तो दिये हैं, परन्तु उनका उपयोग अध्यात्म अर्थात् आत्माओं के ऊपर निर्भर करता है अर्थात् जैसे उनका प्रयोग करेंगे, उस अनुसार फल पायेंगे। उन साधनों के सदुपयोग से आत्मायें सुख भी पा रही हैं तो दुरुपयोग के द्वारा वे दुख का कारण भी बन रहे हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान और मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

आध्यात्मिक ज्ञान का दाता ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा है। मनोविज्ञान के दाता या अविष्कारक मनुष्य हैं। मनुष्य अल्पज्ञ हैं और परमात्मा सर्वज्ञ है, इसलिए परमात्मा के द्वारा दिया गया ज्ञान सम्पूर्ण है, मनुष्य के द्वारा दिया गया ज्ञान अपूर्ण है। इसलिए आध्यात्मिक ज्ञान से विश्व की चढ़ती कला होती है, विश्व का नव-निर्माण होता है। दुनिया में मनोविज्ञान होते भी दुनियावी मनोवैज्ञानिकों की उतरती कला होती है और उसके होते भी विश्व की उतरती कला ही होती है।

परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उसमें मनोविज्ञान समाया हुआ है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे ही पता पड़ा है कि मन आत्मा की एक शक्ति है, इसलिए परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की धारणा से आत्मा की मन्सा शक्ति का विकास होता है, आत्माओं के कर्मों में श्रेष्ठता आती है, जिससे आत्मा को सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति होती है और उसके परिणाम स्वरूप विश्व का नव-निर्माण होता है। मनोवैज्ञानिक जो मनोविज्ञान का ज्ञान देते हैं, उसमें यह आध्यात्मिक ज्ञान समाया हुआ नहीं है, वह सम्पूर्ण नहीं है, इसलिए उससे आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला नहीं होती है अर्थात् विश्व का कल्याण नहीं होता है। मनोविज्ञान ने जो भी विधि-विधान बताये हैं, उनसे अल्पकाल के लिए मन्सा शक्ति का विकास तो अनुभव होता है परन्तु वह विकास नहीं है, केवल आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति मन्द हो जाती है, इसलिए परिणाम में पतन ही होता है क्योंकि उस सबके होते भी आत्मा में देहाभिमान बढ़ता जाता है, जिससे आत्मा की विकर्मों में प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और आत्मा विभिन्न प्रकार के विकर्म करके दुख-अशान्ति को पाती है।

मन क्या चीज है, उसका यथार्थ ज्ञान आज तक किसी मनोवैज्ञानिक ने नहीं दिया है। मनोवैज्ञानिक तो मन की स्वतन्त्र सत्ता मानते हैं परन्तु मन शरीर में कहाँ रहता है, उसका कोई विवेकसंगत, तर्कयुक्त ज्ञान नहीं दिया है। परन्तु परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उसमें मन का यथार्थ ज्ञान दिया है कि मन आत्मा की एक शक्ति है। आत्मा से अलग मन का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। दुनिया में मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा के विषय में कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है, परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान के दाता परमात्मा ने आत्मा और मन के विषय में सारा ज्ञान दिया है और दोनों में क्या सम्बन्ध है, वह भी बताया है तथा उसका हमारे जीवन में क्या महत्व है, उसके सम्बन्ध में भी बताया है। हमारी मन्सा शक्ति का कैसे विकास हो, उसके लिए भी ज्ञान सागर परमात्मा ने ज्ञान दिया है।

आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, कर्मों में श्रेष्ठता आती है, फलस्वरूप जीवन में सुख-शानति की अनुभूति होती है। परन्तु मनोविज्ञान से आत्मिक शक्ति का कोई विकास नहीं होता है, केवल आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति मन्द होती है, इसलिए अल्पकाल के लिए सुख-शान्ति की अनुभूति होती है। वास्तविकता को देखें तो मनोविज्ञान के प्रखर विद्वान भी इसके विपरीत दिशा में ही जा रहे हैं अर्थात् उनकी आत्मिक शक्ति क्षीण होती जाती है और वे भी पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन जाते हैं, जिसका ज्ञान भी ज्ञान सागर परमात्मा ने दिया है।

मनोविज्ञान के प्रखर विद्वानों ने विश्व के उत्थान का कोई कारगर उपाय नहीं बताया है, इसलिए विश्व का उत्थान न होकर निरन्तर पतन ही होता गया है। उत्थान का रास्ता तो आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर ही होता है, जो परमात्मा ने ही बताया है, जिससे उत्थान हो भी रहा है और होना भी है।

आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, मन उसकी एक कार्य शक्ति है। वैसे ही आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान है और मनोविज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान का एक अंश मात्र है। परमात्मा जो अध्यात्मिक ज्ञान देता है, जिसमें मनोविज्ञान समाया हुआ है। दुनिया में जो मनोविज्ञान पढ़ते हैं, उसका अध्यात्मिक ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है अर्थात् उनको आत्मा के विषय में न ज्ञान है और न उसको जानने की उनमें कोई जिज्ञासा है, इसलिए उसके अध्ययन से किसी भी आत्मा का कोई कल्याण नहीं होता है अर्थात् किसी भी आत्मा की चढ़ती कला न हुई है और न ही हो सकती है। वास्तव में वह मनोविज्ञान भी नहीं है क्योंकि जिसमें भी मन का ही यथार्थ ज्ञान नहीं है तो वह मनोविज्ञान कैसे कहा जायेगा। इसलिए वह मनोविज्ञान भी आत्मा और विश्व की उतरती कला का ही निमित्त बनता है अर्थात् उसके होते भी आत्मा में देहाभिमान बढ़ता जाताहै।

आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

धार्मिक ज्ञान धर्म-पितायें अपने धर्म की स्थापना अर्थात् कल्प-वृक्ष से अपने धर्म की शाखा-प्रशाखा के स्थापना और विस्तार के लिए देते हैं। इसके लिए धार्मिक ज्ञान में प्राय: कुछ दैवी-गुणों या कहें मानवीय-गुणों का ज्ञान होता है। उसमें यथार्थ दैवी गुणों का ज्ञान नहीं होता, उनका कुछ अंश-मात्र होता है, जिसके आधार पर उस धर्म-विशेष की स्थापना होती है। जैसे बुद्ध ने सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया, क्राइस्ट ने सहनशीलता का पाठ पढ़ाया, ऐसे ही अन्य धर्म स्थापकों ने किसी गुण विशेष के आधार पर अपने धर्म की स्थापना की और उसके

विस्तार का रास्ता बताया। परन्तु परमात्मा आकर सत्य ज्ञान देकर इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाते हैं और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं, इसलिए वे इस कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त और रचना अर्थात् इसकी कलम लगाने के लिए ज्ञान देते हैं, जिससे इस कल्प-वृक्ष का नव-निर्माण होता है और सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होता है।

धर्म-पितायें धार्मिक ज्ञान देकर इस कल्प रूपी भवन की मरम्मत का काम करते हैं, परन्तु परमात्मा आकर पुराने भवन से नये भवन का नव-निर्माण करते हैं, इसलिए वे नव-निर्माण के लिए ज्ञान देते हैं, इसलिए उनको सृष्टि का रचता कहा जाता है। धर्म पिताओं को पैग़म्बर-मैसेन्जर कहा जाता है। परन्तु वे पैग़म्बर या मैसेन्जर भी नहीं है क्योंकि वे कोई पैग़ाम या मैसेज नहीं देते हैं, वे केवल अपने धर्म विशेष की स्थापना करते हैं और पुनर्जन्म लेकर उसकी पालना करते हैं, जिसका ज्ञान भी अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने ही दिया है।

धर्मपितायें आकर अपने धर्म की स्थापना करते हैं और उनकी राजाई बाद में स्थापन होती है, जब उसका विस्तार हो जाता है परन्तु परमात्मा राजयोग सिखाते हैं, जिसके संस्कार लेकर आत्मायें परमधाम जाती हैं और आते ही राजाई करती हैं अर्थात् परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान से राजाई की स्थापन होती है अर्थात् कल्प के आदि से ही दैवी राजाई स्थापन होती है। उन राजाई के संस्कारों के लिए परमात्मा पहले राजयोग के द्वारा अपनी कर्मेन्द्रियों पर राज्य करना सिखाते हैं।

धार्मिक ज्ञान से किसका कल्याण नहीं होता है, केवल जो विश्व का पतन होता है, उसकी कुछ समय के लिए गति मन्द हो जाती है। धर्म-विशेष की स्थापना के लिए कुछ आत्मायें आदि सनातन धर्म की जो उस समय वाम मार्ग में होती हैं, उनमें से परिवर्तित होकर उनके फॉलोअर्स बनते हैं और उनमें उस धर्म विशेष की आत्मायें आकर जन्म लेती है, जबकि परमात्मा आकर जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उससे सर्व आत्माओं का कल्याण होता है और जड़-जंगम प्रकृति भी पावन बनती है अर्थात् अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। परमात्मा के द्वारा दिये गये सत्य आध्यात्मिक ज्ञान को पाकर जो अन्य धर्मों में परिवर्तित हो गई होती हैं, वे वापस अपने मूल धर्म में आ जाती हैं।

परमात्मा के द्वारा दिये गये आध्यात्मिक ज्ञान की सम्पन्नता के बाद पुरानी दुनिया का विनाश होता है और नई दुनिया की आदि होती है, जब कि धर्म-पिताओं के द्वारा दिये गये धार्मिक ज्ञान के बाद पुरानी दुनिया और पुरानी होती जाती है अर्थात् उस समय न पुरानी दुनिया का विनाश होता है और न दुनिया नई बनती है बल्कि पुरानी और पुरानी होती जाती है।

"पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा जरूर लेना है और स्वदर्शन चक्रधारी भी बनना है। तुम्हारी ये

मिशन है मनुष्य को देवता, नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने की। ... ये हैं अविनाशी ज्ञान रत्न। मनुष्य तो इनको पत्थर समझ फेंक देते हैं, कुछ भी समझते नहीं हैं। हाँ, जो इस धर्म वाले होंगे, उनको ही टच होगा, वे ही इस ज्ञान को समझेंगे और धारण करेंगे।''

सा.बाबा 27.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

आध्यात्मिक ज्ञान ज्ञान सागर परमात्मा देते हैं, जिससे आत्माओं और विश्व का कल्याण होता है। दर्शनों का ज्ञान मनुष्य देते हैं, जिससे आत्माओं और विश्व का कल्याण तो नहीं होता है परन्तु उसके द्वारा आत्मायें अपने जीवन में कुछ राहत अवश्य अनुभव करती हैं, जिससे उनके कर्मों में कुछ सुधार होता है और आत्मिक शक्ति के पतन की गति मन्द होती है। दुनिया के किसी भी दर्शन में या किसी भी दार्शनिक ने यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं दिया है अर्थात् यथार्थ रीति आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के विषय में ज्ञान नहीं दिया है। परमात्मा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उसमें सर्व दर्शनों का सार समाया हुआ होता है, इसलिए परमात्मा कहते हैं - मैं आकर सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनाता हूँ।

"शास्त्र, बाइबिल आदि पढ़ने से कोई राजाई नहीं मिलती है। दुनिया में मनुष्यों की वृद्धि होती जाती है, झाड़ पुराना जरूर होगा। वृद्धि को पाते-पाते पुराना हो जायेगा। ... सतयुग में तुम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्मी-नारायण बनते हो, फिर कलायें कम होती जाती हैं। नया झाड़ तब कहा जाता है, जब नई स्थापना होती है। तुम पहले-पहले सतयुग में आयेंगे तो नई राजधानी होगी, फिर कला कम होती जायेगी।''

सा.बाबा 17.08.11 रिवा.

"भगवान ने आकर ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाया है। इसलिए ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाये हैं। ... जिनके द्वारा समझाते हैं, देवी-देवता धर्म की स्थापना कराते हैं, वे ही फिर पालना करेंगे। तुम हो ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ। ब्राह्मण वर्ण है ऊंच ते ऊंच। अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम ईश्वर द्वारा रचे हुए यज्ञ की सम्भाल करते हो।''

सा.बाबा 5.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और सृष्टि-चक्र

यह सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का खेल है, जो चक्रवत चलता है अर्थात् कल्प-कल्प हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इस सृष्टि-चक्र में समय-समय पर हर आत्मा और हर बात का महत्व है। आत्माओं के भिन्न-भिन्न पार्ट है, जिसके आधार पर उन आत्माओं का महत्व है और इस विश्व-नाटक में उनके पार्ट की महत्ता है। इस सत्य का यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने दिया है, जिससे हमको इस सृष्टि की हर आत्मा और हर दृश्य का पता चल गया है और हमारा दृष्टिकोण सर्वात्माओं के प्रति बदल गया है अर्थात् पहले किसी के पार्ट या घटना को देखकर जो व्यर्थ संकल्प चलते थे, वे इस सत्य को जानने के बाद बन्द हो गये हैं और सर्व आत्माओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण पॉजेटिव अर्थात् कल्याण का हो गया है।

जैसे समय-समय पर समय और स्थान के अनुसार विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का महत्व होता है, वैसे ही इस सृष्टि-चक्र के आमूल परिवर्तन अर्थात् नव-निर्माण के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का महत्व है और वह आध्यात्मिक ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा ही कल्पान्त में आकर देते हैं, जिससे इस सृष्टि-चक्र का नया चक्र आरम्भ होता है। इस सृष्टि-चक्र में वर्तमान समय पुराने चक्र के अन्त और नये चक्र के आदि का संगम है, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है क्योंकि अभी आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति की चढ़ती कला होती है अर्थात् जड-जंगम और चेतन आत्मायें अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान स्थिति को प्राप्त करती हैं, जिससे विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना होती है।

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और गीता ज्ञान

जैसे और धर्मों के धर्म-शास्त्र हैं, वैसे ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म का धर्म-शास्त्र गीता है, परन्तु ऐसे नहीं कहा जा सकता है कि वर्तमान प्रचलित गीता में वर्णित ज्ञान से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हुई। वास्तविकता को देखा जाये तो हर धर्म-शास्त्र बाद में ही बनता है अर्थात् जब कोई धर्म-पिता ज्ञान देता है, तब उसको कोई लिखता नहीं है। धर्म-शास्त्र तो उनके फॉलोअर्स बाद में लिखते हैं, जो वे अपनी स्मृति के आधार पर लिखते हैं। ऐसे ही कल्पान्त में ज्ञान सागर परमात्मा ने गीता-ज्ञान देकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना की, राजयोग सिखाकर विश्व में राजाई की स्थापना की, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-

अन्त का ज्ञान देकर इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाई, उस ज्ञान की सतयुग-त्रेता दो युगों तक कोई आवश्यकता नहीं रही, इसलिए किसने भी गीता ज्ञान के विषय सोचा भी नहीं और न गीता के भगवान को ही याद किया। त्रेतायुग के बाद द्वापर में जब देवतायें वाम मार्ग में गये और देहाभिमान के वश विकारों प्रवृत्त हुए, तो विकर्म आरम्भ हुए, जिनके फलस्वरूप आत्माओं को दुख-अशान्ति हुई तो भगवान को याद किया और जिन आत्माओं ने कल्पान्त में परमात्मा से सम्मुख ज्ञान सुना था, उसकी संचित स्मृति के आधार पर गीता लिखी। इसलिए उसमें यथार्थ ज्ञान तो नहीं है परन्तु परमात्मा के द्वारा सुनाये गये ज्ञान का अंशमात्र अवश्य है अर्थात् कुछ ही सत्य है। इसलिए उस गीता को पढ़ने-सुनने से आत्माओं की या विश्व की चढ़ती कला नहीं हो सकती है, आत्माओं का कल्याण नहीं हो सकता है। आत्माओं का कल्याण तो परमात्मा जो गीता ज्ञान देते हैं, उससे ही सम्भव है। इसलिए बाबा ने कहा है, उस गीता में ही सत्य ज्ञान की कुछ-कुछ बातें सत्य हैं, जो आटे में नमक के समान है। सत्य गीता ज्ञान तो परमात्मा ही संगमयुग पर देते हैं।

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है, वह भी परमात्मा ही आकर बताते हैं। आत्मा, परमात्मा, और सृष्टि-चक्र के तीनों कालों और तीनों लोकों को जानना, कर्मों की गहन गति को जानना ही यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान है, जो ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर देते हैं, जिस ज्ञान को धारण करने और परमात्मा को याद करने से ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है अर्थात् आत्मायें और विश्व सतोप्रधान बनता है और सृष्टि-चक्र का नया चक्र आरम्भ होता है। "सर्व की सद्गति करने की बाप की श्रीमत सबसे न्यारी है। बाप सबको साथ ले जाते हैं, किसको छोड़कर नहीं जाते हैं। निराकारी, आकारी, साकारी लोक को भी जानना चाहिए। सिर्फ सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना भी कम्पलीट नॉलेज नहीं है। पहले तो मूलवतन को जानना पड़े, जहाँ हम आत्मायें रहती हैं। इस सारे सृष्टि-चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो।''

सा.बाबा 10.03.11 रिवा.

"गीता में है भगवानुवाच, तो कभी तो भगवान आया होगा, तब तो गीता ज्ञान सुनाया होगा ना। फिर जब आये तब गीता ज्ञान सुनाये। वे लोग तो गीता पुस्तक पढ़कर सुनाते हैं, यहाँ तो भगवान, जो ज्ञान का सागर है, वह स्वयं सुनाते हैं। इनको तो कुछ हाथ में लेकर पढ़ना नहीं है। इनको किसी से कुछ सीखना भी नहीं है।... बाप तो आकर गीता ज्ञान देकर राजयोग सिखलाते हैं।''

सा.बाबा 23.09.11 रिवा.

"कोई को भी तुम समझा सकते हो कि यह गीता पाठशाला है, यहाँ मनुष्य को देवता बनाने के लिए निराकार परमपिता परमात्मा द्वारा राजयोग सिखाया जाता है।... उस गीता को पढ़ने से

कोई राजा नहीं बनते हैं, उससे और ही रंक बनते जाते हैं। निराकार परमपिता परमात्मा गीता का ज्ञान सुनाये राजाओं का राजा बनाते हैं।''

सा.बाबा 26.05.11 रिवा.

"तुम समझते हो - अभी हम शूद्र से ब्राह्मण बनें हैं, गीता के भगवान शिव हमको राजयोग सिखा रहे हैं। यह शास्त्रों में कहीं लिखा हुआ नहीं है।... ज्ञान मार्ग अलग है और भक्ति मार्ग अलग है। शास्त्र सब भक्ति मार्ग के हैं। उनमें यह नॉलेज नहीं है। बाप स्वयं आकर रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देते हैं।''

सा.बाबा 11.03.11 रिवा.

"गीता ज्ञान सुनकर तुम राज्य पाते हो और महाभारत लड़ाई लगती है, सफाई के लिए।... गीता ज्ञान है दो अक्षर - अलफ और बे। यह है गुप्त मन्त्र का लॉकेट मन्मनाभव अर्थात् मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे।... बाप नटशेल में तो कहते हैं - अलफ को याद करो, बाकी तुम्हारे सिर पर जो पापों का बोझा है, उसे उतारने में मेहनत लगती है और समय भी लगता है।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

"तुम किसको भी पूछ सकते हो - कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया तो कब दिया, ... किसी को भी ऐसे प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं होती है, तुम तो हिम्मत रखते हो। सुनकर लोग कहेंगे कि ब्रह्मा कुमारियों में इतना ज्ञान है, जो वे रचता और रचना की इतनी नॉलेज देती हैं। रचता बाप की बायोग्राफी सुनाती हैं। तुम पूछ सकते हो - शिव जयन्ती मनाते हो, पूजा आदि करते हो, तो वह कब आया, कैसे आया, क्या आकर किया ?''

सा.बाबा 27.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, एवं दर्शन और सत्यता

हर आत्मा में कोई न कोई विशेष ज्ञान है, जो सत्य है और उसके आधार पर इस सृष्टि रंगमंच पर उसका महत्व है। यथा एक मधुमक्खी में फूलों से शहद निकालने और उसको संचित करने का ज्ञान है, जो न कोई साधारण मनुष्य कर सकता है और न ही कोई वैज्ञानिक, मनोविज्ञान का ज्ञाता, धार्मिक नेता, दार्शनिक आदि कर सकता है। एक कृषक में कृषि करने का ज्ञान है, जिससे वह अपने क्षेत्र में कार्य करता है। सन्यासियों ने ब्रह्मचर्य को अपनी शक्ति के आधार पर धारण किया, जिसकी परमात्मा ने भी महिमा की है।... वैज्ञानिकों

में नये-नये अविष्कार करने की शक्ति है, ज्ञान है, संस्कार है, जिसके आधार पर वे अपने-अपने क्षेत्र में नये-नये अविष्कार करते हैं, जिससे इस जगत में अनेकानेक आत्मायें लाभान्वित होती हैं। ऐसे ही धर्म, मनोविज्ञान और दर्शन का भी अपना क्षेत्र है, समय है, उसका महत्व है। परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान की सत्यता और उन आत्माओं के ज्ञान की सत्यता में कुछ मूलभूत अन्तर है, उसको जानना अति आवश्यक है, तब ही हम आध्यात्मिक ज्ञान का यथार्थ रीति महत्व समझ सकेंगे और उसका सदुपयोग कर, उससे लाभान्वित हो सकेंगे।

आत्माओं का जितना भी ज्ञान है, उसमें अपनी-अपनी सत्यता है परन्तु एक ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिये गये आध्यात्मिक ज्ञान के अतिरिक्त विश्व में जो भी ज्ञान है, वह अपने क्षेत्र में सत्य होते हुए भी, उसका महत्व होते हुए भी, उससे विश्व का कल्याण नहीं हो सकता अर्थात् विश्व की और आत्माओं की चढ़ती कला नहीं हो सकती, सबकी उतरती कला ही होती है और सबके होते भी सृष्टि पतन की ओर ही अग्रसर रहती है। परमात्मा जब आकर आत्मा का, स्वयं का, सृष्टि-चक्र का, कर्म-सिद्धान्त आदि का सत्य ज्ञान देते हैं, जिससे ही इस विश्व की चढ़ती कला होती है, उसको ही सत्य आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है।

जब आत्माओं के ज्ञान के साथ परमात्मा के आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश होता है, तब ही उन आत्माओं का ज्ञान नये विश्व के निर्माण में सहयोगी होता है। जिसके लिए ज्ञान सागर परमात्मा ने कहा है - अभी वैज्ञानिकों ने जो अविष्कार करके जो संचार आदि के साधन बनाये हैं, वे परमात्मा के कार्य में सहयोगी बन रहे हैं और अन्त में वैज्ञानिक भी इस ज्ञान में आयेंगे और नये विश्व के निर्माण में सहयोगी बनेंगे। इसके लिए ही वैज्ञानिकों द्वारा जो सौर-ऊर्जा आदि का अविष्कार हुआ है, वह विशेष महत्वपूर्ण है, जो सतयुग में भी काम आयेगा। वही विज्ञान जब परमात्मा के आध्यात्मिक ज्ञान से विमुख होता है तो वह पुराने विश्व के विनाश का कार्य करता है अर्थात् जिन वैज्ञानिकों को परमात्मा का ज्ञान नहीं है, वे पुराने विश्व के विनाश की तैयारी कर रहे हैं अर्थात् विनाश के लिए अस्त्र-शस्त्र बना रहे हैं। वास्तविकता को देखा जाये तो उनका भी परमात्मा के कार्य में एक प्रकार का सहयोग ही है क्योंकि विनाश के बिना तो नई दुनिया हो नहीं सकती है।

सत्य ज्ञान वह है, जिससे जड़-जंगम और चेतन तीनों प्रकृतियाँ सतोप्रधान बनें, जिससे सभी आत्मायें सुख-शान्ति, आनन्द की अनुभूति करें, आत्माओं का आत्माओं से प्यार हो, आत्माओं की परमात्मा से प्रीत हो।

दुनिया में अनेक प्रकार के क्षेत्र हैं, उनके अपने2 क्षेत्र का जो ज्ञान है, वह भी सत्य है परन्तु यहाँ सत्य ज्ञान का अर्थ, उस ज्ञान से है, जिससे जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों का

कल्याण हो, विश्व का नव-निर्माण हो।

Q. दुनिया में अनेक भक्त, समाज-सुधारक विश्व-कल्याण की श्रेष्ठ भावना रखकर अथक पुरुषार्थ करते हैं परन्तु फिर भी वे स्वयं और सारा विश्व गिरता ही जाता है अर्थात् तमोप्रधान ही बनता जाता है। अभी जब हम परमात्मा के गोद के बच्चे बनते हैं, तब ही हमारी चढ़ती कला होती है - इसका क्या कारण है?

अभी जब हम परमात्मा के बनें हैं तो ज्ञान सागर परमात्मा से हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है और परमात्मा का डॉयरेक्ट सहयोग मिलता है, इसलिए अभी हमारी चढ़ती कला होती है और हमारे योगबल से सारे विश्व का कल्याण होता है।

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और मुरली

निराकार ज्ञान सागर परमात्मा ब्रह्मा-तन द्वारा जो ज्ञान देते हैं, वह मुरली कहलाता है। ज्ञान सागर परमात्मा मुरली में इस विश्व-नाटक के समस्त गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करते हैं, जिससे वे सर्व साधारण की समझ में आयें और वे उसको पालन कर अपने जीवन को श्रेष्ठ अर्थात् दैवीगुण सम्पन्न बना सकें। मानव कल्याण के अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के सर्व प्रकार के ज्ञान का आधार मुरली है क्योंकि परमात्मा ही सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाले हैं और विश्व की चढ़ती कला के आधार है, इसलिए उनके द्वारा दिया ज्ञान अर्थात् मुरली में सब प्रकार के ज्ञान का बीज है अर्थात् सार समाया हुआ है।

मुरली ब्राह्मण जीवन का आधार है, ब्राह्मण जीवन का श्वांस है। जो मुरली के महत्व को नहीं जानता, उसको सुनता-पढ़ता नहीं, उस पर मनन-चिन्तन नहीं करता, उसकी धारणा नहीं करता, वह ब्राह्मण ही नहीं है और वह सत्य आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि के सत्य स्वरूप और उनके महत्व को नहीं समझ सकता है। ज्ञान सागर परमात्मा ब्रह्मा मुख से सर्व प्रकार के ज्ञान का जो सार सुनाते हैं, उसका स्पष्टीकरण करते हैं, उसका आधार मुरली है।

मुरली ही सर्वात्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति का एकमात्र आधार है। और तो सभी प्रकार के ज्ञान जो मनुष्यों के द्वारा दिया गया है और शास्त्र जो मनुष्यों के द्वारा बनाये गये हैं, उन सब के होते भी आत्मा की उतरती कला कला ही होती है, आत्मा जीवन बन्ध में ही फँसती जाती है।

जो मुरली के महत्व को यथार्थ रीति समझता, निश्चयबुद्धि होकर उसका मनन-चिन्तन

करता, वह सत्य ज्ञान के सभी रहस्यों को समझता है और सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है, इसलिए उसको और कुछ पढ़ने या जानने की न आवश्यकता होती है और न ही उसकी किसमें रुचि होती है, न ही उसके पास कुछ पढ़ने या जानने आदि का समय होता है। वह अपना तन-मन-धन, समय-स्वांस-संकल्प मुरली के अध्ययन में, उसके मनन-चिन्तन में और ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य अर्थात् ईश्वरीय सेवा में लगाता है।

जो मुरली के महत्व को जानकर, उस विधि और संकल्प से मुरली को पढ़ता है, उसके सामने सब रहस्य स्वत: स्पष्ट होते हैं या समय पर स्पष्ट हो जाते हैं क्योंकि उसका बुद्धियोग मुरलीधर परमात्मा के साथ होता है, जो बुद्धिमानों की बुद्धि हैं। सेवा में भी उसको कब कोई बाधा नहीं आती है, समय पर व्यक्ति के अनुसार उसको उत्तर अवश्य आ जाता है।

फिलासॉफी है अनुमान लगाने या ढूँढने का मार्ग, ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति अर्थात् जब आत्मा को अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है तो सन्तुष्टता होती है, इसलिए ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होने से आत्मा को सन्तुष्टता होती है और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान से आत्मा को खुशी होती है और उसकी भटकना बन्द हो जाती है। इसलिए उसको विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि में रुचि नहीं रहती है। यदि किसी को इनमें किसी एक में भी रुचि है, तो उसने सत्य ईश्वरीय ज्ञान के महत्व को अर्थात् मुरली के महत्व को नहीं समझा है, इसलिए उसकी बुद्धि उनमें भटकती है।

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मूल्य अर्थात् आत्मा के गुण-धर्म

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक हिस्ट्री-जॉग्राफी पर विचार करें तो देखेंगे तो समयान्तर में इन सभी प्रकार की आत्माओं के मूल्यों अर्थात् गुण-धर्मों में परिवर्तन होता रहता है। सारे कल्प में जीवात्माओं के गुण-धर्म चार प्रकार के होते हैं। एक हैं आध्यात्मिक मूल्य अर्थात् ईश्वरीय मूल्य, दूसरे हैं दैवी मूल्य, तीसरे हैं मानवीय मूल्य और चौथे हैं आसुरी गुण-धर्म। इन सब गुण-धर्मों अर्थात् मूल्यों का यथार्थ ज्ञान इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ब्राह्मणों को ही होता है, इसलिए सारे कल्प में यह ब्राह्मण जीवन सर्वश्रेष्ठ जीवन है, जिसमें ईश्वरीय मूल्यों, मानवीय मूल्यों का विकास होता है और आसुरी गुण-धर्मों का पतन होता है। इन चारो प्रकार के मूल्यों के विषय में यहाँ विचार करते हैं।

"बाप आकर जो गीता ज्ञान सुनाते हैं, फिर यह नॉलेज प्राय: लोप हो जाती है। वहाँ इस नॉलेज की दरकार ही नहीं रहती है। राजधानी स्थापन हो गई, फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहती है। ... पार्ट बजाते-बजाते, भक्ति करते आत्मा के पंख टूट गये हैं, आत्मा पत्थरबुद्धि बन गई है। पत्थर से पारस बनाने फिर मुझे आना पड़ता है।''

सा.बाबा 8.06.11 रिवा.

"जो कुछ होता है, वह सब ड्रामा में नूँध है। इसको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप आकर राजयोग सिखाते हैं और ड्रामा की भी नॉलेज देते हैं। ... सदा समझो हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेण्ट हैं। भगवानुवाच - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। आज के राजे लोग भी लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं।'' सा.बाबा 8.06.11 रिवा.

"मैं न भूतकाल का चिन्तन करती हूँ और न भविष्य की चिन्ता करती हूँ, मैं सदैव वर्तमान में जीती हूँ अर्थात् अपने वर्तमान समय, श्वांस, संकल्प को सफल करती हूँ।'' दादी जानकी

आध्यात्मिक गुण-धर्म अर्थात् ईश्वरीय मूल्य

ईश्वरीय मूल्य अर्थात् आध्यात्मिक गुण-धर्म संगमयुग पर ही होते हैं, जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं, तब हम उनके साकार में बनते हैं और वे आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देते हैं और ईश्वरीय कर्तव्य सिखलाते हैं। आध्यात्मिक मूल्यों को ईश्वरीय मूल्य कहा जायेगा क्योंकि आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं और आत्मायें जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती हैं तो उनमें वे सारे गुण प्रत्यक्ष होते हैं, जो परमात्मा में हैं। आत्मा और परमात्मा में

अन्तर इतना रहता है कि परमात्मा उन गुणों का सागर है और उसमें वे गुण-धर्म सदा काल रहते हैं, परन्तु आत्माओं में वे गुण संगमयुग पर ही होते हैं। ईश्वरीय गुणों में ज्ञान प्रथम गुण है, इसलिए परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है, फिर है पवित्रता। इसलिए ब्राह्मणों के 6 गुण विशेष गाये हुए हैं। ज्ञान लेना और ज्ञान देना, पवित्र बनना और बनाना, दान लेना और दान देना। परमात्मा आकर आत्माओं को ईश्वरीय परिवार अर्थात् भाई-भाई अर्थात् विश्व-परिवार का ज्ञान देकर, उनमें विश्व-कल्याण की भावना जागृत करते हैं, जिससे आत्मायें विश्व-कल्याण का कर्तव्य करती हैं। यह विश्व-कल्याण का कर्तव्य संगमयुग पर ही ब्राह्मण आत्मायें करती है, जिससे सर्व आत्माओं का और जड़-जंगम प्रकृति का कल्याण होता है, सब पावन बनते हैं। सारे कल्प अर्थात् सृष्टि-चक्र में ईश्वरीय मूल्य ही आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला का आधार हैं।

ईश्वरीय गुणों में ज्ञान मुख्य गुण है, जिससे आत्मा त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ बनती है अर्थात् आत्मा को तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान होता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा यथार्थ रीति साक्षीपन के गुण को धारण कर साक्षी बनकर सारे नाटक को देखती है, जिससे वह हर आत्मा को निर्दोष देखती है, सबके प्रति उसकी निर्दोष दृष्टि-वृत्ति रहती है। आत्मा का यथार्थ ज्ञान होने के कारण आत्मा में विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत होती है। ईश्वरीय गुणों वालों की रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में शिव और सालिग्राम बनाकर पूजा होती है, शिव और सालिग्राम के मन्दिर बनते हैं।

"एक व्यर्थ संकल्प, एक पुराना संस्कार मास्टर सर्वशक्तिवान, महावीर, विघ्न-विनाशक, त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी को परेशान कर दे, पुरुषार्थ में कमजोर बना दे तो क्या ऐसे को मास्टर सर्वशक्तिवान कहेंगे ? ... मुख से यह शब्द निकलना कि मुझे व्यर्थ संकल्प आते हैं, पुराने स्वभाव-संस्कार अपने वशीभूत बना लेते हैं, बाप की याद का अनुभव नहीं है, ... निरन्तर अतीन्द्रिय सुख वा हर्ष नहीं रहता, खुशी का अनुभव नहीं होता। क्या ये बोल ब्राह्मण कुलभूषण के हैं?''

अ.बापदादा 13.06.73

"ब्राह्मणपन का पहला लक्षण है - "और संग तोड़, एक संग जोड़''। अगर कर्मेन्द्रियों की तरफ भी जोड़ है तो यह ब्राह्मणपन का पहला लक्षण नहीं है।... वे पंच तत्वों के शरीर को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए, प्रकृति के वश नहीं होंगे, लेकिन प्रकृति को सतोप्रधान बनाने के कर्तव्य में स्थित होंगे। जो अभी प्रकृति को वश नहीं कर सकते, वे भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते हैं।''

अ.बापदादा 13.06.73

"बाप के सहारे बिगर तुम विषय वैतरणी नदी में गोते खाते थे। ज्ञान मिलने से तुम सतयुगी नई

दुनिया में चले जाते हो।... यह सब संगमयुग पर ही होता है।''

सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

"बाप दुखहर्ता, सुखकर्ता है, तुम उनके बच्चे हो, तो तुमको भी किसको दुख नहीं देना है। सबको सुख देना है और सुख का रास्ता बताना है। ... अभी बाबा हमको संजीवनी बूटी देते हैं, जिससे हम सुरजीत हो जाते हैं, फिर 21 जन्म कब मूर्छित नहीं होंगे। यह संजीवनी बूटी है- मन्मनाभव।''

सा.बाबा 22.07.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में यह चित्रों की सारी नॉलेज है। स्कूल में स्टूडेण्ट्स पढ़ते हैं तो बुद्धि में सारी नॉलेज आ जाती है। ... अभी तुम इस ड्रामा को जान गये हो। तुम्हारी बुद्धि में यह सारा चक्र है। ये हैं नई बातें, जिनको तुम ब्राह्मण कुल वाले ही समझेंगे।... अभी तुमको आत्मा का ज्ञान मिला है। आत्मा ही कर्म करती है और कर्म का फल भी आत्मा ही भोगती है। आत्मा में ही संस्कार रहते हैं।''

सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

"जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर बहुत है, बाप को याद कर उसको भस्म करो। नहीं तो अन्त में त्राहि-त्राहि करना होगा। ... आत्मा निर्लेप नहीं है। संस्कार आत्मा में ही हैं। आत्मा ही सुख-दुख भोगती है। बाबा बार-बार समझाते हैं क्योंकि मन्जिल बहुत भारी है। ... बाप समझाते हैं - बच्चे देहाभिमान छोड़, देही-अभिमानी बनों, निरन्तर बाप को याद करो।''

सा.बाबा 3.06.11 रिवा.

"बाप तो समझाते हैं, अब समझने वालों की बुद्धि पर सारा मदार है। ज्ञान का बक्खर एक ज्ञान सागर बाप के पास ही है। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल फादर ही देते हैं। ... बाबा तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चों को धारण कर और दूसरों को भी धारण कराना है। जितना धारणा करते हैं और कराते हैं, उतना वर्सा लेते हैं।''

सा.बाबा 4.04.11 रिवा.

"यह सब ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए, जिससे कोई भी आये तो उसको समझा सको। ... ज्ञान से चोली रंगते हो। आत्मा इस चोले के अन्दर है। आत्मा पवित्र बन गई तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। ... जो सेन्सीबुल बने हैं, वे ही इन ज्ञान की बातों को धारण कर और करा सकते हैं। जिन बच्चों के मुख से सदैव ज्ञान रतन निकलते हैं, उनको रूप-बसन्त कहा जाता है।''

सा.बाबा 19.03.11 रिवा.

"अपसेट करने वाली बातें आयेंगी, लेकिन उनको एक खेल समझो, घबराओ नहीं।... नॉलेजफुल, पॉवरफुल बन जाओ। अपनी इस सीट को छोड़ो नहीं।... नॉलेजफुल तो बन गये हो लेकिन सिर्फ नॉलेजफुल नहीं। नॉलेजफुल के साथ पॉवरफुल भी चाहिए। पॉवरफुल स्थिति

कम है, इसलिए डॉट नहीं लगा सकते हो। ... बाप भी डॉट, आप भी डॉट और जो हुआ, वह भी डॉट अर्थात् फुल स्टॉप।''

अ.बापदादा 7.03.95

"दूसरी बात अन्जानपन के कारण कई बातों में धोखा खाते हैं। तो अभिमान और अन्जान इन दोनों बातों के बजाये स्वमान में रहना है। स्वमान में रहे तो अभिमान खत्म हो जाये और निर्माण बन जायें। मन्सा में स्वमान की स्मृति रहे और वाचा-कर्मणा में निर्माण अवस्था हो तो अभिमान स्वत: खत्म हो जायेगा। बच्चे अभी फिलॉसॉफर हो गये हैं, स्प्रीचुअल नहीं बने हैं।''

अ.बापदादा 10.06.72

"अभी हम बाबा से राजयोग और ज्ञान बल से फिर से स्वर्ग का वर्सा लेते हैं। ऐसे-ऐसे ख्यालात बच्चों के अन्दर में आने चाहिए। ... बाप जानते हैं - बच्चे काम-चिता पर बैठ काले भस्मीभूत हो गये हैं, इसलिए इनको सुरजीत करने के लिए मैं अमरलोक परमधाम से इस मृत्युलोक में आता हूँ। अभी तुम फिर से मृत्युलोक से अमरलोक जाते हो।''

सा.बाबा 22.09.11 रिवा.

दैवी गुण-धर्म अर्थात दैवी मूल्य

ज्ञान सागर परमात्मा जब इस धरा पर साकार में आते हैं तो आत्माओं को आत्मा का ज्ञान देने के साथ-साथ इस सृष्टि-चक्र का भी ज्ञान देते हैं, जिससे आत्माओं को स्वर्ग-नर्क, देवता-असुर आदि-आदि का ज्ञान होता है और आत्मायें दैवीगुणों और दैवी दुनिया के महत्व को अनुभव करते हैं और दैवी दुनिया में जाने के लिए अपने में दैवीगुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं। दैवी मूल्य आत्माओं में सतयुग-त्रेता में होते हैं, जिससे वे मनुष्य देवी-देवता कहलाते हैं। ब्रह्मचर्य सबसे प्रथम दैवी गुण है, जिसके आधार पर आत्मा में सर्व दैवीगुणों की धारणा होती है। सतयुग-त्रेता में सारे कार्य योगबल से होते हैं, वहाँ विकारों का नाम निशान नहीं होता है। आत्माओं में स्वभाविक प्रेम, निर्भयता, निश्चिन्तता, निर्मानता होती है, जिससे उनके जीवन में सुख-शान्ति रहती है। पवित्रता अर्थात ब्रह्मचर्य देवी-देवताओं के जीवन का सर्वश्रेष्ठ मूल्य अर्थात् गुण है, इसलिए देवताओं के लिए गायन है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है।

दैवी गुणों में सर्व मानवीय गुणों के साथ-साथ विशेष रूप से ब्रह्मचर्य; मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त अमृत्व; योगबल से जन्म अर्थात् आत्मा और शरीर दोनों की पवित्रता; देवी-देवताओं के आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होने के कारण उनके मन्दिर बनाकर पूजा होती है। और किसी वैज्ञानिक, धार्मिक नेता, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक के मन्दिर

बनाकर पूजा नहीं होती है।

"अभी तुमको सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान है, सतयुग में यह ज्ञान नहीं रहेगा कि हमको फिर दुखधाम में जाना है, हम सुख में कैसे आये, हम कितने जन्म लेंगे। वहाँ यह कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम जानते हो कि ऊंच कौन ठहरे। अभी तुम हो ईश्वरीय औलाद। ईश्वरीय औलाद में भी नम्बरवार हैं। कोई तो बड़े मस्त रहते हैं।''

सा.बाबा 3.06.11 रिवा.

"तुम अभी संगम पर हो, तुम जानते हो - अभी भक्ति की रात पूरा हो, दिन उदय होता है। यह ज्ञान अभी तुमको बाप द्वारा मिला है। लक्ष्मी-नारायण को यह ज्ञान नहीं होता है। ... तुम अभी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। फिर आधा कल्प के बाद तुम राज्य गँवाते हो। ... अभी तुम पुरुषार्थ करते हो राजयोग सीखने का। बाप तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दे त्रिकालदर्शी बना रहे हैं।''

सा.बाबा 28.05.11 रिवा.

मानवीय मूल्य और आसुरी गुण-धर्म

द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमानी बनते हैं, तो उनमें आसुरी वेल्यू अर्थात् विकारी संस्कार जागृत हो जाते हैं, इसलिए वे जो भी कर्म करते हैं, उसमें कुछ न कुछ विकारों की दुर्गन्ध रहती ही है। परन्तु विचारणीय यह है कि जो आत्मायें परमधाम से नई आती हैं, उनमें एकदम तो विकारों की प्रवेशता नहीं होगी, इसलिए उनमें कुछ समय के लिए जो गुण-धर्म रहते हैं, उनको मानवीय मूल्य कहेंगे क्योंकि उनको दैवीगुणों वाला भी नहीं कहा जा सकता और आसुरी गुणों वाला भी नहीं कहा जा सकता, इसलिए उनको मानवीय मूल्यों वाला कहा जायेगा। इसलिए द्वापर-कलियुग में आत्माओं में आसुरी गुण और मानवीय गुणों का समावेश रहता है। द्वापर से आत्माओं में देहाभिमान आ जाता है, जिससे आत्माओं में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, निन्दा-स्तुति आदि-आदि आसुरी गुण आ जाते हैं, जिससे उनके कर्म विकर्म होते हैं और उनके कर्म-संस्कार स्वयं को भी दुखी करते हैं तो अन्यों के लिए भी दुखदायी होते हैं। परन्तु जो नई आत्मायें परमधाम से आती हैं, उनमें उस समय यह राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, निन्दा-स्तुति आदि-आदि नहीं होते हैं, इसलिए उनके गुण-धर्म-संस्कारों को मानवीय मूल्य कहा जाता है। धर्म-पिताओं को धर्म स्थापना में अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं, आत्माओं का विरोध सहन करना पड़ता है, परन्तु वे कब किसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखते, किसके

लिए अशुभ नहीं सोचते हैं, किसको श्राप आदि नहीं देते हैं।

मानवीय गुणों वालों की केवल महिमा होती है परन्तु उनके मन्दिर आदि नहीं बनते हैं अर्थात् उनकी पूजा नहीं होती है। मानवीय गुण-धर्म वाली आत्माओं में दैवीगुण अंशमात्र होते हैं अर्थात् उनकी स्मृति होती है, उनका आकर्षण रहता है।

आसुरी गुण-धर्म वाली आत्माओं की निन्दा होती है, उनको रावण के रूप में जलाते हैं। उनके जीवन में दुख-अशान्ति होती है।

ईश्वरीय गुण-धर्म से सम्पन्न आत्मा ही दैवी गुण-धर्म से सम्पन्न बनती है। ईश्वरीय गुण-धर्म से सम्पन्न आत्मा में सर्व मानवीय गुण-धर्म समाये रहते हैं परन्तु मानवीय गुण-धर्म से सम्पन्न आत्मा में ईश्वरीय गुण-धर्म भी हों, यह सम्भव नहीं है क्योंकि मानवीय मूल्यों का गायन द्वापर-कलियुग में होता है। ईश्वरीय गुण-धर्म आत्मा में संगम पर होते हैं, जब आत्मायें परमात्मा से यथार्थ ज्ञान प्राप्त करती हैं, उनके साथ रहते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं।

दैवी गुण-धर्म, मानवीय गुण-धर्म, आसुरी गुण-धर्म से आत्मा और विश्व की उतरती कला ही होती है, चढ़ती कला का आधार ईश्वरीय गुण-धर्म अर्थात् आध्यात्मिक मूल्य ही हैं। "बाप ने बच्चों को समझाया है कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। अभी बाप फिर से स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। एक धर्म की स्थापना हो जायेगी तो अनेक धर्म जरूर विनाश होंगे।... यह ज्ञान, भक्ति, वैराग्य तुम्हारे लिए है। सन्यासियों का तो धर्म ही अलग है।... तुम्हारा सफेद कपडों आदि से कोई कनेक्शन नहीं है। तुमको तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 28.05.11 रिवा.

"ड्रामा प्लैन अनुसार लड़ाई के भी आसार देखने में आते हैं। यह कोई नई बात नहीं है। हर कल्प ऐसे ही भारत 16 कला सम्पूर्ण बनता है और विनाश भी होता है।... गाते भी हैं - दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप कहते हैं विकारों का दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। इसमें भी काम विकार सबसे भारी अवगुण है।''

सा.बाबा 1.10.11 रिवा.

आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

ईश्वरीय मूल्य ही सारे कल्प के दैवी और मानवीय मूल्यों का आधार हैं अर्थात् ईश्वरीय मूल्यों की धारणा के आधार पर सारे कल्प के लिए आत्मा में दैवी मूल्यों और मानवीय मूल्यों, धार्मिक मूल्यों की धारणा होती है। ईश्वरीय मूल्य, दैवी मूल्य, मानवीय मूल्यों

की अनुपस्थिति में ही जीवात्मा में आसुरी मूल्य अर्थात् आसुरी गुण-धर्म प्रभावित होते हैं परन्तु बिडम्बना यह है कि ईश्वरीय मूल्य, दैवी मूल्य, मानवीय मूल्य भी आत्मा में सदा एकरस नहीं रहते हैं क्योंकि यह सारा जगत परिवर्तनशील है अर्थात् इसमें हर चीज और स्थिति में सतत् परिवर्तन होता है और वह परिवर्तन सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की दिशा में होता है। भल ईश्वरीय मूल्यों से आत्मा में दैवी मूल्यों, मानवीय मूल्यों का विकास होता है। ईश्वरीय मूल्य आत्मा में संगमयुग पर ही होते हैं, जब आत्मा को परमात्मा से यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है, इसलिए सतयुग में ईश्वरीय मूल्य नहीं होते हैं। सतयुग में दैवी मूल्य ही होते हैं। इसलिए सतयुग की आदि से ही जब ईश्वरीय मूल्य नहीं होते हैं तो आत्मा में दैवी मूल्यों और मानवीय मूल्यों का पतन होने लगता है अर्थात् उतरती कला आरम्भ हो जाती है, उनका ह्रास होने लगता है और उसकी परिणित आसुरी गुण-धर्मो के रूप में होती है। इसलिए ईश्वरीय मूल्यों की तुलना हीरों से और दैवी मूल्यों, मानवीय मूल्यों की तुलना सोना, चाँदी, ताँबे से की जाती है और आसुरी मूल्यों की लोहे से, कौड़ियों से की जाती है। ईश्वरीय मूल्यों में यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान सबसे प्रथम और श्रेष्ठ मूल्य है, जो सर्व ईश्वरीय मूल्यों का आधार है।

ईश्वरीय मूल्य और आसुरी गुण-धर्म समयान्तर में जन्म-पुनर्जन्म के साथ वृद्धि को प्राप्त होते हैं परन्तु दैवी मूल्य और मानवीय मूल्य समयान्तर में जन्म-पुनर्जन्म के साथ ह्रास को प्राप्त होते हैं, उतरती कला में जाते हैं। इसलिए ईश्वरीय मूल्यों के विकास के बाद आत्मायें सम्पूर्णता को प्राप्त करती हैं, परमधाम जाती हैं। आसुरी गुण-धर्मों की वृद्धि होते-होते आत्मायें कलियुग के अन्त में आ जाती हैं और आसुरी गुण-धर्मों के आधार किये गये विकर्मों के फलस्वरूप आत्मायें परम दुख-अशान्ति को भोगती हैं।

दैवी मूल्य और मानवीय मूल्य समयान्तर में जन्म-पुनर्जन्म के साथ ह्रासित होते जाते हैं अर्थात् उतरती कला में जाते हैं, जिससे सतयुग से त्रेता आता है, फिर गिरते-गिरते द्वापर-कलियुग आता है। द्वापर से आत्मा में आसुरी गुण-धर्मों की प्रवेशता होती है परन्तु द्वापर-कलियुग में जो आत्मायें परमधाम से नई आती हैं, उनमें कुछ समय के लिए मानवीय मूल्य होते हैं परन्तु वे भी समयान्तर में घटते-घटते आसुरी गुण-धर्मों में बदल जाते हैं।।

वैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिकों, धार्मिक नेताओं, दार्शनिकों में ईश्वरीय मूल्य नहीं होते हैं परन्तु ईश्वरीय मूल्यों वाली आत्माओं में वैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिकों, धार्मिक नेताओं, दार्शनिकों में जो मानवीय मूल्य होते हैं, वे होते हैं। इसलिए बाबा ने कहा है - योग भी एक विज्ञान है, जिसके द्वारा आत्मायें और जड़-जंगम प्रकृति पावन बनती है। ईश्वरीय मूल्यों की धारणा से ही आत्मा में दैवी मूल्यों और मानवीय मूल्यों की धारणा होती है तथा आसुरी गुण-धर्म समाप्त होते

हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान से ईश्वरीय मूल्य आते हैं, जो सर्व दैवी मूल्यों और मानवीय मूल्यों का आधार हैं। विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, भक्ति का ज्ञान, दर्शन के ज्ञान के होते भी आत्मा में आसुरी गुण-धर्म आ जाते हैं और निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते हैं परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, भक्ति का ज्ञान, दर्शन के कारण आत्मा में आसुरी गुण-धर्म आते हैं। बल्कि इससे तो आत्मामें जो आसुरी गुण-धर्मों की प्रवेशता होती है, उसकी गति मन्द होती है परन्तु इनमें यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान न होने के कारण ये आत्मा में बढ़ते हुए आसुरी गुण-धर्मों को नियन्त्रित करने और खत्म करने में समर्थ नहीं है। वह काम आध्यात्मिक ज्ञान, जो ज्ञान सागर परमात्मा देते हैं, उसका ही है अर्थात् वही इसमें समर्थ है। यही कारण है कि सतयुग में दैवी मूल्य होते भी आत्मिक शक्ति का पतन होता है।

"यह है रुहानी शमा और परवानों की बात। परवाने सोचते हैं कि जब बाप आये हैं तो क्यों न हम उनके बन जायें। पहले तुम आसुरी परिवार के थे, अभी ईश्वरीय परिवार के बने हो। जीते जी ईश्वर बाप ने आकर तुमको एडॉप्ट किया है। ... ईश्वर सर्वशक्तिवान है, हम उनकी शरण में आये हैं। उनमें कशिश है, जो सबकुछ छुड़ा देते हैं, नष्टोमोहा बना देते हैं।''

सा.बाबा 17.08.11 रिवा.

"पहले हम निर्विकारी सम्बन्ध में थे, फिर विकारी सम्बन्ध में आये, फिर हमारा निर्विकारी सम्बन्ध होगा। ये बातें तुम ब्राह्मणों की ही बुद्धि में हैं, और किसकी बुद्धि में नहीं होती हैं।... अभी सारी दुनिया रावण राज्य में है, यह कोई समझते नहीं हैं। रामराज्य में तो पवित्रता-सुख-शान्ति सब थी। अब नहीं हैं तो फिर रामराज्य चाहते हैं।''

सा.बाबा 17.08.11 रिवा.

"तुम चैलेन्ज करते हो कि हम रावण राज्य को बदल राम राज्य जरूर स्थापन करेंगे। अब चेलेन्ज किया है तो एक-दो को पुरुषोत्तम बनाना है।... तुम जानते हो हम दूसरे जन्म में पुरुषोत्तम बनेंगे, फिर वहाँ इस रावण राज्य का कोई नहीं रहेगा। अभी ही तुमको यह सारा ज्ञान है। ... तुम्हारे दैवी राज्य का किसको पता नहीं है। तुम जानते हो - अभी हम अपना दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं, श्रीमत पर।''

सा.बाबा 17.08.11 रिवा.

"इस ड्रामा में हर एक को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है, जिसने कल्प पहले जितनी पढ़ाई धारण की है, उतनी अभी भी करते हैं। ... बुद्धि को सदा ज्ञान के चिन्तन में बिजी रखो, इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।... ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी होते हैं, देवताओं को

स्वदर्शन चक्रधारी नहीं कहेंगे।'' सा.बाबा 1.12.09 रिवा.

"देवी-देवताओं को यह वर्सा किसने दिया ? देवताओं को कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी ... ज्ञान सागर बाप ही आकर समझाते हैं कि इन्होंने यह वर्सा कैसे पाया। ... बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। वह कल्पान्त में आकर यह ज्ञान देते हैं, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 7.05.11 रिवा.

"बच्चे जानते हैं हम स्वर्ग की तकदीर बनाकर रुहानी बाप के पास बैठे हैं। अब बच्चों को आत्माभिमानी बनना है। बड़े से बड़ी मेहनत यह है। ... तुम जानते हो - मुझ आत्मा ने 84 जन्म लिए हैं। अच्छे-बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। उन संस्कारों अनुसार आत्मा को शरीर भी ऐसा मिलता है। सारा मदार आत्मा पर है। ... यह है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप ही रूहों को देते हैं। पहली-पहली मुख्य बात बताते हैं - बच्चों को देही-अभिमानी होकर रहना है।'' सा.बाबा 20.05.11 रिवा.

"सदैव अपने को दिव्य सितारा समझते हो ? वर्तमान समय का श्रेष्ठ भाग्य बापदादा के नयनों के सितारे और भविष्य जो प्राप्त होने वाली तकदीर बना रहे हो, उस श्रेष्ठ तकदीर के सितारे अपने को देखते हुए चलते हो ? जब तक अपने को दिव्य सितारा नहीं समझते हो, तब तक यह दोनों सितारे भी स्मृति में नहीं रह सकते हैं। तो अपने त्रिमूर्ति सितारा रूप को सदैव स्मृति में रखो।'' अ.बापदादा 9.11.72

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, धार्मिक ज्ञान, राजनैतिक ज्ञान, दर्शन और दृष्टि-परिवर्तन

आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मा की दृष्टि में परिवर्तन होता है और उसकी दृष्टि वाह्य से अन्तर्मुखी हो जाती है, उसकी बुद्धि में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म और फल का ज्ञान रहने से दृष्टि परिवर्तन हो जाती है और उसको सभी आत्मायें निर्दोष दिखाई देती हैं, जिससे उसकी दिल में सर्वात्माओं के प्रति रहम भाव जागृत होता है, जबकि अन्य सभी प्रकार के ज्ञान से देहाभिमान बढ़ता है और आत्माओं को अन्य आत्माओं के दोष ही दिखाई देते हैं, जिससे परस्पर व्यवहार में कटुता आती जाती है।

"यह भी ड्रामा बना हुआ है, किसका भी दोष नहीं है। सब ड्रामा के वश हैं, ईश्वर के वश नहीं। ईश्वर से भी ड्रामा तीखा है। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर आता हूँ। ... बाप खुद कहते हैं - मैं आकर सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाता हूँ। ... व्यास ने भी कमाल

की है। कितनी कहानियाँ बनाई हैं।'' सा.बाबा 5.09.11 रिवा.

"बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहिं ... अभी तुम्हारी बुद्धि में इस ड्रामा का सारा राज़ है। यह सिर्फ कहने की बात नहीं है। तुम किसको भी दोष नहीं दे सकते हो। हर आत्मा ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजा रही है। तुमको सिर्फ बाप का पैग़ाम सुनाना है। ... कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि का यह संगम है। यह संगम नामीग्रामी है, इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।'' सा.बाबा 6.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और ब्रह्मा

आध्यात्मिक ज्ञान का दाता निराकार ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा है, वह ब्रह्मा तन के द्वारा ही ज्ञान देता है। ब्रह्मा भी इस ज्ञान को धारण कर सतयुग में श्रीनारायण बनते हैं। ब्रह्मा कल्प-वृक्ष का मूल सर्वात्माओं का आदि पिता है, इसलिए उनको ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर कहा जाता है। ब्रह्मा के हाथों में सर्व शास्त्र दिखाते हैं। परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सर्व शास्त्रों का सार समझाते हैं, इसलिए पहले-पहले यह ज्ञान ब्रह्मा ही सुनते हैं और धारण करते हैं। ब्रह्मा की आत्मा ही पूरे 84 जन्म लेती है, इसलिए उनकी आत्मा में सारे कल्प के अनुभव के संस्कार सूक्ष्म में रहते हैं। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान देते हैं और ब्रह्मा अपने सारे कल्प के अनुभव के आधार उस ज्ञान को कैसे धारण करें, वह सुनाते हैं। ब्रह्मा बाबा स्वयं भी पुरुषार्थ कर सम्पूर्णता को पाते हैं और पुरुषार्थ की नई-नई युक्तियाँ बच्चों को भी बताते हैं। मुरली को देखे तो ब्रह्मा बाबा ने आध्यात्म, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि सब प्रकार के ज्ञान का अनुभव सुनाया है।

"यह रुहानी ड्रिल कोई जिस्मानी मनुष्य नहीं सिखलाते हैं। ऐसे नहीं कि तुमको यह ड्रिल ब्रह्मा ने सिखलाई है। भल तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहलाते हो परन्तु ड्रिल सिखलाने वाला तो निराकार बाप है, वह ब्रह्मा द्वारा यह ड्रिल सिखलाते हैं। ... किसको भी समझाना है कि नई दुनिया को रचने वाला ब्रह्मा नहीं है, निराकार परमात्मा है, जो ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं।''

सा.बाबा 15.08.11 रिवा.

"ऊंच ते ऊंच बाप को याद करना है। ऊंच ते ऊंच यह ब्रह्मा नहीं है। यह ब्रह्मा तो नीच से ऊंच ते ऊंच बनते हैं, फिर नीचे उतरते हैं। ... अभी तुम त्रिकालदर्शी बन रहे हो। तुम जानते हो कि हम ही स्वदर्शन चक्रधारी हैं। हमको ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। ब्रह्माण्ड जहाँ सभी आत्मायें रहती हैं। विश्व और ब्रह्माण्ड अलग-अलग हैं।''

सा.बाबा 15.08.11 रिवा.

"ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, ये बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। सेन्सीबुल बच्चों की बुद्धि में ज्ञान झट समझ में आ जाता है। ... तुम बच्चे जानते हो कि जो-जो समय पास होता जाता है, वह हू-ब-हू ड्रामा अनुसार पास होता जाता है। बच्चों की अवस्थायें भी कब ऊपर, कब नीचे होती है। बाबा ये भी साक्षी होकर देखता है।''

सा.बाबा 29.08.11 रिवा.

"कल्प पहले भी गाया हुआ है कि परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ऐसे नहीं कि मनुष्य थे ही नहीं, फिर रचे। मनुष्य सृष्टि रचते हैं अर्थात् काँटों को फूल बनाते हैं। ... बाप कहते हैं - मैं इनकी आत्मा के बहुत जन्मों के अन्त के जन्म के अन्त में प्रवेश कर मनुष्यों को देवता बनाता हूँ। तो बच्चों को रात-दिन सर्विस करनी चाहिए।''

सा.बाबा 24.08.11 रिवा.

"तुम्हारा काम है सर्विस में लगा रहना। कोई भी बात है तो बाप को इशारा दे दिया, बस। परचिन्तन में समय बरबाद नहीं करना चाहिए। ... तुम्हारा धन्धा ही यह सर्विस है। प्रदर्शनी में अच्छी रीति समझाओ - यह शिवबाबा है, यह प्रजापिता ब्रह्मा है। कल्प पहले भी प्रजापिता ब्रह्मा का नाम गाया हुआ है। परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं।''

सा.बाबा 24.08.11 रिवा.

"आत्मा से ही प्यार रहता है। जब आत्मा शरीर से निकल जाती है, तब शरीर से प्यार नहीं रहता है। आत्मा में भी प्यार तब है, जब आत्मा शरीर में है।... आत्मा ही सबकुछ करती है, संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। (Q. परमात्मा जब शरीर में नहीं है, तो उनका प्यार अनुभव होता है या हो सकता है? वास्तव में परमात्मा में जो भी गुण है, वे सब ब्रह्मा तन में आने के बाद ही अनुभव होते हैं।)''

सा.बाबा 11.08.11 रिवा.

"आत्मा शरीर बिगर बोले कैसे! अभी तुम जानते हो शिवबाबा इस ब्रह्मा-तन से हमको सारा ज्ञान सुनाते हैं। ये बातें तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ ही समझते हो और सबको समझाते हो। अभी शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। बाप राजयोग सिखला रहे हैं। इसमें मूँझने की कोई बात नहीं है।''

सा.बाबा 16.07.11 रिवा.

"सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान एक बाप ही सुनाते हैं। तुम उनसे सुन रहे हो तो तुमको खुशी होती है कि हम स्वदर्शन चक्रधारी बनें हैं। ... तुम्हारा ये है ज्ञान मार्ग, तुम 5 विकारों पर जीत पाते हो। इन असुरों अर्थात् 5 विकारों से तुम्हारी लड़ाई है। ... यह रुद्र ज्ञान

यज्ञ है, इसको सम्भालने के लिए ब्राह्मण जरूर चाहिए। सिवाए ब्राह्मणों के यज्ञ होता नहीं है।''

सा.बाबा 15.09.11 रिवा.

"आत्मा निराकार है तो परमात्मा बाप भी निराकार है। आत्मा को निराकार तब तक कहेंगे, जब तक साकारी रूप नहीं लिया है। अभी हम बेहद के बाप से यह नॉलेज सुन रहे हैं। ... अभी बाप सम्मुख बैठ कहते हैं - बच्चे, आत्माभिमानी बन मुझे याद करो। बाप है पतित-पावन, उनकी याद से पावन बन जायेंगे। कितनी सहज युक्ति है पावन बनने की।''

सा.बाबा 10.09.11 रिवा.

"मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, इनको भी मालूम नहीं पड़ता है। उसकी कोई तिथि-तारीख हो नहीं सकती। हाँ मैं कल्प के अन्त अर्थात् रात्रि के समय आता हूँ।... मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन सवारी थोड़ेही की जाती है। मुझे जिस समय बच्चे याद करते हैं, मैं हाजिर हो जाता हूँ।''

सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

"तुम बाप से योग लगाये, विकर्म विनाश कर विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। योगबल से ही विश्व के मालिक बनते हैं। ... बाप कहते हैं - मैं ज्ञान का सागर हूँ, ब्रह्मा द्वारा मैं तुमको सारी रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुना रहा हूँ। गाते भी हैं ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अन्धेर विनाश। सतयुग में अज्ञान होता नहीं है।''

सा.बाबा 22.06.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो। मैं ब्रह्मा द्वारा ही समझाता हूँ। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना हुई है। ... तुम बच्चों को ज्ञान देने वाला है ही एक ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव, परन्तु देते ब्रह्मा द्वारा हैं। स्प्रीचुअल नॉलेज एक बाप के सिवाए और कोई में है नहीं। उनको ही ज्ञान सागर, लिबरेटर कहा जाता है। इसमें डरने की क्या बात है।''

सा.बाबा 12.05.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं आकर तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। जिन्होंने कल्प पहले बाप से स्वर्ग का वर्सा लिया है, वे ही अब भी लेंगे।... अब शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की रचना रच रहे हैं। वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा के तो सब मनुष्यात्मायें बच्चे हैं। ... यह स्प्रीचुअल नॉलेज सिवाए बाप के और कोई दे नहीं सकता है। रुहानी बाप ही रूहों को नॉलेज देते हैं।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"ज्ञान और अज्ञान दो चीजें होती हैं। ज्ञान को कहा जाता है दिन और अज्ञान को कहा जाता है रात। ... सोझरा माना राइज़, अन्धियारा माना फाल। इसके लिए कहा जाता है ब्रह्मा का दिन

और ब्रह्मा की रात। ... गायन है - ज्ञान अन्जन सतगुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनाश। यह है नई दुनिया के लिए नई नॉलेज, जो ज्ञान सागर बाप ही देते हैं।''

सा.बाबा 2.04.11 रिवा.

"निरन्तर याद में रहे, बड़ा मुश्किल है। यह बाबा भी अपना अनुभव तुम बच्चों को बताते हैं कि थोड़ा समय याद में रहता हूँ, फिर भूल जाता हूँ क्योंकि इनके ऊपर बहुत जिम्मेवारी है।... यह कहते हैं - मैं भी शिवबाबा को याद करता हूँ। यह बाबा भी बच्चों को नेष्ठा कराते हैं। तुम देखते हो - जब यह बैठते हैं तो सन्नाटा अच्छा हो जाता है, बहुतों को खींचते हैं।''

सा.बाबा 5.03.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और कल्प की आयु

बाबा से जो यह आध्यात्मिक ज्ञान मिला है, उससे हमको यह समझ आई है कि यह पूरा कल्प 5000 वर्ष का है, जो दो भागों में विभाजित है। आधा कल्प अर्थात् 2500 साल तक इस धरा पर स्वर्ग होता है, जहाँ आत्मायें संगमयुग पर परमात्मा से मिले ज्ञान के आधार पर ज्ञान-योग के किये गये पुरुषार्थ की प्रॉलब्ध का उपभोग करती हैं। आधा कल्प में सृष्टि रंगमंच पर एक ही धर्मवंश अर्थात देवी-देवता धर्म की आत्मायें होती हैं। वह सुख-शान्ति सम्पन्न दुनिया होती है, इसलिए वहाँ आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि के विषय में न ज्ञान होता है और न उसके लिए कोई पुरुषार्थ होता है। फिर आधा कल्प के बाद आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि के लिए पुरुषार्थ होता है और उन सबका वर्णन होता है। फिर संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा आकर इन सबका सार सुनाते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे नये कल्प की स्थापना होती है।

दुनिया में विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि के विभिन्न क्षेत्र हैं, उनके विभिन्न ज्ञाता है, जिन सबने इस सृष्टि की रचना के विषय में अनेक बातें बताई है और इसकी आयु के विषय में सबके अलग-अलग मत-मतान्तर हैं, जिनमें परस्पर बहुत अन्तर है। जिसने इसकी आयु के विषय में बताया है, वह भी कल्पना और अनुमान के आधार पर कहा है और वह विवेकयुक्त, तर्कसंगत नहीं है। इसलिए इसकी आयु के विषय में कोई एक निश्चित अवधारणा नहीं हो पाई है। अभी परमात्मा इसकी आयु अंक-आंकड़ों के साथ बताई है, जो बुद्धि को जंचती है और विश्वास करने के योग्य है, वह इस सृष्टि की अनेक घटनाओं के आधार पर भी समझ में आती है।

सबसे मुख्य बात जो परमात्मा ने बताई है, जिससे इस सृष्टि की आयु के विषय में विचार किया जा सकता है, वह इसके हू-ब-हू पुनरावृत्त होने की बात है और इसकी कलम लगने की बात है। विभिन्न वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक विद्वान, दार्शनिक तो इस सृष्टि की नई रचना की कल्पना करते हैं और इसके सम्पूर्ण विनाश की कल्पना करते हैं, जो विवेक-युक्त, तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती है।

"तुमको अभी समझानी मिलती है, बाप को यहाँ आना पड़ता है, सब आत्माओं को वापस ले जाने के लिए। उसके पहले कोई वापस जा नहीं सकता। सबको पार्ट बजाते सतो, रजो, तमो में आना ही है। कृष्ण की आत्मा भी पूरे 84 जन्म लेती है और पूरे 5 हजार वर्ष पार्ट बजाती है। जब आत्मा ने गर्भ में प्रवेश किया, तब से ही 5 हजार वर्ष का हिसाब शुरू होता है, नहीं तो 5000 वर्ष में कम हो जाये। ये बड़ी सूक्ष्म समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 30.07.11 रिवा.

"गायन है - बनी-बनाई बन रही,... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये। यह अभी तुमको पता पड़ा है कि जो होनी है, वही होती है, इसमें कुछ बदल नहीं सकता। आज जो कुछ होता है, वह 5 हजार वर्ष पहले भी हुआ था और फिर 5000 वर्ष बाद होगा।... यह महाभारी महाभारत लड़ाई 5000 वर्ष पहले भी हुई थी, क्रिश्चियन्स ने राज्य छीना था, नथिंग न्यू। फिर कल्प बाद ऐसे ही होगा। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है।''

सा.बाबा 30.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और मैसेन्जर-पैग़म्बर

परमात्मा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उससे आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है, इसलिए वह यह मुक्ति-जीवनमुक्ति प्राप्त करने का सन्देश सर्वात्माओं को देने के लिए ब्राह्मण आत्माओं को प्रेरित करते हैं। और कोई वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धर्म-पितायें या धार्मिक गुरु, दार्शनिक कोई पैग़ाम या मैसेज नहीं देते हैं। परमात्मा ने ब्राह्मण आत्माओं को मैसेन्जर बनाकर देश-देशान्तरों में भेजा है और भेज रहे हैं, जिससे सर्वात्माओं का कल्याण हो, सर्वात्मायें जीवन में सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करें।

"मैसेन्जर अथवा पैगम्बर एक बाप ही है, वे ही आकर पवित्र बनने का पैग़ाम देते हैं। किसी धर्म-पिता को मैसेन्जर या पैग़म्बर कह नहीं सकते हैं। वे तो आकर अपना धर्म स्थापन करते

हैं, उसके बाद उनके धर्मवंश की आत्मायें आती जाती हैं पार्ट बजाने के लिए। वे कोई वापस ले जाने के लिए पैगाम नहीं देते, गाइड नहीं बनते हैं। लिबरेटर-गाइड एक ही परमपिता परमात्मा शिव है।''

सा.बाबा 15.08.11 रिवा.

"दुख-सुख सब आत्मा अनुभव करती है, शरीर के द्वारा। पढ़ाई के संस्कार भी आत्मा में हैं।... अभी तुम बच्चों को कितनी रोशनी मिल रही है। इस नॉलेज से तुमको बहुत खुशी रहती है। बादलों को सागर से रिफ्रेश होकर फिर जाकर वर्षा बरसानी है।... बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। सर्विस, सर्विस और सर्विस, सदा यही तात लगी रहे।''

सा.बाबा 2.08.11 रिवा.

"अभी तुम रोशनी में आये हो। जानते हो पुरानी दुनिया का विनाश होना है, इसलिए इस महाभारत लड़ाई के पहले बाप से अपना वर्सा तो ले लेवें।... बच्चियों पर अत्याचार भी होते हैं। यह पक्का नशा रहना चाहिए कि हमको पावन तो जरूर बनना है। ऐसे नशे में रहने वाले ही किसको समझा सकेंगे। बाप को याद करना है और पवित्र बनना है।''

सा.बाबा 18.07.11 रिवा.

"धर्म-स्थापकों को गुरु भी नहीं कहा जा सकता। वे तो आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं, उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती रहती है। गुरु उसको कहा जाता है, जो सद्गति करे। धर्म-स्थापक किसकी सद्गति तो करते नहीं हैं। गुरु तो एक बाप ही है, जिसको सर्व का सद्गति दाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं।''

सा.बाबा 28.09.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और कर्म का विधि-विधान

यह सृष्टि कर्म और फल पर आधारित एक खेल है। आत्मायें जैसे कर्म करती हैं, उस अनुसार उसका फल पाती हैं। कर्म और फल के निश्चित विधि-विधान हैं, जिनका ज्ञान होने पर ही आत्मायें श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती हैं। इस तरह का कर्म और फल का विधि-विधान किसी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक गुरु, दार्शनिक ने नहीं बताया है, इसलिए आत्माओं के कर्मों में निरन्तर गिरावट होती गई है, जिसके फलस्वरूप आत्माओं में दुख-अशान्ति बढ़ती ही जाती है। भले सभी आत्मायें एक-दूसरे को अच्छे कर्म करने के लिए कहते हैं परन्तु जब आत्मा को उसके विधि-विधान का पता न हो, उस पर निश्चय न हो, तब तक आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ नहीं हो सकती है। इसलिए सतयुग से लेकर कलियुग

अन्त तक कोई आत्मायें सुकर्म करने में समर्थ नहीं होती हैं। इसलिए सतयुग-त्रेता के कर्मों को भी अकर्म कहा जाता है, सुकर्म नहीं। सुकर्मो से ही आत्माओं और समस्त विश्व की जड़-जंगम प्रकृति की चढ़ती कला होती है।

"अभी तुमको सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान मिल रहा है। लक्ष्मी-नारायण को भी यह ज्ञान नहीं रहता है। वहाँ यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। ... इस याद की यात्रा से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह है गॉड फादरली युनिवर्सिटी। गॉड फादर पढ़ाते हैं, तुम्हारी आत्मा पढ़ती है। अभी बाप तुमको कर्मों का ज्ञान देकर सुकर्म करना सिखाते हैं। इस समय सबके कर्म विकर्म होते हैं, सतयुग में तुम्हारे कर्म अकर्म होते हैं।''

सा.बाबा 8.10.11 रिवा.

"यह है सच्चा-सच्चा रियल ज्ञान, जो रुहानी बाप रुहानी बच्चों प्रति देते हैं। तुमको इस ज्ञान को धारण कर देही-अभिमानी बनना है। बाकी सब हैं देहाभिमानी। देहाभिमानी पतित मनुष्य जो कर्तव्य करते हैं, वे पतित ही करते हैं। दान-पुण्य आदि जो भी करते हैं, वह सब भी पतित ही बनाते हैं।''

सा.बाबा 17.05.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और योग

आत्माओं के पावन बनने के दो साधन हैं। एक है अपने पुरुषार्थ अर्थात् योगबल से पावन बनना और दूसरा है अन्त समय सजायें खाकर या कहें ड्रामा अनुसार पावन बनना। जो अपने पुरुषार्थ से पावन बनते हैं, उनको नई दुनिया स्वर्ग का वर्सा मिलता है और जो ड्रामा अनुसार पावन बनते हैं, वे परमधाम में जाकर रहते हैं और ड्रामा अनुसार अपने समय पर आकर अपना पार्ट बजाते हैं। इस योग के लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनती है। और दुनिया में जितने भी ज्ञान हैं, उनसे ड्रामा अनुसार जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पतित अर्थात् तमोप्रधान दुखदायी ही बनती जाती है।

"यहाँ तुम जानते हो - इस पढ़ाई से हम सो डबल सिरताज देवी-देवता बन रहे हैं। ... यह पुरानी दुनिया तो खलास होने की है, हम विश्व का मालिक बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व का मालिक बनाने वाला जरूर विश्व का रचयिता ही होगा। शिवबाबा ही हमको पढ़ाकर, राजयोग सिखाकर विश्व का मालिक बना रहे हैं। बाप ने समझाया है कि बच्चे आत्माभिमानी बनो।''

सा.बाबा 2.09.11 रिवा.

"बाबा कहते हैं - मैं रूप-बसन्त हूँ, मेरे से तुमको कितने अमूल्य ज्ञान रतन मिलते हैं, जिनसे

तुम अपनी झोली भरते हो। ... तुम्हारी आत्मा भी रूप-बसन्त है। अपने को देखते रहो कि हम कितना ज्ञान रतन धारण करते हैं और कितना ज्ञान डान्स करते हैं और कितना ज्ञान रत्नों का दान करते हैं। सबसे अच्छा रत्न है मनमनाभव। जैसे बाप में ज्ञान भरा हुआ है, वैसे तुमको भी आप समान बनाते हैं।''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

"तुम हो लाइट-हाउस, सबको रास्ता बताने वाले। सबको बोलो - हम तुमको बहुत अच्छा रास्ता बताते हैं। पतित-पावन एक ही निराकार बाप है, उनको याद करने से तुम पावन बन जायेंगे। ... शिव भगवानुवाच - विनाश काले परमात्मा से विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति और विनाश काले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति। तुम्हारी जितनी परमात्मा से प्रीतबुद्धि होगी, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 12.08.11 रिवा.

"यह है योगबल, जिससे आत्माओं के पाप कटते हैं। जिसके योगबल से पाप कट जाते हैं, उसको खुशी का पारा चढ़ जाता है। बच्चे अपनी अवस्था को आपही जान सकते हैं। जब अवस्था अच्छी होती है तो सर्विस का शौक बहुत अच्छा होता है। जितना-जितना खुद पावन बनते जायेंगे, उतना औरों को पावन बनाने का उमंग आयेगा।''

सा.बाबा 8.08.11 रिवा.

"बाप सर्व का दुखहर्ता, सुखकर्ता है, बहुत प्यार है। उनसे प्यारी चीज़ कोई और होती नहीं है।... सभी आत्मायें उस बाप को याद करती हैं, पुकारते हैं - बाबा आकर हमको पावन बनाओ। अभी तुम्हारी आत्मा कहेगी - बाबा आया हुआ है, हमको पावन बना रहे हैं। ... बाप कहते हैं - अब मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे।''

सा.बाबा 25.07.11 रिवा.

"सर्वशक्तियों के मालिक कभी यह संकल्प कर सकते हैं कि हमारे पास सहनशक्ति नहीं है, माया को परखने की शक्ति नहीं है या ज्ञान के खज़ाने को सम्भालने की शक्ति नहीं है या संकल्पों को समाने की शक्ति नहीं है या खज़ाने को सिमरण करने की शक्ति नहीं है ? कितना भी कोई कार्य में बुद्धि विस्तार में गई हो, लेकिन विस्तार को एक सेकेण्ड में समा लें।''

अ.बापदादा 23.6.73

"बाप की याद भूल जाती है तो अवस्था मुरझा जाती है। यह ज्ञान है संजीवनी बूटी, जो सदा अपने पास रखनी है और औरों को भी सुरजीत करने के लिए देते रहना है, सबको बाप की याद दिलाते रहना है। ... सदा अपनी दिल से पूछते रहो, अपनी जाँच करते रहो कि हम बाप की याद में हैं और एक-दो को सावधान करते रहो।... अगर अपनी उलझन में होंगे तो दवाई लगेगी नहीं।''

सा.बाबा 14.09.11 रिवा.

"कल्प पहले भी बाप ने आकर पढ़ाया था और राजयोग सिखाया था, वैसे ही हू-ब-हू अभी भी पढ़ा रहे हैं। ... भाषण तो अच्छा करते हैं परन्तु योग कितना है, वह भी देखना है। याद से ही जन्म-जन्मान्तर के विकर्म विनाश होंगे। यह स्प्रीचुअल नॉलेज कल्प-कल्प स्प्रीचुअल बाप शिवबाबा ही आकर देते हैं। और कोई भी यह ज्ञान दे न सके।''

सा.बाबा 6.09.11 रिवा.

"पतितों को पावन बनाने वाला एक बाप ही है। बाकी और कोई देहधारी गुरु किसको पावन बना न सकें। ... तुम्हारे में भी जो ज्ञानवान बच्चे हैं, वे तीखे होते हैं। ड्रामा अनुसार यह नूँध है। तुम्हारे में भी महावीरपना चाहिए, वह आयेगा बाप की याद में रहने से। बाबा कहते हैं - सवेरे-सवेरे उठकर बाप को याद करो। तो बहुत मज़ा आयेगा।''

सा.बाबा 11.06.11 रिवा.

"तुम आत्मायें गोल्डन एज में सतोप्रधान थे, फिर तुम्हारे में अलाए पड़ी है। खाद पड़ते-पड़ते तुम पावन से पतित बन पड़े हो। ... अब बाप कहते हैं - हे आत्मा, तुम मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे से खाद निकलेगी और तुम पावन बन जायेंगे। यह है योग अग्नि। ... चलते-फिरते, कर्म करते बुद्धि से मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह है मेहनत।''

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"यह तो तुम बच्चे जानते हो कि आत्मा में ही पाप हैं और आत्मा में ही पुण्य होता है। ... बाप है ब्लॉटिंग पेपर, वह आत्माओं का सारा पाप चूस लेता है, इसलिए सभी उनको याद करते हैं।... तुम आत्मा भी बिन्दी हो, मैं बाप भी बिन्दी हैं। तुम अपने को बिन्दी आत्मा समझ, मुझ बिन्दी बाप को याद करो, तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे।''

सा.बाबा 28.03.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और पुरुषार्थ

"इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। तुम देही-अभिमानी बनों तो बाप की याद भी रहे और सर्विस की भी उन्नति होती रहे। जिनको ऊंच पद पाना है, वे सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। अगर तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी नहीं करेंगे।... अगर बुद्धि में नहीं बैठता, धारणा नहीं होती है तो खुशी भी नहीं रहती है। जिनको ज्ञान की धारणा होती है, उनको खुशी भी बहुत रहती है।''

सा.बाबा 29.08.11 रिवा.

"अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का पूरा ज्ञान है। तुम समझते हो

बरोबर सतयुग में भारत स्वर्ग था, तुम बहुत सुखी थे। ... अभी तुम स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी तुम बने हो ईश्वरीय सम्प्रदाय के, दुनिया में और सब हैं आसुरी सम्प्रदाय के। ... भक्ति में सब कहानियाँ सुनाते हैं। कहानियों को ज्ञान नहीं कहा जा सकता है। उनसे कोई सद्गति को पा नहीं सकते।''

सा.बाबा 11.08.11 रिवा.

"हम आत्मा हैं, हम आत्माओं को अपने घर शान्तिधाम जाना है, बाबा हमको लेने के लिए आये हैं। सारा दिन बुद्धि में यह विचार सागर मन्थन चलना चाहिए।... बच्चों को यह अविनाशी खज़ाना मिलता है। यह है आत्माओं के लिए भोजन। अभी हम परमपिता परमात्मा द्वारा पढ़ रहे हैं, मनुष्य से देवता, राजपद पाने के लिए। यह घड़ी-घड़ी याद आना चाहिए।''

सा.बाबा 14.09.11 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को देहाभिमान छोड़कर देही-अभिमानी बनना पड़े। हम आत्मा हैं, यह तो पुराना शरीर है, अभी हमको इसको छोड़कर नया फर्स्टक्लास शरीर लेना है। सर्प का मिसाल है ना।... अभी तुम बच्चों की बुद्धि में यह ज्ञान है, सारा दिन यह ज्ञान बुद्धि में टपकना चाहिए। इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी बुद्धि से भूल जाना है।''

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

"बुद्धियोग वहाँ लगा होता है तो अन्दर में खुशी होती है, अभी हमको वापस घर जाना है। यह मन्मनाभव का जबरदस्त मन्त्र है, यह सबको सुनाना है। ... शास्त्र पढ़ने वालों की बुद्धि में यह नहीं आयेगा। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम भविष्य के लिए राजयोग सीख रहे हैं। ... ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करते, अपने को खुशी में लाना है।''

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

"इस नॉलेज से तुमको बहुत धन मिलता है। योग है सोर्स ऑफ हेल्थ अर्थात् योग से निरोगी काया मिलती है और ज्ञान से वेल्थ मिलती है। ज्ञान को जो जितना धारणा करते हैं और दान करते हैं, वे उतना पद पाते हैं। ... पूरा याद नहीं करते तो विकर्म विनाश नहीं होते हैं। फिर सजायें खानी पड़ती हैं और पद भी भ्रष्ट हो जाता है।''

सा.बाबा 15.04.11 रिवा.

"माया बहुत विघ्न डालती है। तुमको सब विघ्नों को पार करना है। बच्चों को ऊंच पद पाने के लिए कुछ तो मेहनत करनी चाहिए ना। अपने पुरुषार्थ से ही तुम अपनी प्रॉलब्ध पाते हो।... तुमको एक तो बाप को विकारों का दान देना है और दूसरा बाप से जो अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन मिलता है, वह और सबको दान करना है, जिस अविनाशी धन को धारण करने और दान करने से तुम इतने धनवान बनते हो।''

सा.बाबा 15.04.11 रिवा.

"अचानक के समय बिन्दु बनना है, बिन्दु रूप में सबको देखना है और व्यर्थ समय-संकल्प को बिन्दु लगाना है। इस स्थिति का अभ्यास अब बढ़ाना है और इसका वायुमण्डल फैलाना है। इसके लिए हर एक को अपने लिए कोई न कोई समय निकालने की विधि बनानी है अर्थात् यज्ञ सेवा करते, अपनी दिनचर्या प्रमाण अपना समय निश्चित करना है और आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें बाप द्वारा निमित्त बन पहुँचानी हैं। इससे स्व की सेवा भी ऑटोमेटिक हो जायेगी।''

13.03.11 अव्यक्त सन्देश

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और भारत

भारत आध्यात्मिक ज्ञान का मूल स्थान है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के मूल स्रोत ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा भारत में ही अवतरित होते हैं और यहाँ से ही आध्यात्मिक ज्ञान की सरिता बहाते हैं अर्थात् ज्ञान गंगाओं को सारे विश्व में सर्वात्माओं के कल्याणार्थ भेजते हैं, जिससे विश्व की सर्व आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति का कल्याण होता है अर्थात् जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियाँ पावन सतोप्रधान बनती हैं।

"यह ज्ञान तुमको अभी मिल रहा है। तुम जानते हो हम इन्कागनीटो आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा सुनते हैं। बाप भी इन्कागनीटो है, वह इस शरीर द्वारा सुना रहे हैं। अभी बाप आया हुआ है।... तुम बच्चों को नशा है कि हमारा भारत बहुत साहूकार था, अभी ग़रीब बना है। सतयुग में एक ही देवी-देवता धर्म था, दूसरा कोई धर्म नहीं था। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही बताते हैं।''

सा.बाबा 16.08.11 रिवा.

"यह भी एक खेल बना हुआ है, जो फिर रिपीट होता रहता है। इस अन्तिम जन्म में ही तुम बाप को और सृष्टि-चक्र को जानते हो। कैसे नई दुनिया की स्थापना होती है, सो भी तुम अब ही नम्बरवार जानते हो। यह सारा खेल भारतवासियों पर ही बना हुआ है। ... यह नॉलेज सिवाए बाप के और कोई दे न सके। बाप ने ही ये सब चित्र आदि बनवाये हैं।''

सा.बाबा 20.05.11 रिवा.

"यह बेहद का ड्रामा है, हम सभी इस ड्रामा के एक्टर्स हैं। यह कोई भी नहीं जानते हैं। तुम बच्चे अब समझते हो कि इस ड्रामा में भारतवासियों का ही ऑलराउण्ड पार्ट है। अभी तुम मूलवतन से लेकर सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन सबको जान गये हो। तुमको अभी सच्चा ज्ञान है। यह दुनिया काँटों का जंगल है। अभी हम बाप से यह ज्ञान लेकर फूल अर्थात् मनुष्य से देवता बनते हैं।''

सा.बाबा 21.05.11 रिवा.

"भारत गोल्डन एज्ड था, सो अभी आइरन एज्ड बना है। अब तुम बच्चों ने ड्रामा को अच्छी रीति समझ लिया है। ... शिवबाबा को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, तो जरूर वह हेविन का गेट खोलने आयेगा और आयेंगे भी तब जब हेल होगा। बाबा हेल और हेविन के संगम पर आकर हेविन का द्वार खोलकर हेल का द्वार बन्द कर देते हैं।''

सा.बाबा 4.04.11 रिवा.

"वे जो साधना करते हैं, ब्रह्म में लीन होने की, वह अयथार्थ है क्योंकि ब्रह्म में तो कोई लीन होता नहीं है। ब्रह्म महतत्व कोई भगवान भी नहीं है।... सर्व का सद्गतिदाता एक बाप ही गाया हुआ है, वही सत्य सुनाते हैं।... तुम जानते हो - भारत सच खण्ड था, अभी झूठखण्ड बना है। बाप भी भारत में ही आते हैं, इसलिए उनकी शिवजयन्ति भी मनाते हैं।''

सा.बाबा 26.03.11 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन और संगमयुग

सतयुग-त्रेता है संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की प्रॉलब्ध, इसलिए वहाँ न यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान होता है और न ही भक्ति मार्ग का ज्ञान होता है। विज्ञान के द्वारा अविष्कार की गई कुछ साधन-सामग्री, तकनीकी का उपयोग तो वहाँ होता है परन्तु जैसे अभी विज्ञान का ज्ञान है, उसका विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन है, वह नहीं होगा और न ही मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन आदि का ज्ञान होगा। वहाँ ये सब स्वभाविक रूप में होंगे। यर्थार्थ रीति आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, धार्मिक ज्ञान, दर्शन का ज्ञान कल्प के संगमयुग पर ही होता है।

"अभी तुम समझते हो - इस अनादि बने-बनाये ड्रामा के प्लैन अनुसार अब संगमयुग पर बाप को आकर हमसे यह पुरुषार्थ कराना ही है। कल्प-कल्प बाप यह पुरुषार्थ कराते आये हैं। तुमने कितना समय भक्ति की है, यह भी बाप सिद्ध कर बतलाते हैं। जिन्होंने पहले-पहले भक्ति शुरू की है, वे ही पहले आकर ज्ञान लेंगे और फिर सूर्यवंशी बनेंगे।''

सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

"संगठन की शक्ति ही इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है। इससे ही विश्व में सारे कल्प के अन्दर वह समय गाया हुआ है। एक धर्म, एक राज्य, एक मत - यह स्थापना कहाँ से होगी ?... ऐसे संगठन के रूप में एवर-रेडी हो ? कल्प पहले की रिजल्ट तो निश्चित है ही,

लेकिन अब घूँघट को हटाओ। ... अब अपने निश्चय को साकार रूप में लाओ।''

अ.बापदादा 14.04.73

"आत्मा अविनाशी है, वह कब विनाश नहीं होती है। उसमें पार्ट भी अविनाशी नूँधा हुआ है। यह बेहद का ड्रामा है। नटशेल में बाप इसका राज़ समझाते हैं कि यह ड्रामा कैसे चलता है।... गीता सर्वशास्त्रमई शिरोमणि है। भगवान ने ही गीता सुनाई है। बाप संगमयुग पर ही गीता ज्ञान देकर, राजयोग सिखाकर सतयुग पावन दुनिया की नई राजधानी स्थापन करते हैं। सतयुग में तो स्थापन नहीं करेंगे।''

सा.बाबा 10.09.11 रिवा.

"दुनिया को पता नहीं बेहद अन्धियारा और सवेरा किसको कहा जाता है। वास्तव में यह अन्धियारा और सवेरा कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। अभी तुम्हारा अज्ञान अन्धियारा दूर होता है। गाते भी हैं - ज्ञान सूर्य प्रगटा... भक्ति को अन्धियारा और ज्ञान को रोशनी कहा जाता है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि सवेरा हो रहा है।''

सा.बाबा 5.09.11 रिवा.

"बड़ी मन्जिल है। तुमको देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। यह सारी नॉलेज अभी तुमको मिल रही है। अभी तुम त्रिकालदर्शी बनें हो, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सदैव सारा सृष्टि-चक्र तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए। बाप समझाते हैं - तुम चलते-फिरते लाइट-हाउस हो। हर एक को शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बताने वाले हो।''

सा.बाबा 23.03.11 रिवा.

आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, भक्ति की हिस्ट्री-जॉग्राफी

परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर, इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप है, उसमें सारे कल्प का ज्ञान है और प्रजापिता ब्रह्मा का इस सृष्टि-चक्र में आदि से अन्त तक पार्ट है, इसलिए उसमें सारे कल्प के उत्थान-पतन के संस्कार और अनुभव है। इसलिए ज्ञान सागर शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं और ब्रह्मा बाबा इस सृष्टि-चक्र की अनुभव-युक्त हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं। जिससे आत्माओं को इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का अनुभव-युक्त ज्ञान भी होता है, जो आत्मा को अति हर्ष प्रदान करता है।

"आत्मा अविनाशी है, आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। आत्मा कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाती है, वह अब तुमको मालूम पड़ा है। हम सूर्यवंशी थे, फिर चन्द्रवंशी बनें। ... अब

फिर हमको सूर्यवंशी बनना है। अभी बाप हमको सतोप्रधान बनने की शिक्षा देते हैं। गीता में है भगवानुवाच - मामेकम् याद करो।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - यह 84 जन्मों का चक्र है, जो हर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होता रहता है।... इस सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को मैं ही जानता हूँ। भक्ति मार्ग वालों को यह ज्ञान हो नहीं सकता। वह सब है भक्ति का ज्ञान। ... अभी तुम्हारी ईश्वर के द्वारा तकदीर बनती है, इसलिए बुलाते हैं - हे दुख-हर्ता, सुख-कर्ता आओ।''

सा.बाबा 4.05.11 रिवा.

"सतयुग को भी ऐसा नहीं कहेंगे कि ईश्वर का राज्य है। राज्य तो देवी-देवताओं का है। बाप कहते हैं - मैं राज्य नहीं करता है, राज्य स्थापन करता हूँ।... बाप फिर से दैवी राज्य स्थापन कर रहे हैं। सच्चा बाबा, तुमको अपनी और रचना के आदि-मध्य-अन्त की सच नॉलेज दे रहे हैं। बाप तुमको बेहद की हिस्ट्री जॉग्राफी सुनाते हैं।''

सा.बाबा 5.04.11 रिवा.

आध्यात्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान का दाता परमात्मा है, वह संगमयुग पर आकर यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना करते हैं, विश्व की सर्वात्माओं और जड़-जंगम प्रकृति को सतोप्रधान बनाते हैं। इस दिव्य कर्तव्य के लिए परमात्मा भारत में आते हैं। परमात्मा भारत में आकर आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसके प्रचार-प्रसारार्थ बच्चों को विश्व में भेजते हैं। बाबा जो आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, उस ज्ञान को जिन आत्माओं ने सुना, वे उसकी स्मृति के आधार पर द्वापर में गीता शास्त्र लिखते हैं परन्तु वह यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता है, जिसके लिए बाबा ने कहा है - गीता में आटे में नमक के समान कुछ सत्य है परन्तु पूर्ण सत्य नहीं है।

"बेहद का बाप अभी आया हुआ है। बाप कल्प-कल्प आते हैं। हमारा राज्य भाग्य माया रावण ने छीन लिया, बाप आकर हम आत्माओं को वह फिर से देते हैं। ऐसे नहीं कि कोई लड़ाई से छीना गया है। नहीं, रावण राज्य में हमारी मत भ्रष्टाचारी हो जाती है, तो हमारा राज्य भाग्य खत्म हो जाता है।... तुम बच्चों की बुद्धि में कितनी खुशी होनी चाहिए, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।''

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

"वण्डर है ना - कलियुग के अन्त में कुछ भी सोना देखने में नहीं आता है, फिर सतयुग सोने आदि की सब खानियाँ भरतू हो जाती हैं। वहाँ सोने के महल बनते हैं। ... बाप सारे विश्व पर

ज्ञान वर्षा करते हैं, जिससे सारा विश्व हरा-भरा हो जाता है। खानियाँ भी हीरे-जवाहरों से भरपूर हो जाती हैं। अभी तुम बच्चों को कितना खुशी में रहना चाहिए।''

सा.बाबा 2.07.11 रिवा.

"अभी तुम सतयुग के लिए तैयार हो रहे हो। तुम जब तक तैयार होंगे तब तक वहाँ जो भी आत्मायें हैं, वे सब आ जायेंगी, फिर विनाश होगा। सभी आत्मायें वापस घर जायेंगी, फिर तुम आकर नई दुनिया में राज्य करेंगे और सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होगा।... यह ज्ञान बाप ही देते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है।''

सा.बाबा 7.09.11 रिवा.

"बाकी मैं आत्मा बिन्दी हूँ, मेरे में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, बाप भी बिन्दी है, उसमें सारा ज्ञान है। उनको याद करना है। यह बात कोई भी समझते नहीं हैं।... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज बाप ही देते हैं।... सिर्फ हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने से काम नहीं चलेगा। परन्तु पावन कैसे बनें, जिससे सज़ा न खानी पड़े, उसके लिए याद का पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

वैज्ञानिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सतयुग-त्रेता में विज्ञान के क्षेत्र में कोई नया अविष्कार नहीं होता है। संगम युग पर विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर होता है, नित्य नये-नये अविष्कार होते हैं, जिनका प्रयोग आत्माओं की सुख-सुविधा में, पुरानी दुनिया के विनाश में और नई दुनिया की स्थापना में काम आता है। फिर सतयुग के आदि से वह विज्ञान भी धीरे-धीरे विलुप्त होता जाता है। फिर द्वापर से नये सिर अविष्कारों की शुरूआत होती है और बढ़ते-बढ़ते कल्पान्त में पुन: अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है।

मनोवैज्ञानिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सतयुग-त्रेता में आत्माओं को कोई मानसिक अशान्ति नहीं होती है, इसलिए वहाँ किसी प्रकार के मनोविज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है। द्वापर से जब आत्माओं में मानसिक अशान्ति आती है, तब से उस मानसिक अशान्ति से मुक्त होने के लिए मनोविज्ञान की आदि होती है और मनोवैज्ञानिक अनेक प्रकार के विधि-विधानों प्रतिपादन करते हैं, जिनके उपयोग से आत्मायें उन मनो-विकारों से मुक्त होने का पुरुषार्थ करते हैं और आंशिक रूप में सफलता प्राप्त करते हैं।

राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी पर हम विचार करें तो देखेंगे कि सृष्टि आदि से अन्त तक राजशाही ही चलती है और उसमें आत्मायें सुखी भी होती हैं तो दुखी भी होती हैं। जब राजायें सतोप्रधान होते हैं तो प्रजा सुखी होती है और जब राजायें तमोप्रधान बन भोगी-विलासी बन जाते हैं तब प्रजा दुखी होती है और सृष्टि-चक्र के अन्त में दुखी प्रजा राजशाही को खत्म कर प्रजातन्त्र की स्थापना करती है। परन्तु सृष्टि-चक्र के विधि-विधान और नियमानुसार सृष्टि और आत्मायें तमोप्रधान ही बनती जाती हैं, जिससे दुख-अशान्ति बढ़ती ही जाती है।

कल्पान्त में ऐसे दुख-अशान्ति के समय परमपिता परमात्मा आकर सहज राजयोग के द्वारा पुन: प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की स्थापना करते हैं, जिससे नये कल्प का आरम्भ होता है और विश्व में दैवी राजशाही की स्थापना होती है।

"यह है रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ। कहते हैं ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई। यह है स्वराज्य के लिए ज्ञान यज्ञ। इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। तुम अभी राजयोग सीख रहे हो, नई दुनिया में राज्य करने के लिए। ... नेचुरल केलेमिटीज़ आदि भी होंगी। यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि बैठना चाहिए।''

सा.बाबा 25.06.11 रिवा.

"सतयुग में एक भारत ही था, और सब शान्तिधाम में थे। बच्चों को यह स्मृति में रखना चाहिए कि सतयुग-त्रेता किसको कहा जाता है और द्वापर-कलियुग किसको कहा जाता है, उसमें कौन-कौन राज्य करते थे। अभी तुम्हारी बुद्धि में पूरी नॉलेज है। जैसे बाप को रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी होना चाहिए। बाप जो ज्ञान देते हैं, वह बच्चों में भी जरूर होना चाहिए। बाप आकर बच्चों को आप समान बनाते हैं।''

सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

"यह ब्रह्मा-सरस्वती ही पहले राजा-रानी बनेंगे क्योंकि उन्होंने सबसे जास्ती मेहनत की है, तब तो पूजे जाते हैं। ... अभी तुम बेगर टू प्रिन्स बन रहे हो, बनाने वाला है शिवबाबा रुहानी बाप। तुम यहाँ पढ़कर 21 जन्मों के लिए प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो। इस नॉलेज से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। अभी तुम समझते हो श्रीकृष्ण जो सतयुग का पहला पिन्स था, सो ही 84 जन्मों के बाद बेगर बना है।''

सा.बाबा 29.09.11 रिवा.

धार्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सतयुग-त्रेता में एक ही धर्म होता है, फिर द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो विभिन्न धर्म-पितायें आकर अपने वंश धर्मवंश की स्थापना करते हैं, उनमें पहले-पहले इब्राहम आकर इस्लाम धर्म, फिर बुद्ध आकर बौद्ध धर्म, उसके बाद क्राइस्ट आकर क्रिश्चियन धर्म की स्थापना करते हैं और यह धर्मो का झाड़ बढ़ता जाता है। क्राइस्ट के बाद भी अनेक धर्म-मठ-पंथों के स्थापक आकर अपने धर्म-मठ-पंथ की स्थापना करते रहते हैं और उस धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आती रहती हैं।

"पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा जरूर लेना है और स्वदर्शन चक्रधारी भी बनना है। तुम्हारी ये मिशन है मनुष्य को देवता, नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने की। ... ये हैं अविनाशी ज्ञान रतन। मनुष्य तो इनको पत्थर समझ फेंक देते हैं, कुछ भी समझते नहीं हैं। हाँ, जो इस धर्म वाले होंगे, उनको ही टच होगा, वे ही इस ज्ञान को समझेंगे और धारण करेंगे।''

सा.बाबा 27.09.11 रिवा.

दार्शनिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सतयुग-त्रेता में सभी प्रकार से समाज में शान्ति-समृद्धि होती है, किसी प्रकार की अशान्ति, कलह-क्लेष नहीं होता है, इसलिए वहाँ किसी प्रकार के दर्शन की आवश्यकता नहीं होती है। द्वापर से जब समाज में सम्बन्धों में कटुता आती है, तब उसके सुधार के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है और विभिन्न दार्शनिक आकर अपने दर्शन से कुछ राहत प्रदान करते हैं।

"दुनिया में मनुष्य, मनुष्य को भक्ति सिखलाते हैं, वे किसको ज्ञान देकर सद्गति नहीं कर सकते। वेद-शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के। सद्गति तो ज्ञान से होती है। सब पुनर्जन्म को भी मानते हैं। बीच में तो कोई भी वापस जा नहीं सकता। सृष्टि-चक्र के अन्त में बाप ही आकर सबको वापस ले जाते हैं। इतनी सब आत्मायें कहाँ जाकर रहेंगी ? वहाँ भी सबके रहने का अलग-अलग सेक्शन है।''

सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"गाया जाता है - नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इन्कम। वह है शास्त्रों की फिलॉसॉफी, यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। शास्त्र आदि पढ़कर भी बहुत धन कमाते हैं।... वह कोई यथार्थ ज्ञान नहीं है, यथार्थ ज्ञान तो एक ज्ञान सागर बाप ही देते हैं। जब तक किसको यह रुहानी नॉलेज नहीं मिली है, तब तक उनकी बुद्धि में वह शास्त्रों की फिलासॉफी रहती है।''

सा.बाबा 15.04.11 रिवा.

भक्ति की हिस्ट्री-जॉग्राफी

सतयुग-त्रेता में आत्मायें सुख-शान्ति सम्पन्न होती हैं, इसलिए किसी प्रकार से भक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, आत्माओं में आत्मिक शक्ति की कमी होने के कारण देहाभिमान प्रभावी हो जाता है, जिससे आत्माओं में विकार आते हैं, जिनके वशीभूत विकर्म होने से आत्मायें उसके फलस्वरूप दुखी होती हैं, तब उस दुख से मुक्त होने के लिए भक्ति आरम्भ होती है और पहले-पहले राजा विक्रमादित्य शिवबाबा का सोमनाथ का मन्दिर बनाते हैं। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी अर्थात् एक शिवबाबा की होती है, फिर देवताओं की, फिर गुरुओं आदि की और कल्पान्त में जड़ तत्वों की भी भक्ति होने लगती है। अन्त में तो भूत-प्रेत आदि की भी भक्ति होने लगती है। भक्ति को रोचक बनाने के लिए भक्त अनेकानेक विधि-विधान बनाते हैं।

"बाप ने कल्प पहले भी कहा था कि तुम इन जप-तप आदि करते भी नीचे ही गिरते जाते हो। सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है।... यह बेहद की सीढ़ी तुम उतरते हो, फिर चढ़ते हो। तुम ही फुल सीढ़ी उतरते हो और फिर तुम ही फुल सीढी चढ़ते हो। और कोई फुल सीढ़ी उतरते-चढ़ते नहीं हैं। फुल सीढ़ी का ज्ञान पाने से तुम कितना ऊंच पद पाते हो।''

सा.बाबा 27.04.11 रिवा.

"ऐसे मत समझो कि सतयुग में जो राजायें-महाराजायें बनते हैं, उनकी भक्ति मार्ग में राजाई गुम हो जाती है। जो जास्ती दान-पुण्य करते हैं, वे भक्ति मार्ग में भी राजाई में आते हैं। परन्तु वे फिर हो जाते हैं विकारी राजायें। ... तुम भी अभी बाप पर बलि चढ़ते हो, राजाई के लिए पुरुषार्थ करते हो, बाप से मिले ज्ञान रत्नों का दान करते हो।''

सा.बाबा 1.07.11 रिवा.

"तुम जानते हो - यह बेहद का ड्रामा है, इनसे कोई भी छूट नहीं सकता है। मनुष्य जब दुख से तंग होते हैं तो कहते हैं - भगवान ने ऐसा खेल रचा ही क्यों है।... यह तो सुख-दुख का अनादि बना हुआ खेल है। अन्त में क्या होता है, वह तुम प्रैक्टिकल में देखेंगे। पहले से ही तो बाप नहीं दिखायेंगे। पिछाड़ी का अभी थोड़ेही दिखा देंगे। वह तो जब होगा, तब उसको भी साक्षी होकर देखेंगे।''

सा.बाबा 1.07.11 रिवा.

"इस बेहद की दुनिया का अब विनाश होना है। बेहद का बाप तुमको बेहद का ज्ञान सुनाते हैं। हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी की बातें तो तुम सुनते आये हो, लेकिन यह किसको भी पता नहीं कि इन लक्ष्मी-नारायण ने कैसे राज्य किया। इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई भी नहीं जानते हैं।... इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल फादर बच्चों को देते हैं।''

सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

"ज्यादा धन का लोभ भी नहीं रखना है। अन्त समय दुख के पहाड़ गिरने हैं, सारी मिल्कियत सेकण्ड में खलास हो जायेगी। बाप से तुमको सेकण्ड में वर्सा मिलता है।... लड़ाई लगेगी, नेचुरल केलेमिटीज़ भी होगी। सारी पुरानी दुनिया की सफाई तो होगी ना। अभी तुम बच्चों को बाप द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्न मिल रहे हैं, तुम्हारी ज्ञान रत्नों से झोली भर रही है। ज्ञान का एक-एक रतन बहुत वेल्युएबुल है।''

सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

"द्वापर से कलियुग अन्त तक भक्ति मार्ग चलता है, उसमें ज्ञान होता नहीं है। ज्ञान से होती है सद्गति। जब तक सर्व का सद्गतिदाता बाप न आये, तब तक किसकी सद्गति हो न सके। बाप कहते हैं - मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। ... जब सृष्टि-चक्र पूरा होता है, तब ही बाप आकर सर्वात्माओं को वापस ले जाते हैं। इसको कहा जाता है रुहानी ज्ञान, जो सुप्रीम रूह ही देते हैं।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

स्वर्ग-नर्क की हिस्ट्री-जॉग्राफी

अभी संगमयुग पर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं कि यह सृष्टि चक्रवत् चलती है। इसमें आधा कल्प स्वर्ग होता है और आधा कल्प नर्क होता है अर्थात् आधा कल्प रामराज्य होता है और आधा कल्प रावण राज्य होता है।

स्वर्ग के आदि की जनसंख्या 9,16,108 होती है और स्वर्ग के अन्त की जनसंख्या 33 करोड़ होती है, इसलिए 33 करोड़ देवताओं का गायन है। स्वर्ग में प्रकृति सुखदायी होती है, नर्क अर्थात् आधा कल्प के बाद प्रकृति सुख और दुख दोनों कर्मानुसार देती है।

स्वर्ग में एक भारत ही होता है परन्तु भारत का विस्तार सुदूर पश्चिम मिस्र, योरोप, पूर्व में इण्डोनेशिया, उत्तर में रूस तक होता है। द्वापर के बाद भारत का विघटन होता है और विघटित होकर विभिन्न देशो और सभ्यताओं का उद्गम होता है और विश्व के अन्य खण्डों में भी जनसंख्या का विस्तार होता है और विश्व वर्तमान स्वरूप में आ जाता है।

कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि अर्थात् नर्क और स्वर्ग के संगम के समय में तृतीय विश्व-युद्ध, प्राकृतिक आपदायें, गृहयुद्ध आदि होता है और आत्मायें शरीर छोड़कर घर वापस जाती हैं। पृथ्वी जो 23.5 अंश झुकी है, वह 90 अंश पर सीधी हो जाती है और विश्व के विभिन्न भूभाग जो अलग-अलग हैं, वे जुड़ जाते हैं और कई जो जुड़े हैं, वे विघटित

हो जाते हैं। सेसे ही त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि अर्थात् स्वर्ग और नर्क के संगम पर भी भूकम्प आदि होते हैं, जिससे पृथ्वी जो 90 अंश पर सीधी होती है, वह 23.5 अंश झुक जाती है, जिससे पृथ्वी का स्वरूप जो पहले होता है, उसमें विशेष परिवर्तन होता है।

ऐसे ही स्वर्ग और नर्क के रीति-रिवाज़ आदि में भी मूलभूत परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण स्वर्ग और नर्क नाम पड़ता है।

"शिव भगवानुवाच - मैं तुमको स्वर्ग का मालिक, राजाओं का राजा बनाता हूँ। गीता में बड़ा अच्छा लिखा हुआ है। कहते हैं - मैं इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। तो उनको भी यह ज्ञान सुनाना चाहिए ना। वे भी पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। ... मुख्य भूल यह है, जो शिव के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है।''

सा.बाबा 27.09.11 रिवा.

"देवी-देवताओं की जो रस्म-रिवाज़ थी, वह आधा कल्प बाद रावणराज्य शुरू होने से बदल जाती है, पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। ... भक्ति का कितना विस्तार है। जैसे बीज कितना छोटा होता है, झाड़ कितना बड़ा होता है। वैसे ही ज्ञान है बीज, भक्ति वृक्ष है।... सन्यासी समझते हमको ब्रह्म में लीन होना है, परन्तु बाप कहते हैं यह उनका भ्रम है। लीन तो कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है ना।''

सा.बाबा 28.09.11 रिवा.

प्रश्न और सम्भावित उत्तर

Q. क्या सभी टेस्ट-ट्यूब बेबी में आत्मा प्रवेश करती है या कर सकती है?

इस सत्य के उत्तर के लिए जब इस सत्य को प्रैक्टिकल में देखा जाये, तब ही दिया जाना सम्भव है। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं कि हर टेस्ट-ट्यूब बेबी में आत्मा प्रवेश कर जाये। ये साइन्स का अति घमण्ड है, जिससे अनेक प्रकार की सामाजिक और नैतिक व्यवस्था में व्यवधान पैदा होता है।

Q. रिमोट कन्ट्रोल में कौन सी शक्ति काम करती है और उसके करने का आधार क्या होता है?

उसमें साइन्स की शक्ति विद्युत तरंगों के द्वारा कार्य करती है।

Q. एक रोबोट और एक जानवर में क्या अन्तर है, जिसके आधार पर जानवर में आत्मा

कही जायेगी, रोबोट में नहीं, जबकि रोबोट भी चेतन जैसे ही काम करता है?
रोबोट जो काम करता है, उसका कन्ट्रोल किसी न किसी रूप में किसी मनुष्य के हाथ में होता है अर्थात् रोबोट एक मानवकृत यन्त्र है, परन्तु जानवर कोई मानवकृत यन्त्र नहीं, उसकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता है, जिसके कारण वह कर्म करने के लिए स्वतन्त्र होता है, उसमें सोचने समझने की अपनी शक्ति होती है, जो रोबोट में नहीं होती है। रोबोट को चलाने वाली साइन्स की शक्ति है, जबकि जानवर को चलाने वाली साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मा है। मनुष्य, जानवर, मच्छर का शरीर प्रकृतिकृत है, मानवकृत नहीं।

हर आत्मा को उसकी योनि के स्तर के अनुसार उसके कर्मों का फल मिलता है, जिसको वह सुख या दुख के रूप में अनुभव करता है, परन्तु रोबोट में ऐसा नहीं है अर्थात् उसको प्रकृति से कोई फल नहीं मिलता है और न वह कोई सुख या दुख को अनुभव करता है।

Q. इस जीवन का अस्तित्व आत्मा और शरीर के सह-अस्तित्व से है और इसका नियन्त्रण आत्मा के द्वारा मस्तिष्क के माध्यम से होता है। परन्तु एक प्रश्न है कि आत्मा मस्तिष्क में किस स्थान पर रहती है?
यह निर्णय करना अति जटिल है क्योंकि आत्मा को देखा नहीं जा सकता है, इसलिए उसके स्थान का निर्णय भी कैसे किया जा सकता है। परन्तु विवेक कहता है कि जैसे देह के निर्माण का केन्द्र-बिन्दु नाभि है, जहाँ से शरीर का विकास होता है अर्थात् पिण्ड तैयार होने के बाद उससे अंग-प्रत्यंग रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलती है, उनका विकास होता है। ऐसे ही जब पिण्ड से मस्तिष्क की शाखा निकलती है अर्थात् मस्तिष्क का विकास होता है तो उसके विकास का जो केन्द्र-बिन्दु होता है, वही आत्मा का निवास स्थान होता होगा क्योंकि वहाँ से ही मस्तिष्क के सारे स्नायु तन्तुओं का और उनके द्वारा सारे शरीर के स्नायु तन्तुओं का नियन्त्रण सहज रूप से हो सकता है और वहीं से आत्मा यह सारा कार्य करती होगी।

Q. क्या हमको किसी वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक से बहस में आना चाहिए?
नहीं, क्योंकि वह हमारा क्षेत्र नहीं है। बाबा ने हमको आध्यात्मिक ज्ञान में विज्ञान और मनोविज्ञान के विषय में आवश्यक बातों का ज्ञान दिया है, इसलिए हमको अपने क्षेत्र में ही पुरुषार्थ करना चाहिए और सर्वात्माओं के कल्यार्थ पुरुषार्थ करना चाहिए। मनोवैज्ञानिकों के प्रति भी हमारी कल्याण की भावना और कामना होनी चाहिए, उनको इस सत्य का ज्ञान शुभ-भावना, शुभ-कामना से देना चाहिए परन्तु बहस करने की आवश्यकता नहीं है।

Q. ऊपर से आने वाली आत्मायें चाहे सतयुग में आयें या कलियुग में आयें, वे सब पूर्ण पावन होती हैं, इसलिए उनको पहले-पहले जीवनमुक्ति का पूर्ण सुख होता है और जो आत्मायें संगम पर परमात्मा से ज्ञान पाकर पावन बनने का पुरुषार्थ करती हैं, उनको भी मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख की अनुभूति होती है, परन्तु दोनों के सुख में अन्तर क्या होता है और कौनसा सुख श्रेष्ठ कहा जायेगा ?

परमात्मा सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है, इसलिए वह सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार देता है। मुक्ति में तो सर्वात्मायें जाती ही हैं परन्तु जीवनमुक्ति में सारे कल्प आत्मायें ऊपर से आती रहती हैं और अपने समय के अनुसार जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव करती हैं परन्तु जब आत्मा मुक्ति से आती है तो उसमें जीवनबन्ध अर्थात् दुख-अशान्ति का अनुभव अंशमात्र भी नहीं होता है, इसलिए उसको जो जीवनमुक्ति का सुख मिलता है, वह सामान्य ही अनुभव होता है। जब आत्मायें संगमयुग पर परमात्मा से मिलती हैं, ज्ञान को धारण करके पावन बनने का पुरुषार्थ करती हैं, उस समय उनमें जीवनबन्ध अर्थात् दुख-अशान्ति का अनुभव भी संस्कार रूप में संचित होता है, इसलिए उनको परमात्मा के मिलने से, ज्ञान को धारण कर पुरुषार्थ करने से अपने मूल स्वरूप में स्थित होने पर जो सुख अनुभव होता है, वह विशेष होता है, जो ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ सुख है और सारे कल्प में विशेष है। उस अनुभव के कारण ही नये कल्प में दुख-अशान्ति के समय आत्मायें परमात्मा को उसके लिए याद करती हैं।

"इस सृष्टि-चक्र के ज्ञान का किसको भी पता नहीं है। इस समय तुम नॉलेजफुल बनते हो। बाप तुमको आप समान नॉलेजफुल बनाते हैं। जो बाप की महिमा, वह तुम्हारी भी होती है। तुमको भी ऐसा बनना पड़े।... बाप ने जैसे कल्प पहले समझाया था, वैसे अभी भी समझाते हैं। बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। जब देवता बनते हैं तो आसुरी सृष्टि का विनाश जरूर होगा।''

सा.बाबा 29.06.11 रिवा.

विविध ईश्वरीय महावाक्य

"अभी तुमको यह जो नॉलेज मिलती है, वह केवल इस दुनिया के लिए नहीं है। यह भविष्य 21 जन्मों के लिए प्रॉलब्ध बनाने के लिए है। ... इसमें डरने की कोई बात नहीं है। यह स्प्रीचुअल नॉलेज तो सबको लेनी चाहिए। बोलो यह नॉलेज सबके लिए बहुत जरूरी है।''

सा.बाबा 4.08.11 रिवा.

"अभी तुम ज्ञान स्नान कर रहे हो और बाप से राजयोग सीखते हो। बाप ज्ञान सिखलाते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। बाप नॉलेजफुल है, तुम भी मास्टर नॉलेजफुल हो। ... तुम्हारी यह पढ़ाई बिल्कुल सिम्पुल है। जितना अच्छी रीति पढ़ेंगे, जितना योग लगायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 3.08.11 रिवा.

"ज्ञान सागर, परमपिता परमात्मा ने आकर हमारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खोला है। कहते भी हैं कि बाप ज्योति जगाने वाला है।... ईश्वर की गति-मति न्यारी कही जाती है। तुम बच्चे अब समझते हो बाप सद्गति के लिए आकर ज्ञान-योग सिखलाते हैं।''

सा.बाबा 28.07.11 रिवा.

"ये सब बड़ी समझने की बातें हैं। अभी ज्ञान सागर बाबा हमको टीचर के रूप में पढ़ाते हैं-यह सदा बुद्धि में रहना चाहिए। ... अभी तुम बाप द्वारा नई-नई बातें डॉयरेक्ट सुनते हो। आगे तो मनुष्यों द्वारा सुनते थे। अभी तुम समझते हो - हम आत्मायें असुल में अशरीरी थे, पीछे शरीर धारण किया है पार्ट बजाने के लिए।''

सा.बाबा 25.07.11 रिवा.

"जिन्होंने कल्प पहले इस नॉलेज को सुना है, वे ही अभी आयेंगे, आकर बाप से यह ज्ञान सुनेंगे और बाप को याद करेंगे। ... भक्ति का विस्तार देखो कितना है। जैसे झाड़ कितना बड़ा होता है, बीज तो बिल्कुल छोटा होता है। वैसे ही भक्ति का भी बहुत विस्तार है। ज्ञान का एक टुबका भी सद्गति कर देता है।''

सा.बाबा 22.07.11 रिवा.

"तुम बच्चों को बड़ा नशा होना चाहिए कि हमको आत्माओं का बाप निराकार ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं, उनको कोई जानते नहीं हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बाबा फिर से स्वर्ग की राजाई स्थापन कर रहे हैं।... सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की डिनॉयस्टी होगी तो और राजायें भी तो होंगे ना, जिनकी निशानी यह विजयमाला है।''

सा.बाबा 20.07.11 रिवा.

"आत्मा बाप को पुकारती है, उस समय निराकार ही याद आता है। ऐसे भी नहीं कि परमात्मा कोई बैठ सुनते हैं। बाप समझाते हैं - ड्रामा प्लैन अनुसार पतितों को पावन बनाने के लिए मैं शरीर में आता हूँ। ऐसे नहीं कि तुम्हारी पुकार सुनकर आता हूँ। ये बड़ी समझने की बातें हैं।... तुम पावन थे, फिर रावण ने पतित बनाया है, अब मैं फिर तुमको पावन बनाने आया हूँ।''

सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

"तुम अपने घर पर बोर्ड लगा दो, उस पर लिखो - बहनों और भाइयो, 21 जन्म के लिए एवर-हेल्दी, एवर-वेल्दी बनना है तो आकर समझो। हम एक सेकण्ड में एवर हेल्दी-वेल्दी बनने का रास्ता बताते हैं। ... कोई भी आये तो उसको दो बाप का राज समझाओ - बेहद का बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो तो बेहद का वर्सा मिलेगा, तुम एवर हेल्दी-वेल्दी बन जायेंगे।''

सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

"तुम सब आत्मायें आशिक हो एक माशूक परमपिता परमात्मा के। वह तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। सब आत्मायें उनको याद करती हैं। सभी आत्मायें उनको पुकारती हैं। कहती हैं - आकर हमको पतित से पावन बनाओ। ... अभी बाप आकर ज्ञान वर्षा कर रहे हैं, जिस ज्ञान वर्षा से काँटों का जंगल फूलों का बगीचा बन जायेगा।''

सा.बाबा 2.07.11 रिवा.

"मनुष्य तो क्या 5 तत्वों सहित हर चीज को बाप सतोप्रधान बना देते हैं। सबकी सद्गति होती है। ये बातें बड़ी समझने की हैं।... जो कुछ यहाँ देखते हो, वह सब बदलकर नया होने का है।... ज्ञान, भक्ति और वैराग्य कहा जाता है। अभी बाप कहते हैं - देह सहित जो कुछ भी तुम इन आँखों से देखते हो, उस सबको ज्ञान से भूलना है।'' सा.बाबा 21.09.11 रिवा.

"पतित से पावन बनाने का ज्ञान एक बाप के पास ही है। वह है पतित-पावन निराकार। बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे।... मैंने थोड़े समय के लिए इस तन में प्रवेश किया है। मैं कब गर्भ में नहीं आता हूँ। गर्भ में आने वाले को तो पुनर्जन्म में आना पड़ता है। मैं तो एक ही बार प्रकृति का आधार लेकर आता हूँ।''

सा.बाबा 20.09.11 रिवा.

"मनुष्य कह देते सुख-दुख सब ईश्वर देता है, सब ईश्वर के रूप हैं। परन्तु बाप कहते हैं - मैं बच्चों को दुख कैसे दे सकता हूँ।... मैं तो बच्चों को लायक बनाकर, प्रॉपर्टी देकर चला जाता हूँ। बाकी दुख तो हर एक को अपने कर्मों के अनुसार ही मिलता है।... तुम कहते हो अभी महाकाल आया हुआ है, शिवबाबा है कालों का काल, वह आया हुआ है, सब आत्माओं को वापस ले जाने।''

सा.बाबा 20.09.11 रिवा.

"भक्ति का फल है ज्ञान। ज्ञान से होती है सद्गति। सद्गति करने वाला एक ही ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा है।... अभी बाप आया हुआ है भक्ति का फल ज्ञान अर्थात् सद्गति देने। बाप ही राजयोग सिखलाकर नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं, यह है पुरानी दुनिया, जिसका विनाश होना है। ... हम राजयोग का ज्ञान ले नई दुनिया स्वर्ग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे।''

सा.बाबा 15.09.11 रिवा.

"दुनिया में यह ज्ञान किसको नहीं है। वह है भक्ति मार्ग। उनको ज्ञान का पता नही है। ज्ञान तो एक ज्ञान सागर बाप ही देते हैं। ... कृष्ण की लीला कहते हैं। अब बाप कहते हैं - वास्तव में कृष्ण की लीला कुछ है ही नहीं। कृष्ण ने क्या किया ? ... तुम जानते हो - कृष्ण की आत्मा जो सतयुग में थी, वह 84 जन्म भोग पतित बनी, अभी फिर पतित से पावन बन रही है। ... शिवबाबा ही तुमको हेल से हेविन में ले जाते हैं।''

सा.बाबा 8.09.11 रिवा.

"यहाँ है रुहानी कारोबार, बाकी सारी दुनिया में है जिस्मानी कारोबार। वास्तव में कारोबार रूहों की ही चलती है। आत्मा ही इस शरीर द्वारा सारा कारोबार करती है। ... सारी दुनिया देहाभिमानी है, इसलिए देह का ही नाम लेती है। इसको कहा जाता है देहाभिमानी दुनिया, उतरती कला की दुनिया। अभी बाप तुमको देही-अभिमानी बनाते है।''

सा.बाबा 8.09.11 रिवा.

"ड्रामा अनुसार कल्प-कल्प तुम बाप से वर्सा लेते हो। जो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी घराने के होंगे, वे अवश्य आयेंगे। जो देवता थे, फिर शूद्र बन गये, फिर वे ही ब्राह्मण बन दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। कितनी वण्डरफुल बातें हैं। ये बातें बाप बिगर कोई समझा न सके। ... बाप तो सारी दुनिया को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं, उसमें तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं।''

सा.बाबा 13.06.11 रिवा.

"तुम जानते हो - बाबा आया हुआ है, ज्ञान की वर्षा कर रहे हैं, जिससे स्वर्ग की स्थापना हो रही है। इस बरसात की शीतलता का असर 21 जन्म तक रहता है। वहाँ न ज्ञान बरसात होती है और न किसी चीज़ की इच्छा रहती है।''

सा.बाबा 15.06.11 रिवा.

"यह ज्ञान सदैव बुद्धि में रहना चाहिए, जो कोई को भी समझा सको।... बाबा के पास समाचार आता है - फलाने ने एक ही ऐसा ज्ञान का तीर मारा, जो मैं बाबा आपका बन गया।... इसको ज्ञान वाण कहा जाता है। सिर्फ बाप की याद दिलानी है। इसमें हिंसक वाण की कोई बात नहीं है। बाबा कहते - मैं ब्रह्मा मुख से सब शास्त्रों का राज़ तुमको समझाता हूँ।

ब्रह्मा तो यहाँ होना चाहिए ना।''

सा.बाबा 7.06.11 रिवा.

"ये सब बड़ी समझने की बातें हैं, इनमें अटेन्शन देना पड़ता है, विचार सागर मन्थन करना होता है। ... ज्ञान का तीसरा नेत्र ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही देते हैं, तब ही आत्मा को इन सब बातों का पता पड़ता है। ... जो पहले सतयुग में सतोप्रधान थे, वे ही पुनर्जन्म लेते-लेते सतोप्रधान बने हैं। आत्मा में ही खाद पड़ते-पड़ते आत्मा तमोप्रधान बनती है।''

सा.बाबा 26.05.11 रिवा.

"जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं, वह तो जरूर पतित होगा, मैं उनके ही साधारण तन में प्रवेश कर 84 जन्मों का सारा ज्ञान देता हूँ। ... श्रीकृष्ण के ही पूरे 84 जन्म कहेंगे, श्री नारायण के तो 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं, इसलिए उनके पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। ... पूरे 84 जन्म और 5000 वर्ष श्रीकृष्ण के ही कहेंगे।''

सा.बाबा 30.09.11 रिवा.

"यह ब्रह्मा वर्सा नहीं दे सकते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी मनुष्य है ना। कोई मनुष्य यह ज्ञान नहीं दे सकते हैं। ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा ही ब्रह्मा द्वारा यह ज्ञान देते हैं।... ज्ञान सागर, पतित-पावन वह एक ही निराकार बाप है, जिसको सारी दुनिया के मनुष्य मात्र बुलाते हैं।... उनको लिबरेटर कहते हैं, वे सभी आत्माओं को रावण से लिबरेट करते हैं।''

सा.बाबा 24.05.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हमने यह 84 जन्मों का चक्र लगाया है। हमने अनेक बार यह पार्ट बजाया है, इस पार्ट से कोई भी छूट नहीं सकता है। ... यह है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल फादर ही देते हैं। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। रुहानी बाप रूहों से ही बात करते हैं। ... तुम जानते हो हम शान्तिधाम के रहवासी थे, तुम पहले-पहले सुखधाम में आये, फिर 84 जन्म लेते नीचे गिरते आये हो।''

सा.बाबा 25.05.11 रिवा.

"यह भी तुम जानते हो कि ड्रामा प्लैन अनुसार पतित से पावन और पावन से पतित बनते ही रहते हैं। यह ड्रामा का चक्र फिरता ही रहता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में बैठा है कि हमारे 84 जन्म कैसे हुए हैं। अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बने हो। उठते-बैठते, चलते-फिरते हमारी बुद्धि में यह सारी नॉलेज है। तुम समझते हो अभी हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं।''

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

"यह ड्रामा का चक्र चलता ही रहता है। जो पहले-पहले पार्ट बजाने आते हैं, वे ही 84 जन्म लेते हैं। ... यह नॉलेज तुम्हारे सिवाए और किसकी बुद्धि में नहीं है। ... तुमको बाप से सुख

का वर्सा मिलता है, दुख कैसे होता है, यह भी कोई नहीं जानते हैं। देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, उसकी जगन्नाथ में निशानियाँ हैं।''

सा.बाबा 16.05.11 रिवा.

"यह सब बातें बहुत समझने की हैं। एक बात भी बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जाये तो सब बातें समझ में आ जायेंगी। बाप को याद करना है और स्वदर्शन-चक्र को भी ध्यान में रखना है।... अभी सारी दुनिया शोक वाटिका है, अशोक वाटिका है सतयुग। तुम जानते हो अभी बाबा हमको अशोक वाटिका में ले जाते हैं।''

सा.बाबा 11.05.11 रिवा.

"बाप हिन्दी में ही समझाते हैं, संस्कृत आदि में नहीं। दुनिया में अनेक धर्म, मठ-पंथ हैं, अनेक भाषायें हैं। सतयुग में इतनी भाषायें नहीं होती हैं। ... सतयुग में एक ही धर्म और एक ही भाषा होगी। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की सारी नॉलेज है, जो और कोई शास्त्र में नहीं है। ... यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सृष्टि नई से पुरानी और पुरानी से नई होती है।''

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"इसमें घरबार छोड़ने की दरकार नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है। उसके लिए मामेकम् याद करो, तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे।... तुम सतोप्रधान थे, फिर तमोप्रधान कैसे बनें, अब फिर सतोप्रधान कैसे बनें, सो सिवाए बाप के कोई बता न सके। पावन बनने का रास्ता बात ही बताते हैं। यह है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप ही देते हैं।''

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"तुम लकी स्टार्स को अभी पता पड़ा है कि हम रुहानी यात्रा पर जा रहे हैं, जिस यात्रा से हम लौटकर इस मृत्युलोक में नहीं आयेंगे। ... तुम बच्चों को ज्ञान है कि हम आत्मा हैं, यह शरीर रूपी कपड़ा छोड़कर दूसरा लेकर पार्ट बजायेंगे।... तुम्हारी बुद्धि में है कि हम पतित से पावन, फिर पावन से पतित कैसे बनते हैं।''

सा.बाबा 10.05.11 रिवा.

"अभी तुम सच्चे-सच्चे भाई-बहन हो, इसलिए तुम्हारा फर्ज है सबको बाप की याद दिलाना।... यहाँ आत्माओं को समझाया जाता है कि अपने रचयिता बाप को याद करो, उनसे ही आत्मा को वर्सा मिलना है। ... वह शिवबाबा है रुहानी बाप और प्रजापिता ब्रह्मा है जिस्मानी बाप। तो बापदादा दोनों कहते हैं - बच्चे, बाप को याद करो।''

सा.बाबा 11.05.11 रिवा.

"श्रीमत पर चलने से राजाई में श्रेष्ठ पद पायेंगे और फिर दूसरों को भी आप समान बनायें, तब

कहा जाये खुदाई खिदमतगार। किसका कुछ भी छिपा नहीं रह सकता है। आगे चलकर सब मालूम पड़ेगा। इसको ही ज्ञान का प्रकाश कहा जाता है।''

सा.बाबा 11.05.11 रिवा.

"अभी तुम मेरे द्वारा मेरे को जानने से सबकुछ जान जायेंगे, फिर कुछ जानने को रहेगा ही नहीं।... तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए - हम परमपिता परमात्मा के बच्चे अथवा स्टूडेण्ट हैं, परमपिता परमात्मा हमको पावन बनाकर घर ले जायेंगे। इसको ही परमानन्द कहा जाता है। ... अभी परमधाम का रहने वाला बाबा आकर हमारा बाप, टीचर, गुरु बना है।''

सा.बाबा 28.04.11 रिवा.

"इस ज्ञान को समझने के लिए बुद्धि बड़ी अच्छी चाहिए। अभी तुम बच्चे शिवबाबा से वर्सा लेते हो। ब्रह्मा कोई स्वर्ग का रचयिता वा ज्ञान का सागर नहीं है। ज्ञान सागर तो एक बाप ही है। आत्माओं का बाप ज्ञान सागर शिवबाबा है।... आधा कल्प भक्ति की डिपॉर्टमेन्ट चली है, उसमें ज्ञान सागर है नहीं। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा तो संगम पर ही आकर ज्ञान से सबकी सद्गति करते हैं।''

सा.बाबा 29.04.11 रिवा.

"ज्ञान मार्ग में होती है माया से लड़ाई। इस माया पर ही जीत पानी है। जब माया बेहोश कर देती है, तब संजीवनी बूटी दी जाती है - मन्मनाभव।... आत्मा में ही खाद पड़ी है। आत्मा को ही सतोप्रधान बनना है। जितना याद में रहेंगे, उतना पवित्र बनेंगे। कम याद करेंगे तो कम पवित्र बनेंगे, पापों का बोझा सिर पर रह जायेगा। फिर सजायें खानी पड़ेंगी।''

सा.बाबा 30.04.11 रिवा.

"यह वण्डरफुल ज्ञान है। ऐसे कभी सुना नहीं होगा कि आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, जो कभी घिसता नहीं है। ... तुम बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए। अभी तुम सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजाई प्राप्त करते हो। ... यह सदैव बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए - हम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जा रहे हैं, बाया शान्तिधाम।''

सा.बाबा 27.04.11 रिवा.

"हर आत्मा वारिस है अर्थात् हर आत्मा बाप से वर्सा लेने की हक़दार है। ... बेहद का बाप पतित-पावन है, उनको ओशन ऑफ नॉलेज भी कहते हैं, वह ज्ञान की अथॉरिटी है। कौनसी नॉलेज ? उनके पास ईश्वरीय नॉलेज है। बाप है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, सत्-चित्-आनन्द स्वरूप।... बाप कहते हैं - मैं ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, शान्ति का सागर हूँ।''

सा.बाबा 28.04.11 रिवा.

"मैं आकर सच्ची अमरकथा सुनाता हूँ। अभी तुम आत्माओं को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता

है। देवताओं को तीसरा नेत्र दिखाते हैं, परन्तु देवताओं को तो यह ज्ञान ही नहीं है। उन्होंने ज्ञान से प्रालब्ध को पा लिया अर्थात् सद्गति को पा लिया, फिर वहाँ ज्ञान की दरकार ही नहीं है। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है तुम ब्राह्मणों को।''

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"आत्माओं का भी झाड़ है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारे झाड़ का ज्ञान रहता है। आत्माओं का भी झाड़ है, तो जीवात्माओं का भी झाड़ है।... मैं आत्मा, इस शरीर से अलग हूँ, यह समझना गोया जीते जी मरना। आप मुये मर गई दुनिया।''

सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"खास भारत और आम सारी दुनिया में ऐसे कोई भी नहीं समझेंगे कि हम आत्मा हैं और हमको निराकार परमात्मा पढ़ाते हैं। आत्मा ही पढ़ती है, आत्मा ही शरीर द्वारा सबकुछ करती है।... हम पहले आत्मा हैं, पीछे हमारा यह शरीर लिया है। आत्मा शरीर बदलती रहती है, तो शरीर का नाम भी बदलता रहता है।... संस्कार आत्मा में होते हैं, जिन संस्कारों अनुसार आत्मा पार्ट बजाती है।''

सा.बाबा 22.04.11 रिवा.

"गायन है - ज्ञान अन्जन सतगुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनाश। तुम जानते हो - अभी हम सोझरे में हैं, बाप ने हमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। भल देवताओं को तीसरा नेत्र दिखाते हैं, परन्तु उनको ज्ञान का तीसरा नेत्र है नहीं। वास्तव में तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को है।''

सा.बाबा 23.04.11 रिवा.

"शिवबाबा आकर पहले शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं, फिर पढ़ाई पढ़कर तुम सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी बनते हो। ... भक्ति मार्ग में सब दन्त कथायें हैं, जिनको पढ़ने से तुम नीचे ही उतरते आये हो। इसलिए बाप को पुकारते हो - आकर हमारी सद्गति करो।... मैं आता ही हूँ संगम पर। आकर नर से नारायण बनने की सच्ची अमरकथा सुनाता हूँ। अभी आत्मा को तीसरा नेत्र मिलता है।''

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"आत्मायें ही परमात्मा बाप को पुकारती हैं, वह है निराकार। आत्मा भी निराकार है, वह इन आरगन्स द्वारा पुकारती है। भक्ति के बाद भगवान को आना है, उनका पार्ट भी ड्रामा में नूँध है।... बाप कहते हैं - मैं तुमको रोज़ नई-नई गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। तुम सुनते-सुनते समझते जाते हो। आगे ऐसे नहीं कहते थे कि शिवबाबा पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 18.04.11 रिवा.

"बिड़ला आदि भी नहीं जानते कि इन लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य-भाग्य कैसे और कब लिया। अभी तुम जानते हो तो तुमको बड़ी खुशी होनी चाहिए।... ये सब बातें बुद्धि से समझने

और समझाने की हैं। मन्जिल ऊंची है, उसके लिए मेहनत भी करनी है। जो जैसा टीचर है, वह वैसे ही सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा 21.04.11 रिवा.

"तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो ... यह महिमा एक ऊंच ते ऊंच बाप की ही है। बाप खुद आकर आत्मा की और अपनी पहचान देते हैं।... कर्तव्य सब आत्मा शरीर द्वारा करती है, परन्तु ऑखों से देखने में नहीं आती है।''

सा.बाबा 18.04.11 रिवा.

"आत्मा में ही पार्ट बजाने के संस्कार हैं, यह किसको भी ज्ञान नहीं है। आत्मा के विषय में अनेकानेक मतें हैं। ... पहले-पहले सतयुग में जो सूर्यवंशी राजा-रानी, प्रजा आयेंगे, उनके ही पूरे 84 जन्म होते हैं, पीछे वृद्धि होती है, उनके 84 जन्म तो हो न सकें।''

सा.बाबा 18.04.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी कितनी जबरदस्त कमाई हो रही है। तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। उन्होंने फिर वह हिंसा का चक्र दे दिया है। असुल में यह है ज्ञान का चक्र, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। ... बाप सम्मुख आकर सारा ज्ञान देते हैं। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा में बँधा हुआ हूँ, मुझे भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर आना ही पड़ता है।''

सा.बाबा 5.04.11 रिवा.

"ज्ञान और योग दो बातें हैं। योग से आत्मा पवित्र बनती है, ज्ञान से हमारी चोली रंगती है। हम सारे चक्र को जान जाते हैं, उससे आत्मा को खुशी होती है और योग की यात्रा के लिए भी यह ज्ञान मिलता है। ... बाप कहते हैं - हे बच्चो, हे मूलवतन के राही, पतित-पावन बाप ही सर्व का सद्गतिदाता है, वही घर जाने का रास्ता बताते हैं।''

सा.बाबा 19.03.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं बताता हूँ। तुमने पूरे 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम 21 जन्म के लिए बेहद के बाप से वर्सा लेने आये हो। ... पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनना मासी का घर नहीं है। बाप कहते हैं - हे आत्माओं अब देही-अभिमानी बनों, बाप को याद करो और अपनी राजाई को याद करो।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं, आत्मा में ही मन-बुद्धि है। मुख्य है आत्मा। आत्मा को कोई देख नहीं सकता। शरीर को आत्मा देखती है, आत्मा को शरीर नहीं देख सकता। ... वैसे ही आत्मा का बाप परमात्मा है, जिसको ओ गॉड फादर कहकर याद करते हैं। परमात्मा को भी देख नहीं सकते, उनको जाना जाता है।''

सा.बाबा 5.02.11 रिवा.

"अभी आप तो सम्मुख बैठे हो लेकिन आपसे ज्यादा संख्या बापदादा के आगे भिन्न-भिन्न स्थानों की बापदादा देख रहे हैं। आप सम्मुख हो, वे दूर बैठे भी दिल में समाये हुए हैं। ... बापदादा ने शुरू में कहा था कि यह साइन्स आपके काम में आयेगी। तो देखो दूर बैठे भी नजदीक अनुभव कराने वाले ये साइन्स के साधन हैं। विनाश में भी मदद करेगी, वह भी जरूरी है। ... साइन्स वाले भी आपके मददगार हैं। उनको बुरा नहीं समझना। जिसका जो काम है, वह तो करना पड़ेगा ना।''

अ.बापदादा 2.02.11

"बाप जो समझाते हैं, ये बड़ी गुह्य बातें हैं, इनको समझने के लिए बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।... अभी यह संगम का समय है। अब तुम तैयारी कर रहे हो रावण पर विजय पाने की। इसमें ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र चाहिए। ... अभी तुम योगबल से रावण पर विजय पाते हो। गीता ज्ञान और योगबल से 5 विकारों रूपी रावण पर तुम्हारी विजय होती है।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

"हठयोगी सन्यासी समझते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते शान्ति मिल नहीं सकती, इसलिए जंगल में चले जाते हैं। परन्तु बाप समझाते हैं शान्ति वहाँ भी नहीं मिल सकती। ... बच्चे, शान्ति तो तुम आत्मा का स्वधर्म है। यह शरीर तो तुम्हारी कर्मेन्द्रियाँ हैं, जिनसे तुमको पार्ट बजाना पड़ता है। आत्मा तो अविनाशी है, वह कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है। हाँ, आत्मा पतित बनती, फिर उसको ही पावन बनना है।''

सा.बाबा 30.09.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम 84 जन्मों में कैसे आते हैं। पहले अच्छा जन्म मिलता है, फिर धीरे-धीरे उतरते आते हैं। दुनिया की भी उतरती कला होती है। ... सतयुग से ही थोड़ी-थोड़ी कलायें उतरनी शुरू हो जाती हैं। चढ़ती कला का समय अभी ही है, जब बाप आकर ज्ञान देते हैं।... यह फिर है बेहद की बात। बेहद का बाप पूछते हैं - तुमको इतना साहूकार बनाया, फिर वह सब धन क्या किया ?''

सा.बाबा 30.09.11 रिवा.

"छोटी सी आत्मा में कैसे 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, यह तुम्हारी आत्मा अभी जानती है। कितनी छोटी सी आत्मा में सारा पार्ट नूँधा हुआ है, जो वह पुनर्जन्म ले एक्यूरेट बजाती है। ये हैं गुह्य ते गुह्य समझने की बातें। ... भल दुनिया में कोई-कोई ड्रामा कहते हैं, परन्तु जानते नहीं हैं कि यह ड्रामा कैसे है, कैसे रिपीट होता है। वह बाप ही अभी बताते हैं।''

सा.बाबा 3.10.11 रिवा.

"यह ज्ञान तुमको अभी ही मिलता है, फिर सारे कल्प में कभी नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान, वह

है भक्ति। ज्ञान से होती है चढ़ती कला। इसलिए सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का गायन है। ... बाबा जानते हैं - बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है, कितना दुखी हो गये हैं। फिर मैं आकर उनको दुख से मुक्त कर सद्गति देता हूँ। गति-सद्गति सबकी होनी है। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।''

सा.बाबा 28.09.11 रिवा.

"बाप भी दूर देश का मुसाफिर है, तुम सब भी दूर देश के मुसाफिर हो। सभी आत्मायें मुसाफिर हैं। यह दुनिया आत्माओं का घर नहीं है। आत्मायें सब निराकार हैं, निराकारी दुनिया में रहने वाली हैं। वह है आत्माओं का घर, यह है जीवात्माओं का देश।... ऐसे नहीं कि आत्मा का कोई रूप नहीं हैं। आत्मा का रूप भी है, नाम भी है। इतनी छोटी आत्मा, इस शरीर द्वारा कितना पार्ट बजाती है।''

सा.बाबा 29.09.11 रिवा.

"शिवबाबा निराकार है, उनको अपना शरीर नहीं है, फिर भी उनकी जयन्ति मनाते हैं तो जरूर शरीर में आया होगा ? आत्मा तो अविनाशी है, उसकी जयन्ति तो होती नहीं है। ... तुम बच्चों को यह ख्यालात रहने चाहिए, तुम बच्चों का चिन्तन चलना चाहिए। ... अभी तुम ज्ञान से भरपूर हो, तुमको यह ज्ञान सबको सुनाना है। सबको बाप का परिचय देना है।''

सा.बाबा 27.09.11 रिवा.

"वे भाषण करने वाले एक सेकण्ड में खुशी दिला देते और एक सेकेण्ड में रुला भी देते हैं।... जब उनके भाषण में इतनी पावर होती है तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पावर नहीं हो सकती है! अशरीरी बनाना चाहो तो क्या वह अनुभव करा सकते हो कि वह लहर छा जाये ? सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जाये। इसको कहा जाता है - प्रैक्टिकल अनुभव कराना। वे भले अपने भाषण में सभा को हँसा लेते या रुला लेते हैं, लेकिन वे अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते हैं और न बाप का स्नेह पैदा करा सकते हैं।''

अ.बापदादा 2.08.73

"पूरे 84 जन्म सूर्यवंशी ही लेते हैं, जो पहले-पहले आते हैं। सारी सूर्यवंशी सम्प्रदाय पुनर्जन्म लेते-लेते अभी तमोप्रधान बनें हैं। वे ही अब फिर से बाप से राज्य-भाग्य ले रहे हैं। जो बच्चे इस ज्ञान को समझते हैं, उनको ही मज़ा आता है। और किसको मज़ा नहीं आयेगा। इसमें तुम किसकी निन्दा नहीं करते हो। ... अभी तुम समझते हो हम विश्व के मालिक थे, सारी जमीन-आसमान हमारा था।''

सा.बाबा 7.11.11 रिवा.

"गाते हैं - भागीरथ ने गंगा लाई, परन्तु समझते नहीं हैं यह है ज्ञान वर्षा, जिससे आत्मायें पतित से पावन बनती हैं। ... पारलौकिक बाप को याद करने से तुम आत्मायें पावन बनेंगे, तो उस बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। अभी तुम जानते हो कि हम बेहद के बाप के बनें हैं।

... कहते हैं - जो बहुत भक्ति करते हैं, उनको भगवान मिलता है।''

सा.बाबा 11.10.11 रिवा.

"कहते हैं - जो बहुत भक्ति करते हैं, उनको भगवान मिलता है। तो सबसे जास्ती भक्ति करने वाले तो तुम ही हो, इसलिए तुमको ही पहले भगवान मिलना चाहिए। बाप ने पूरा हिसाब बताया है कि सबसे पहले तुम ही भक्ति शुरू करते हो, तुमको ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता चाहिए, जो फिर तुम ही नई दुनिया में पहले-पहले राज्य करो।''

सा.बाबा 11.10.11 रिवा.

"यह है रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ। शिव को रुद्र भी कहते हैं। जब भक्ति का समय पूरा होता है, तब रुद्र भगवान आकर रुद्र यज्ञ रचते हैं। ... भक्ति भी सदैव तो नहीं चलती रहेगी। भक्ति और ज्ञान आधा-आधा समय चलता है। भक्ति है ब्रह्मा की रात और ज्ञान है ब्रह्मा का दिन। बाप आकर रात को दिन बनाते हैं।''

सा.बाबा 11.10.11 रिवा.

"ड्रामा प्लैन अनुसार सबको पतित तमोप्रधान बनना ही है। यह झाड़ है ना। उस झाड़ का बीज नीचे रहता है, इसका बीज ऊपर में है, इसलिए बाप को जब बुलाते हैं तो बुद्धि ऊपर चली जाती है। ... यह अनेक वैराइटी धर्मों का झाड़ है। अब वह झाड़ तमोप्रधान पतित जड़-जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। बाप बच्चों को समझाते हैं - सतयुग में पहले-पहले होते हैं देवी-देवतायें।''

सा.बाबा 12.10.11 रिवा.

"बाबा कहते हैं - मैं आकर रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचता हूँ, इसमें आसुरी सम्प्रदाय के विघ्न पड़ते हैं। यह है शिवबाबा का बेहद का यज्ञ, जिससे मनुष्य से देवता बनते हैं। गायन भी है - ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रगट हुई, जिसमें सारी पुरानी दुनिया का विनाश होता है। यह सारी पुरानी दुनिया इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेगी। ... जब पुरानी दुनिया का विनाश हो, तब तुम नई दुनिया में राज्य करेंगे।''

सा.बाबा 12.10.11 रिवा.

"यह भक्ति का गीत है। अंग्रेजी में भक्ति को फिलॉसॉफी कहते हैं। ... भक्ति के शास्त्रों में जो लिखा है, वह सब है फिलॉसॉफी। बाप शास्त्रों की कोई बात नहीं सुनाते हैं। बाप ज्ञान सागर है, उनको कोई जानते नहीं हैं।... फिलॉसॉफी की बातें सुनते नीचे ही गिरते आये हैं, इसलिए बाप कहते हैं - तुम कोई भी मनुष्य की बात नहीं सुनो।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"तुम कोई भी मनुष्य से शास्त्रों का कुछ वाद-विवाद नहीं कर सकते। वेद-शास्त्र आदि सब मनुष्यों के बनाये हुए हैं। ... तुमको तो अब स्प्रीचुअल बाप से स्प्रीचुअल नॉलेज सुननी है।

सुनाने वाला रुहानी बाप है, सुनने वाले रुहानी बच्चे हैं। तुम जानते हो - हम रूह शरीर द्वारा रुहानी बाप से सुनते हैं और फिर शरीर द्वारा औरों को भी सुनाते हैं। यह है रुहानी ज्ञान।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - ज्ञान की अथॉरिटी, ज्ञान सागर मैं ही हूँ। मैं तुमको कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाता हूँ। हमारा यह है रुहानी ज्ञान। ... निराकार रुहानी बाप बैठ निराकार रुहों को समझाते हैं, इसलिए देही-अभिमानी बनने में बच्चों को मेहनत लगती है। तुम जानते हो हम आत्मायें बाप से वर्सा लेती हैं। ... सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता है।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"अभी तुमको देहाभिमान तोड़ना है। देहाभिमान तोड़ने के लिए अपने को निराकार आत्मा समझ निराकार बाप को याद करना है। यही भारत का प्राचीन राजयोग है ... अभी रुहानी बाप रुहानी बच्चों से बात करते हैं, रूह ही सुनाते हैं और रूह ही सुनती है। इसलिए इसको रुहानी अर्थात् स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"कोई भी मनुष्य में यह स्प्रीचुअल नॉलेज हो नहीं सकती, इसलिए तुमको कोई से भी कब डिबेट नहीं करनी है। कोई डिबेट करते हैं तो बोलो - वह है भक्ति का ज्ञान, मनुष्यों के द्वारा बनाये गये शास्त्रों का ज्ञान। सत्य ज्ञान तो एक ज्ञान सागर बाप के पास ही है, वह खुद आकर नॉलेज दे रहे हैं, हम उनसे ही यह ज्ञान सुनते हैं।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"सभी आत्मायें जो ऊपर से आती हैं, वे पहले पावन होती हैं, फिर पतित बनती हैं। धर्म स्थापक भी पहले पावन होते हैं, फिर पतित बनते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक बाप ही है। ... जब बहुत पाप होते हैं, तब रुहानी बाप आकर ज्ञान देते हैं। भक्ति का फल है ज्ञान, जो तुमको भगवान से मिलता है। भगवान कोई भक्ति नहीं सिखाते हैं, वह तो ज्ञान देते हैं पावन बनने का।''

सा.बाबा 13.10.11 रिवा.

"ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती है, तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। बच्चों की बुद्धि भी चेन्ज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया। बाप कहते हैं - सब बातें पहले ही थोड़ेही समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते ही रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी।''

सा.बाबा 14.10.11 रिवा.

"वास्तव में सत्य नारायण की कथा या अमर कथा कोई बड़ी नहीं है। असुल कथा है -

मन्मनाभव। बस, बीज को याद करो और ड्रामा के चक्र को याद करो। जो ज्ञान बाबा के पास है, वह ज्ञान अभी हमारी बुद्धि में भी है। वह ज्ञान का सागर है, हम आत्मा भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। तो तुमको कितना नशा चढ़ना चाहिए।''

सा.बाबा 14.10.11 रिवा.

"यहाँ तुम्हारी बुद्धि में सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान है। तुम जानते हो बरोबर स्वर्ग था, अब नर्क है, तब तो बाप को बुलाते हैं। ... अभी बाप तुमको निराकारी, आकारी और साकारी दुनिया का सारा समाचार सुनाते हैं। सतयुग में थोड़ेही यह सब पता पड़ेगा। वहाँ तो तुम सिर्फ राज्य करेंगे। इस ड्रामा को अभी ही तुम जानते हो। सतयुग में यह ज्ञान हो तो राजाई का नशा ही उड़ जाये।''

सा.बाबा 15.10.11 रिवा.

"तुम बच्चों ने स्वर्ग का साक्षात्कार किया, तो विनाश का भी किया। बाबा को भी साक्षात्कार हुआ, तब तो सब छोड़ा, परन्तु उस समय इतना ज्ञान नहीं था, जितना अभी है। रात-दिन का फर्क है उस समय के ज्ञान और अभी के ज्ञान में।... पहले तो पाई-पैसे का ज्ञान था। अभी समझते हैं वह तो राँग था। बाप कहते हैं - आज तुमको बहुत गुह्य-गुह्य बातें सुनाता हूँ।''

सा.बाबा 30.12.10 रिवा.

"अभी यह सृष्टि रूपी झाड़ जड़ जड़ीभूत तमोप्रधान हो गया है, इस तमोप्रधान झाड़ का विनाश और नये देवी-देवता धर्म के झाड़ की स्थापना जरूर होगी। अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का सेपलिंग लग रहा है। ... जो पहले नम्बर में थे, जिन्होंने पूरे 84 जन्म लिए हैं, वे ही फिर पहले नम्बर में आयेंगे। सबसे पहले देवी-देवताओं का ही पार्ट चलता है।''

सा.बाबा 19.10.11 रिवा.

"कब मन में ऐसा संकल्प नहीं लाना चाहिए कि हमने शिवबाबा को दिया। नहीं, हम शिवबाबा से 21 जन्मों के लिए वर्सा लेते हैं। अगर शुद्ध विचार से नहीं दिया तो स्वीकार नहीं होगा। सब बातों की समझ बुद्धि में रखनी चाहिए। ... ईश्वर कोई भूखा है क्या, जो तुम ईश्वर को देते हो। अभी तुमको बाप कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते हैं।... बहुत बच्चे हो जायेंगे, फिर तुम्हारे पैसे भी क्या करेंगे। मैं कच्चा सर्राफ नहीं हूँ, जो लेवे और काम में न आये, फिर भरकर देना पड़े। बाद में कह देंगे जरूरत नहीं है।''

सा.बाबा 19.10.11 रिवा.

"आत्मा तो बिन्दी है, आत्मा को कब देखा नहीं जा सकता क्योंकि अव्यक्त चीज़ है ना। ... आत्मा को जाना जाता है। अभी तुमको आत्मा को जानना है कि कैसे उसमें सारा पार्ट भरा हुआ है। ... यह रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ भी है। सब धर्म इसमें स्वाह हो जायेंगे, एक देवी-देवता

धर्म की अभी स्थापना हो रही है।''

सा.बाबा 20.10.11 रिवा.

"आधा कल्प है भक्ति मार्ग, फिर आधा कल्प है ज्ञान मार्ग। ज्ञान आधा कल्प नहीं चलता है, ज्ञान की प्रॉलब्ध तुमने आधा कल्प पाई है।... यह सुख और दुख का खेल बना हुआ है। नई दुनिया में है सुख, पुरानी दुनिया में है दुख।... इस सृष्टि-चक्र में आधा कल्प है रामराज्य अर्थात् स्वर्ग और आधा कल्प है रावण राज्य अर्थात् नर्क।''

सा.बाबा 21.10.11 रिवा.

"यह ईश्वरीय नॉलेज तुम बच्चों के पास ही है, और कोई इसको जान न सके। जैसे ईश्वर ज्ञान का सागर है, स्वर्ग का वर्सा देने वाला है। वे बच्चों को भी आप समान जरूर बनायेंगे।... दुनिया में कितना भी बड़ा आदमी हो परन्तु वे बाप को और सृष्टि-चक्र को नहीं जानते हैं। यह ज्ञान बाप ही आकर तुम बच्चों को देते हैं और तुमको अमरलोक का मालिक बनाते हैं।''

सा.बाबा 21.10.11 रिवा.

"सारी दुनिया में एक भी ऐसा मनुष्य नहीं होगा, जो अपने को आत्मा समझते हों। आत्मा क्या है, जब यही नहीं जानते हैं तो परमात्मा को कैसे जानेंगे। बाप द्वारा ही तुमको आत्मा की समझानी मिलती है कि आत्मा क्या चीज़ है। ... अभी तुम जानते हो कि इस ड्रामा अथवा सृष्टि रूपी कल्प-वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है। ... परमात्मा इसका चेतन्य बीजरूप है।''

सा.बाबा 22.10.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप, सत्, चित् आनन्द स्वरूप हूँ। मुझे ज्ञान का सागर कहा जाता है। ... भल यह लक्ष्मी-नारायण आदि देवतायें हैं, परन्तु उन्होंको भी यह नॉलेज नहीं है। यह ड्रामा का ज्ञान तुमको ही मिला है। तुम जानते हो कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। फिर जब देवता बनेंगे तो यह ज्ञान रहेगा नहीं। यह भी वण्डर है ना।''

सा.बाबा 22.10.11 रिवा.

"तुम इस ड्रामा के एक्टर्स हो, तुमको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान अभी है। बाकी न शूद्र वर्ण को और न देवता वर्ण को यह ज्ञान है।... सतयुग में तो यह कुछ याद भी नहीं रहेगा। वहाँ तो राज्य करते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला हुआ है। तुम इस ड्रामा के मुख्य एक्टर, क्रियेटर, डॉयरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर को जानते हो।''

सा.बाबा 22.10.11 रिवा.

"अभी तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है, जो इस नॉलेज को नहीं जानते हैं, वे हैं बेसमझ। ... यह नॉलेज जिसकी बुद्धि में टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी रहेगी। तुम्हारे

सिवाए इस नॉलेज को कोई समझ नहीं सकते। गॉड फादर को ही वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी, नॉलेजफुल कहा जाता है। ... उनको सभी वेदों-शास्त्रों, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है।''

सा.बाबा 22.10.11 रिवा.

"अभी मैं तुमको फिर से मनुष्य से देवता, बैकुण्ठ का मालिक बनाने आया हूँ। तुमको कल्प पहले भी यह वर्सा दिया था फिर तुमने 84 जन्म लेते सीढ़ी उतरते-उतरते वह वर्सा गँवा दिया। ... मैं आकर तुमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता हूँ।''

सा.बाबा 24.10.11 रिवा.

"अभी तुमको समझ आई है कि हमारा बाप कौन है, यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। सबकी समझ एक समान तो हो न सके। एक की समझ न मिले दूसरे से, एक के फीचर्स न मिलें दूसरे से। यह वैराइटी ड्रामा है। तुम बच्चों को बाप का बनकर, उनकी मत पर अच्छी रीति चलना चाहिए।''

सा.बाबा 24.10.11 रिवा.

"तुम यह सत्यनारायण की कथा सुनते और सुनाते रहो। यह कितनी लम्बी कथा है। गायन है- सारा सागर स्वाही बनाओ, पृथ्वी को कागज बनाओ, तो भी इसकी इण्ड नहीं हो सकती है। ... शिवबाबा सर्व आत्माओं का बाप है, प्रजापिता ब्रह्मा भी सबका बाप हो गया। वर्सा शिवबाबा से मिलता है।''

सा.बाबा 25.10.11 रिवा.

"तुमको सबकी ज्योति जगानी है। उनकी है भक्ति मार्ग की दीपमाला, तुम्हारी है ज्ञान की दीपमाला।... भक्ति मार्ग में जो करते हैं, वह तुम ज्ञान मार्ग में नहीं कर सकते हो। तुमको कोई कपड़े आदि नहीं बदलने हैं।... भक्ति मार्ग की रस्म-रिवाज़ अलग हैं, ज्ञान मार्ग के रस्म-रिवाज़ बिल्कुल अलग हैं। गाया भी जाता है ज्ञान दिन, भक्ति है रात। भक्ति मार्ग में भगवान को ढूँढते रहते हैं, तुमको तो भगवान पढ़ा रहे हैं।''

सा.बाबा 26.10.11 रिवा.

"अभी तुमने आत्मा को रियलाइज़ किया है कि आत्मा अविनाशी है, उसमें कैसे 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह है अति गुह्य बात। ... आत्मा के बारे में मनष्यों की बुद्धि में अनेक प्रकार की बातें हैं। तुम जानते हो - आत्मा बिन्दी समान है, उसमें पार्ट बजाने की सारी नूँध है। यह ड्रामा अनादि-अविनाशी बना-बनाया है।''

सा.बाबा 26.10.11 रिवा.

"यह बक्खर डिलीवरी करने के लिए एवर-रेडी रहना चाहिए। बक्खर हमेशा रेडी होना चाहिए, जो कोई भी आये तो उसको समझा सको। ... कुछ न कुछ पत्थर डालना चाहिए, जो मनुष्यों का विचार सागर मन्थन हो। फिर जो इस कुल का होगा, उसको झट लहर आयेगी।

अपने कुल का नहीं होगा तो वह कुछ भी समझेगा नहीं। ऐसे ही सुनकर चले जायेंगे। यह नब्ज भी देखनी होती है।''

सा.बाबा 27.10.11 रिवा.

"तुम बच्चों को सारे विश्व की राजाई कल्प पहले मिसल मिल रही है। बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। इस समय ही बाप आकर यह ज्ञान देते हैं। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के पास भी यह ज्ञान नहीं होगा। यह भी अभी कहेंगे कि उन्होंने अगले जन्म में ज्ञान लेकर पुरुषार्थ किया, तब ये बनें हैं। तुमने ही बाबा से ज्ञान लेकर अपने को विश्व का मालिक बनाया था।''

सा.बाबा 28.10.11 रिवा.

"यह है सतयुगी राजधानी प्राप्त करने के लिए पढ़ाई। ज्ञान सागर बाप आकर ज्ञान देते हैं पतित से पावन बनने का। परमात्मा के पास सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। उसमें सब प्रकार की नॉलेज आ जाती है। यह गॉडली नॉलेज है सब प्रकार की नॉलेज का मूल।''

सा.बाबा 29.10.11 रिवा.

"थोड़ी आफतें आने दो, फिर देखना कितने भागते हैं। विनाश तो होना ही है। आगे चलकर बहुत प्रभाव निकलेगा, उस समय बहुत भीड़ होगी। ... प्रजा बनने वाला होगा तो भी उसकी बुद्धि में कुछ न कुछ ज्ञान बैठेगा। हम सो, सो अहम् का अर्थ भी बाप ने समझाया है। हम आत्मा सो परमात्मा नहीं, हम सो ब्राह्मण, सो देवता बनते हैं।... वर्णों का चक्र तुम भारत वासियों का ही है।''

सा.बाबा 2.11.11 रिवा.

"एक बाप ही सर्वात्माओं का सद्गतिदाता है, वही ज्ञान का सागर, पतित-पावन है। ... यह खेल है। आधा कल्प है बेहद की रात, फिर आधा कल्प है बेहद का दिन। बाप आकर बेहद की रात से बेहद का दिन बनाते हैं, सबको रावण राज्य से छुड़ाते हैं।... सतयुग में तुमको सुख-शान्ति सब था, बाकी सब आत्मायें शान्तिधाम में थी।''

सा.बाबा 3.11.11 रिवा.

"भगवान को जानी-जाननहार कहते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वह सबके दिलों में क्या है, वह बैठ देखता है। नहीं, उनको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है, वह कल्प-वृक्ष का बीजरूप है। बीजरूप होने के कारण झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं, जो आकर तुम बच्चों को देते हैं। ऐसे बाप को बहुत-बहुत प्यार से याद करना है। इनकी आत्मा भी उनको याद करती है।''

सा.बाबा 4.11.11 रिवा.

"आत्मा क्या है, यह भी किसको पता नहीं है। आत्मा बिल्कुल सूक्ष्म बिन्दु है, जिसको इन ऑखों से देख नहीं सकते।... अभी बाप ने तुमको आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया, तो अब तुमको भारत को स्वर्ग बनाने में बाप का मददगार भी बनना है। बाप भारत में

ही आते हैं, शिव जयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं।''

सा.बाबा 5.11.11 रिवा.

"तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो, तो तुम्हारी चलन बहुत मीठी रॉयल होनी चाहिए। तुमको कोई से डिबेट या शास्त्रवाद नहीं करना है। वे लोग शास्त्रवाद करने बैठते हैं तो एक-दो को लाठी भी मार देते हैं। उन बेचारों का कोई भी दोष नहीं है। वे तो इस नॉलेज को जानते ही नहीं है। यह है रुहानी नॉलेज, जो मिलती है रुहानी बाप से।''

सा.बाबा 5.11.11 रिवा.

"सिद्धि-स्वरूप कैसे बनें, जिससे संकल्प करते ही सिद्धि प्राप्त हो। यह है 100 प्रतिशत सिद्धि-स्वरूप की निशानी कि संकल्प किया और सिद्धि प्राप्त हुई। जब साधारण नॉलेज के आधार पर रिद्धि-सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं तो क्या श्रेष्ठ नॉलेज के आधार पर विधि से सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते?... विधि को चेक करने से सिद्धि ऑटोमेटिकली प्राप्त हो जायेगी।''

अ.बापदादा 2.08.73

"सर्व सब्जेक्ट्स में हम कहाँ तक पास है, इसकी परख क्या है? जो जितने सब्जेक्ट्स में पास होगा, उसको उतना ही उन सब्जेक्ट्स के आधार पर ऑब्जेक्ट (लक्ष्य) और रेस्पेक्ट मिलेगी। साथ-साथ प्राप्ति का भी अनुभव होगा। ... ज्ञान की सब्जेक्ट में पास होने से ऑब्जेक्ट लाइट और माइट का अनुभव करेंगे। उस नॉलेज की सब्जेक्ट के आधार पर रेस्पेक्ट भी इतनी मिलेगी ही।''

अ.बापदादा 2.08.73

"नालेजफुल है तो जिसको नॉलेज देते हैं, वे इस नॉलेज को इतना ही रेस्पेक्ट देते हैं। नॉलेज को रेस्पेक्ट देना अर्थात् नॉलेजफुल को रेस्पेक्ट देना। ... हर सब्जेक्ट व संकल्प में आब्जेक्ट और रेस्पेक्ट इन दोनों की प्राप्ति का अनुभव जो करते हैं, उनको ही परफेक्ट कहेंगे। परफेक्ट अर्थात् इफेक्ट से परे।''

अ.बापदादा 2.08.73

"पूरे 84 जन्म सूर्यवंशी ही लेते हैं, जो पहले-पहले आते हैं। सारी सूर्यवंशी सम्प्रदाय पुनर्जन्म लेते-लेते अभी तमोप्रधान बनें हैं। वे ही अब फिर से बाप से राज्य-भाग्य ले रहे हैं। जो बच्चे इस ज्ञान को समझते हैं, उनको ही मज़ा आता है। और किसको मज़ा नहीं आयेगा। इसमें तुम किसकी निन्दा नहीं करते हो। ... अभी तुम समझते हो हम विश्व के मालिक थे, सारी जमीन-आसमान हमारा था।''

सा.बाबा 7.11.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में रचता और रचना की सारी नॉलेज है, जो फिर औरों को भी सुनाना है, आप समान बनाने की भी तुम्हारी जबाबदारी है।... वे ब्राह्मण अपने को ब्रह्मा कुमार-कुमारी नहीं कहला सकते हैं। तुम अपने को ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहलाते हो।... ब्रह्मा के बच्चे

ब्राह्मण सब भाई-बहन ठहरे, फिर विकार में कैसे जा सकते हैं। अगर कोई जाते हैं तो कुल को कलंकित करते हैं।''

सा.बाबा 9.11.11 रिवा.

"कलियुग के बाद आता है संगमयुग, जो ऊंच ते ऊंच है, फिर तो नीचे उतरना होता है। ... बातें बिल्कुल सहज हैं, परन्तु मनुष्य ड्रामा अनुसार समझते नहीं हैं, इसलिए बाप आते हैं समझाने के लिए। बुलाते भी हैं बाबा आओ, आप में जो नॉलेज है, वह हमको दो, पतितों को पावन बनाओ।''

सा.बाबा 10.11.11 रिवा.

"यह पाठशाला भी है। पाठशाला में सिर्फ किताबें थोड़ेही होती हैं, पाठशाला है तो मैप्स भी होने चाहिए। तुम्हारे ये चित्र हैं मैप्स। मैप्स से मनुष्य झट समझ जायेंगे।... यह यज्ञ भी है। इसको राजसूर्य अश्वमेघ अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ कहा जाता है।''

सा.बाबा 10.11.11 रिवा.

"शिवबाबा नॉलेजफुल है, अभी वह नॉलेज तुमको मिल रही है। बीज को ही झाड़ की सारी नॉलेज होगी। बाप इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप है, वह सत है, चेतन्य है और फिर ज्ञान का सागर है। वह भी आत्मा है परन्तु वह परम-आत्मा है। वह ऊंचे ते ऊंचा है, वह सदैव परमधाम में रहते हैं।''

सा.बाबा 11.11.11 रिवा.

"मुझे बुलाते ही हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर हमको नॉलेज दो, पावन बनाओ। तो मैं आकर यह कार्य करता हूँ। ... यह है ज्ञान मानसरोवर, जिसमें डुबकी लगाने से तुम ज्ञान परी बन जाते हो। उन्होंने फिर उस पानी के सरोवर को मानसरोवर समझ लिया है। यह है ज्ञान स्नान की बात। ... सारी दुनिया कहती है कृष्ण भगवानुवाच, यहाँ बाप कहते हैं शिव भगवानुवाच। दोनों में रात-दिन का फर्क है।''

सा.बाबा 11.11.11 रिवा.

"यह नॉलेज सुनकर और राजयोग सीखकर तुम सूर्यवंशी बनेंगे। फिर चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बनेंगे। यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में अभी ही है। सतयुग में यह ज्ञान भूल जायेगा। ... बाप कहते हैं - रावण ने तुम्हारी बुद्धि कितनी खराब कर दी है। कोई भी रचता बाप को और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं।''

सा.बाबा 11.11.11 रिवा.

"अभी तुमको कितनी रोशनी मिलती है। बाप ने तुमको सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई है। ... द्वापर में जो ऋषि-मुनि सतोप्रधान थे, जिनकी बुद्धि को ताला नहीं लगा हुआ था, वे कहते थे - हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। आज जब कलियुग में सबकी बुद्धि को ताला लगा हुआ है, वे फिर रचता और रचना को कैसे जान सकते हैं। शास्त्र तो वे ऋषि-

मुनि भी पढ़ते थे।''

सा.बाबा 14.11.11 रिवा.

"जिसमें जितना जास्ती ज्ञान रहता है, उसको उतना जास्ती नशा रहता है। अभी तुम मास्टर नॉलेजफुल बन गये हो। फिर जब विनाश होगा, तो यह शरीर खलास हो जायेगा, फिर यह ज्ञान भूल जायेगा। यह ज्ञान इस एक जन्म तक ही रहता है।... बाप कहते हैं - मैं कोई कमाई नहीं करता हूँ। मैं तो तुमको सिखलाकर, पावन बनाकर अपने घर ले जाता हूँ।''

सा.बाबा 14.11.11 रिवा.

"बाबा के ज्ञान से सबकी सद्गति होती है, बाप ही सर्व का सद्गति दाता है। बाकी जो खुद ही दुर्गति में हैं, वे कैसे औरों की सद्गति करेंगे। ... बाप तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। पवित्र राजाओं की अपवित्र राजायें पूजा करते हैं। सतयुग में तुम डबल सिरताज थे। ... अभी बाप कहते हैं - इस मृत्युलोक में तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है।''

सा.बाबा 16.11.11 रिवा.

"यह राजयोग है, प्रजायोग नहीं है। सदा शुभ बोलना चाहिए। इस पढ़ाई की एम एण्ड आब्जेक्ट है ही विश्व की बादशाही पाना। ... स्कूल में स्टूडेण्ट अच्छा पास होते हैं तो टीचर का भी नाम बाला होता है। ... मनुष्य इसके महत्व को जानते नहीं है। बाबा है नॉलेजफुल। वह आते ही हैं रचता के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देने।''

सा.बाबा 18.11.11 रिवा.

"अभी कल्प का संगम है। महाभारी महाभारत लड़ाई भी होनी है, नेचुरल केलेमिटीज़ भी होनी है। थर्ड वर्ल्ड वार दि लास्ट वार कहते हैं। ... भल कोई अपने धर्म में रहे तो भी बाबा को याद करने से अपने धर्म में अच्छा पद पा सकते हैं। सबको यह बताना है - बेहद का बाप हमको प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा यह नॉलेज दे रहे हैं।''

सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

"सारा ज्ञान इस त्रिमूर्ति, झाड़, गोले में है। सीढ़ी का भी इस गोले में आ जाता है। सीढ़ी डिटेल में बनाई कि हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। चक्र में सब धर्म वालों का आ जाता है। ... बाबा का सारा दिन ख्याल चलता रहता है कि कैसे सबको बाप का सन्देश मिले। बच्चों को कितनी विशाल बुद्धि से युक्ति रचनी चाहिए, सर्विस का शौक रखना चाहिए।''

सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

"यह है रुहानी नॉलेज, जो रुहानी बाप ही देते हैं। तो वह सर्वव्यापी कैसे होगा। बाप को सर्वव्यापी मानना बड़ी भूल है। ... सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे, तो उस समय बाकी सब आत्मायें शान्तिधाम में होंगी। तो जरूर उसके लिए लड़ाई लगेगी, तब विनाश होगा, आत्मायें

मुक्तिधाम में जायेंगी। ये सब बातें बच्चों की बुद्धि में रहनी चाहिए, जो औरों को भी समझा सको।''
सा.बाबा 21.11.11 रिवा.

"ज्ञान-विज्ञान कहा जाता है। ज्ञान अर्थात् सृष्टि-चक्र का ज्ञान और विज्ञान माना योग।... एक गीता ही है, जिसमें लिखा है मामेकम् याद करो। गीता ही गॉड फादर का शास्त्र है। परन्तु उसमें भूल कर दी है कि बाप के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है।... कल्प-कल्प शिवबाबा आकर वर्सा देते हैं, फिर तुम 84 जन्मों में गँवा देते हो। सबको पतित से पावन और पावन से पतित बनना ही है।''
सा.बाबा 21.11.11 रिवा.

अमृत-धारा

"जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुअ, वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा. वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं और इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता है और मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, यश-अपयश, सुख-दुख, अपने-पराये में समान स्थिति होगी। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जागृत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है। यह विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

"ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।'' अ.बापदादा 15.4.92

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org